www.indiatodayhindi.in

RNI NO 45823/86 REGISTERED NO. DL(ND)-11/6042/2021-22-2023; LICENSED TO POST WPP NO U(C)-31/2021-23; FARIDABAD/46/2020-22

OO

अग्रिम सप्ताह के लिए प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित; एलपीसी दिल्ली-आरएमपीएस-दिल्ली-110006 से प्रत्येक शनिवार और सोमवार को प्रेषित; कुल पन्नों की संख्या 70 (आवरण सहित)

## सुर्खियों के सरताज 2021

9 770971 372703

# इंडिया टुडे

12 जनवरी, 2022 50 रुपए

**कृष्ण एल्ला और अदार पूनावाला**

# वैक्सीन चैंपियन

**कोविड वैक्सीन के दो निर्माताओं ने अपनी असाधारण सूझबूझ, इनोवेशन और उत्साह की बदौलत भारत में जीवन और जीविका, दोनों बचाने में मदद की**

VISIT…

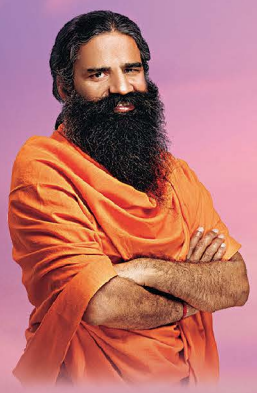

PATANJALI®

# Nutrela™

## NUTRITION

BIO-FERMENTED
मल्टीविटामिन

शाकाहारी
ऑर्गेनिक ओमेगा

B-COMPLEX
प्राकृतिक विकल्प

# जीतें हर दिन
## पाएं संतुलित स्वास्थ्य, ऊर्जावान व क्रियाशील जीवन प्रतिदिन

**100% शाकाहारी, ऑर्गेनिक* ओमेगा,**
**Bio-fermented* विटामिन एवं प्राकृतिक* मिनरल**
**के साथ प्रतिदिन संतुलित पोषण पाएं**

---

Online : **www.nutrelanutrition.com**, Orderme app, Amazon
Retail Store: आपके नज़दीकी सभी पतंजलि स्टोर्स, प्रमुख मेडिकल स्टोर्स व प्रमुख स्टोर्स पर उपलब्ध।
**www.nutrelanutrition.com, wecare@nutrelanutrition.com. Phone-1860 1800 180**
***Ingredients**

Ruchi
Ruchi Soya Industries Limited

# प्रधान संपादक की कलम से



भारी शोर-गुल वाले उस लोकतंत्र में कभी खबरों या शख्सियतों की कमी नहीं होती है जो जल्दी ही दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी का देश बनने वाला है. नेताओं, खिलाड़ियों, फिल्मी सितारों, कारोबारियों और उथल-पुथल भरी घटनाओं से यही जान पड़ता है, मानो 'दिलचस्प वक्त में जियो' जैसा जुमला भारत के लिए ही बना है. लिहाजा, *इंडिया टुडे* में हमारे लिए साल के सुर्खियों के सरताज को चुनना बेहद कठिन हो जाता है, यानी वह शख्स या घटनाक्रम, जिसने समूचे साल की अहम घटनाओं को आकार दिया हो. पिछले दो साल इस देश में दिलचस्प ही नहीं, अप्रत्याशित भी रहे हैं. 2020 का हमारा सुर्खियों का सरताज कोरोनावायरस था, आंखों से न दिखने वाला, अदना-सा विषाणु, जिसने दुनिया को अचानक ठप कर दिया, और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे बड़ी तबाही और उथल-पुथल का कारण बना.

इस साल कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर ने भारी तबाही मचाई, देश में 2,00,000 से ज्यादा लोग मारे गए, इससे वाशिंगटन स्थित सेंटर फॉर ग्लोबल डेवलपमेंट ने उसे 'बंटवारे के बाद सबसे बुरी त्रासदी' कहा. बेशक, दूसरी अहम घटनाएं और सुर्खियों में छाने वाले भी हुए. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश को यह यकीन दिलाने के लिए सुधारक की भूमिका में पेश आए कि आत्मनिर्भरता और निजीकरण अनिवार्य तौर पर विलोम नहीं होते. एक किसान नेता के आंसू आंदोलन की मजबूती की वजह बन गए, जो केंद्र सरकार के तीन विवादास्पद कानूनों को वापस लेने के साथ ही खत्म हुआ. एक अजीबो-गरीब घटना में धूर्त पुलिस अधिकारियों ने विस्फोटकों भरी एसयूवी देश के सबसे धनी कारोबारी के घर के पास खड़ी करने की साजिश रची. उसके बाद के घटनाक्रम में मुंबई के पुलिस आयुक्त अपने ही साथियों से छिपते फिरे. एक सुपरस्टार का बेटा ड्रग्स के मामले में पकड़ा गया. एक मुख्यमंत्री ने अपने गृह राज्य में भाजपा के अजेय लगने वाले रथ को रोक दिया. दो नए मुख्यमंत्री असम और तमिलनाडु में सुर्खियों में उभरे. एक प्रतिभावान एथलीट भारत के लिए व्यक्तिगत स्पर्धाओं में पहला ओलंपिक स्वर्ण पदक जुटा लाया. कारोबार जगत में यूनिकॉर्न युवा भारतीय उद्यमियों का जुनून का जरिया बने. सितारों की एक नई पीढ़ी को ओवर द टॉप (ओटीटी) सिरीज ने घर-घर पहुंचा दिया. कोविड महामारी में अपने मां-बाप को गंवा चुका एक भारतीय यूट्यूबर को 2 करोड़ सब्सक्राइबर मिल गए.

11 जनवरी, 2021 का आवरण

इन सबके बावजूद कोविड-19 के खिलाफ हमारी बड़ी लड़ाई अभी जारी है. पिछले दो साल में दुनिया भर में एक-चौथाई अरब से ज्यादा लोग संक्रमण के शिकार हुए और 53 लाख से ज्यादा लोग मारे गए. महामारी खत्म होने का नाम नहीं ले रही है. वायरस के नए वैरिएंट दुनिया में मौत और डर पैदा कर रहे हैं. इस स्वास्थ्य संकट में बस एक ही और बेहद महत्वपूर्ण उम्मीद की किरण यह है कि भारत दुनिया में वैक्सीन का सबसे बड़ा उत्पादक है. इस साल के शुरू में ये कोरोनावायरस की जंग में उपलब्ध कराई गईं. इसका मतलब है कि अरबों टीकों की खातिर दुनिया के आगे हमें कटोरा लेकर नहीं जाना पड़ा, हम अब आत्मनिर्भर हैं.

अदार पूनावाला की पुणे स्थित सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया ने साल में 1.5 अरब वैक्सीन का उत्पादन किया, और भारत में अब तक लगे 1.4 अरब टीकों में 88 फीसद कोविशील्ड है, जिसे सीरम इंस्टीट्यूट ने ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनेका के फॉर्मुले से बनाया. इस बीच भारत बायोटेक के कृष्ण एल्ला एक स्वदेशी वैक्सीन कोवैक्सिन बनाने में उतनी ही जल्दी कामयाब हो गए, जितनी दुनिया की बड़ी फार्मा कंपनियां. इन दो वैक्सीन ने भारत में महामारी के तीखेपन को भोथरा कर दिया. उनके बिना हमारे अस्पतालों में कुछ और लाख लोगों की भीड़ रहती और मृत्यु का आंकड़ा भी और अधिक होता. वैक्सीन के सुरक्षा कवच और महज 10 महीने में देश भर में एक अरब से ज्यादा टीके लगाने की सरकार की सराहनीय कोशिश के बूते एक बड़ी आपदा टल गई. कम लोग बीमार पड़ रहे हैं, इससे अर्थव्यवस्था की बहाली के लिए वक्त मिल गया है. इसलिए इस साल वैक्सीन ने अराजकता और आपदा के बीच फर्क पैदा किया.

इसी वजह से हमने एल्ला और पूनावाला को इस साल का सुर्खियों का सरताज चुना. उन्होंने अपने करियर और साख को दांव पर लगाने का साहस और नवाचार दिखाया. उन्हें एहसास था कि जिंदगियां दांव पर लगी हैं, अगर कुछ गलत हुआ या वैक्सीन कारगर नहीं हुई तो उनके और देश के लिए आपदा के समान है. एल्ला के मुताबिक, वे यह दिखाना चाहते थे कि भारत अत्याधुनिक वैक्सीन अनुसंधान में बाकी दुनिया से पीछे नहीं है. पूनावाला के लिए एस्ट्राजेनेका से करार करना और अपने वैक्सीन उत्पादन को एकदम शिखर पर ले जाना भारी जोखिम भरा था, जो अखिरकार कामयाब रहा.

इस साल हमने अपने फॉर्मेट में सुधार किया है. हमने तय किया कि बड़े सुर्खियों के सरताज के अलावा इस साल ऐसे ढेरों सुर्खियां बनाने वाले रहे, जिन पर नजर जानी चाहिए. इसलिए हमने नौ कैटेगरी बनाई—राजनीति, सार्वजनिक जीवन, कारोबार, ऐक्टिविज्म, विवाद, पेशेवर, खेल, मनोरंजन और कला में हरेक में एक सुर्खियों का सरताज चुना गया. उनमें वही शख्सियतें हैं, जिन्होंने अपने संबंधित दायरे में सुर्खियां बनाईं. उम्मीद है कि आने वाले वर्ष में कोरोनावायरस दूर की याद भर बनकर रह जाएगा और हम जोरदार आर्थिक बहाली की ओर आगे बढ़ जाएंगे. ■

अरुण पुरी

*(अरुण पुरी)*

# इंडिया टुडे

www.indiatodayhindi.in

**चेयरमैन और प्रधान संपादक:** अरुण पुरी
**वाइस चेयरपर्सन:** कली पुरी
**ग्रुप चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर:** दिनेश भाटिया
**ग्रुप एडिटोरियल डायरेक्टर:** राज चेंगप्पा
**चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर:** मनोज शर्मा
**एडिटर:** सौरभ द्विवेदी
**सीनियर डिप्टी एडिटर:** दयाशंकर शुक्ल सागर
**सीनियर एडिटर:** मोहम्मद वक़ास
**एसोसिएट एडिटर:** शिवकेश मिश्र, आशीष मिश्र (लखनऊ)
**असिस्टेंट एडिटर:** मनीष दीक्षित, सुजीत ठाकुर
**राज्य ब्यूरो:** पुष्यमित्र (पटना), रोहित परिहार (जयपुर), एम.जी. अरुण (मुंबई), राहुल नरोन्हा (भोपाल), अमरनाथ के. मेनन (हैदराबाद)
**ग्रुप क्रिएटिव एडिटर:** नीलांजन दास
**एसोसिएट आर्ट डायरेक्टर:** चंद्रमोहन ज्योति
**असिस्टेंट आर्ट डायरेक्टर:** असित रॉय
**ग्रुप फोटो एडिटर:** बंदीप सिंह
**फोटो डिपार्टमेंट:** यासिर इकबाल, राजवंत रावत, चंद्रदीप कुमार, मंदार सुरेश देवधर (मुंबई)
**चीफ फोटो रिसर्चर:** प्रभाकर तिवारी
**प्रिंसिपल फोटो रिसर्चर:** सलोनी वैद
**प्रोडक्शन चीफ:** अभिनव पुगला
**एसोसिएट पब्लिशर:** विद्या मेनन (इंपैक्ट)

**इंपैक्ट टीम**
**नेशनल हेड:** सुपर्णा कुमार (गवर्नमेंट ऐंड पीएसयू)
**सीनियर जनरल मैनेजर:** जीतेंद्र लाड (वेस्ट)
**जनरल मैनेजर:** मयूर रस्तोगी (नॉर्थ), उपेंद्र सिंह (बेंगलूरू)
**डिप्टी जनरल मैनेजर:** इंद्रनील चटर्जी (ईस्ट)
**ग्रुप चीफ मार्केटिंग ऑफिसर:** विवेक मल्होत्रा

**सेल्स एवं ऑपरेशन**
**सीनियर जनरल मैनेजर:** दीपक भट्ट (नेशनल सेल्स)
**जनरल मैनेजर:** विपिन बग्गा (ऑपरेशंस)
**डिप्टी जनरल मैनेजर:** राजीव गांधी (नॉर्थ)
**डिप्टी रीजनल सेल्स मैनेजर:** योगेश गोधनलाल गौतम (वेस्ट)
**डिप्टी रीजनल सेल्स मैनेजर:** एस. परमशिवम (साउथ)
**सीनियर सेल्स मैनेजर:** पीयूष रंजन दास (ईस्ट)

INDIA TODAY GROUP

वर्ष: 36; अंक: 6; 6-12 जनवरी, 2022; प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित,

- **संपादकीय कॉर्पोरेट कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, इंडिया टुडे ग्रुप मीडियाप्लेक्स, एफसी-8, सेक्टर 16-ए, फिल्म सिटी, नोएडा-201301, फोन: 0120-4807100;
- **ग्राहकी चंदा भेजें:** इंडिया टुडे (हिंदी), पो. बॉक्स 114, नई दिल्ली-110001
- **ग्राहक सेवा:** कस्टमर केयर, इंडिया टुडे ग्रुप, सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301, टोल फ्री फोन नं. 1800 1800 100 (बीएसएनएल/एमटीएनएल लाइनों से) फोन: दिल्ली, फरीदाबाद से (95120) 2479900; शेष भारत से (0120) 2479900. (सोम से शुक्र-सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक), फैक्स: (0120) 4078080. ई-मेल: wecare@intoday.com
- **सर्कुलेशन कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301
- **इंपैक्ट कार्यालय:** 1201, 12वां तल, टावर 2ए, वन इंडियाबुल्स सेंटर, (जुपिटर मिल्स) एस.बी. मार्ग, लोअर परेल (पश्चिम)-मुंबई-400013. फोन: 022-66063355 फैक्स: 022-66063226
- **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** ए1-ए2, एनके सेंटर, विनुज्य निकुंज, उद्योग विहार, फेज-5, गुड़गांव, हरियाणा, फोन: 0124-4948400;
- 201-204 रिचमंड टावर्स, द्वितीय मंजिल, 12 रिचमंड रोड, बंगलुरु-560 025 फोन: 2212448, 226233, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. फैक्स: 080-2218335.
- रजिस्टर्ड कार्यालय: एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
- सभी विवादों का निबटारा दिल्ली/नई दिल्ली की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा.
- **लिविंग मीडिया इंडिया लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मनोज शर्मा द्वारा एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और थॉमसन प्रेस इंडिया लि., 18-35, माइलस्टोन, दिल्ली-मथुरा रोड, फरीदाबाद-121 007 (हरियाणा) में मुद्रित. संपादक: राज चेंगप्पा**


# भीतर

फोटो: बंदीप सिंह

सुर्खियों के सरताज 2021

## 18 वैक्सीन के सूरमा

कोविड वैक्सीन के निर्माता, भारत बायोटेक के कृष्ण एल्ला और सीरम इंस्टीट्यूट के अदार पूनावाला ने भारत को स्वास्थ्य के क्षेत्र में भयंकर तबाही से बचाया और इसी के साथ जान और जीविका की भी रक्षा की


28 साल का सर्वश्रेष्ठ सुधारकर्ता **नरेंद्र मोदी**

32 साल का सर्वश्रेष्ठ राजनेता **ममता बनर्जी**

36 साल के सर्वश्रेष्ठ व्यवसायी **नए यूनिकॉर्न**

42 साल का सर्वश्रेष्ठ एक्टिविस्ट **राकेश टिकैत**

44 साल का सबसे बड़ा विवाद **आर्यन खान प्रकरण**

46 साल का सर्वश्रेष्ठ प्रोफेशनल **बिमल पटेल**

49 साल का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी **नीरज चोपड़ा**

52 साल के सर्वश्रेष्ठ एंटरटेनर **अक्षय कुमार और सान्या मल्होत्रा**

55 साल के सर्वश्रेष्ठ कलाकार **भुवन बाम और तनिष्क बागची**

58 तस्वीरों में साल 2021

6 कोविड 19 **सावधान! ओमिक्रॉन**

कोविड के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन के चलते तीसरी लहर की आहट के मद्देनजर केंद्र ने जारी किया बूस्टर शॉट प्रोग्राम, राज्यों ने लगाईं नई पाबंदियां

पीयूष जैन

10 **महक का काला कारोबार**

कानपुर में रासायनिक इत्र कंपाउंड कारोबारी के घर छापे में मिली करोड़ों की नकदी ने चुनावों में उतरने जा रहे उत्तर प्रदेश में सियासी गर्मी बढ़ा दी है



**इंडिया टुडे**

**इंडिया टुडे मैगजीन मिलने में दिक्कत हो रही है?**
**7303086006 पर नाम पता या 'हेलो' संदेश भेजें.**
**या मेल करें: wecare@intoday.com**
**हम आपसे संपर्क कर लेंगे.**


आवरण: बंदीप सिंह

**पाठकों के लिए सूचना:** कभी-कभी आपको इंडिया टुडे पत्रिका में 'इम्पैक्ट फीचर' या 'एडवरटोरियल' या 'फोकस' के पन्ने नजर आएंगे. ये विज्ञापन होंगे और इन्हें बनाने में पत्रिका के संपादकीय स्टाफ शामिल नहीं होते.


INDIA TODAY GROUP

पाठकों को सलाह दी जाती है कि पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सेवा या व्यक्ति के विज्ञापन और प्रचार से संबंधित सामग्री से वचनबद्धता कायम करने, पैसा भेजने या खर्च करने से पहले उचित जांच-पड़ताल कर लें. विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व इंडिया टुडे ग्रुप का नहीं है. ऐसे किसी भी तरह के दावों को विज्ञापनदाता अगर नहीं पूरा करता है तो इंडिया टुडे ग्रुप के प्रकाशनों के मुद्रक, प्रकाशक, एडिटर-इन-चीफ और एडिटर इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे.

THE LALLANTOP

# जमघट

Social Media Partner

Koo

## सत्ता के दावेदारों से सवाल

## 09 जनवरी 2022

**सुबह 10:00 से रात 8:00 बजे तक**

Live On Website : www.thelallantop.com

# ओमिक्रॉन से सावधान

ओमिक्रॉन के बढ़ते मामलों की वजह से कोविड की तीसरी लहर का अंदेशा पैदा होने के साथ ही केंद्र ने बूस्टर शॉट कार्यक्रम का खुलासा किया और राज्यों ने आनन फानन प्रतिबंध लगाए

सोनाली आचार्जी

पीटीआइ

**पश्चाताप से बेहतर सुरक्षा**
29 दिसंबर को मुंबई के एक रेलवे स्टेशन में कोविड टेस्टिंग

करीब पांच महीने तक किसी भी वक्त आराम से कहीं भी घूमने फिरने की आजादी के बाद दिल्ली के लोगों को अब रात में नया कर्फ्यू झेलना होगा. राष्ट्रीय राजधानी ने 27 दिसंबर को कोविड के 331 नए मामले दर्ज किए, जो 9 जून के बाद एक दिन में दर्ज सबसे ज्यादा मामले थे. यह आंकड़ा 1 दिसंबर को रिपोर्ट किए गए नए मामलों से करीब 10 गुना ज्यादा था. आंकड़ों में तेजी से उछाल के मद्देनजर दिल्ली सरकार ने पड़ोसी राज्यों—हरियाणा और उत्तर प्रदेश की तरह रात का कर्फ्यू लगा दिया. हालांकि दिल्ली की टेस्ट पॉजिटिविटी दर महज 0.68 फीसद है, जो डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) के 5 फीसद या उससे कम के सुझाव से काफी नीचे है लेकिन अधिकारी गण सावधानी के मामले में चूक रहे हैं क्योंकि 28 दिसंबर को राज्य के कम से कम 165 मामलों में कोविड का बेहद संक्रामक वैरिएंट ओमिक्रॉन पाया गया.

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएचएफडब्ल्यू) के मुताबिक, 28 दिसंबर तक भारत के 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में ओमिक्रॉन के 653 मामले दर्ज किए गए, जिनमें से 186 मरीज ठीक हो गए या दूसरी जगह चले गए. सबसे ज्यादा (167) मामले महाराष्ट्र में, फिर दिल्ली (165), केरल (57), तेलंगाना (55), गुजरात (49) और राजस्थान (46) पाए गए. जैसा कि इस साल के शुरू में डेल्टा वैरिएंट से आई दूसरी लहर के समय देखा गया कि कोविड में किसी तरह की निरंतर वृद्धि अचानक आने वाले उफान की चेतावनी होती है. एम्स, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया का कहना है, ''हमें हालात को उतना नहीं बिगड़ने देना चाहिए जितने विदेश में बिगड़ गए हैं, खासकर ब्रिटेन में. ओमिक्रॉन के मामलों में दुनियाभर में उभार है और हमें भारत में इस तरह की हालत होने से रोकने के लिए तैयार रहना चाहिए.''

ओमिक्रॉन, या बी.1.1.529 वैरिएंट, जिसके बारे में सबसे पहले नवंबर के आखिर में दक्षिण अफ्रीका में जानकारी सामने आई थी, दुनियाभर में तेजी से डेल्टा की जगह ले रहा है. 28 दिसंबर तक यह दुनिया के 108 देशों में फैल गया, जिससे 1,51,000 लोग संक्रमित हुए और 26 की मौत हो गई. इस वैरिएंट के रिसेप्टर बाइंडिंग डोमेन (वह हिस्सा जिसके जरिए यह वायरस इनसानी कोशिका में प्रवेश करता है) में डेल्टा के मुकाबले आठ ज्यादा म्यूटेशन हैं. इस वैरिएंट के दोहरा होने का समय 1.5-3 दिन है. ब्रिटेन में घरों और कॉन्टैक्ट अध्ययनों से पुष्टि होती है कि यह कोविड का अब तक का सबसे ज्यादा संक्रामक स्ट्रेन है. मैक्स हेल्थकेयर के ग्रुप डायरेक्टर डॉ. संदीप बुद्धिराजा कहते हैं, ''अगले कुछ हफ्तों में भारत में ओमिक्रॉन के प्रसार की तस्वीर साफ हो जाएगी. इसने कई देशों में पुराने स्ट्रेन की जगह ले ली है और भारत में अलग व्यवहार नहीं करेगा.''

राष्ट्रीय स्तर पर अभी तक इसके तेजी से फैलने के कोई संकेत नहीं हैं. 27 दिसंबर को भारत की आर-वैल्यू (कोई कोविड मरीज कितने लोगों को संक्रमित कर सकता है) 1 से कम थी, जिससे इसके धीमे प्रसार का संकेत मिलता है और राष्ट्रीय टेस्ट पॉजिटिविटी दर 0.98 फीसद थी. लेकिन करीब 20 जिलों में साप्ताहिक पॉजिटिविटी दर 5 फीसद से ज्यादा थी. ये जिले केरल, मिजोरम, सिक्किम, मणिपुर और पश्चिम बंगाल में थे. कुछ महानगरों में आर-वैल्यू चिंता का सबब है. 15 दिसंबर को सबसे ज्यादा आर-वैल्यू 1.12 दिल्ली में थी, उसके बाद मुंबई (1.10), बेंगलूरू (1.07), कोलकाता (1.05) और चेन्नै (1.04) में थी.

### संभावित लहर पर लगाम

कुछ अध्ययनों से संकेत मिलता है कि यह वायरस पहले ही इतना फैल गया है कि तीसरी लहर आकर रहेगी. आइआइटी कानपुर के एक अध्ययन में गौसियन मिक्सचर मॉडल नामक स्टैटिस्टिकल टूल का इस्तेमाल करके भविष्यवाणी की गई है कि फरवरी के शुरू में तीसरी लहर अपने चरम पर

## क्या तीसरी लहर आने वाली है?

### राष्ट्रीय स्तर पर नई लहर के लक्षण नहीं...

- भारत की आर वैल्यू 1 से नीचे है जो इस बात की सूचक है कि संचार अभी धीमा है और 27 दिसंबर को टेस्ट पॉजिटिविटी दर 0.98% रही

### ...लेकिन चिंता वाले क्षेत्र उभर रहे हैं

- 20 जिले ऐसे हैं जहां साप्ताहिक पॉजिटिविटी दर 5% से ज्यादा है. ये जिले केरल, मिजोरम सिक्किम, मणिपुर और पश्चिम बंगाल में हैं.
- कुछ मेट्रो शहरों में आर वैल्यू रोग संचार बढ़ने का संकेत दे रही है. 15 दिसंबर को दिल्ली में सर्वाधिक आर वैल्यू (1.12) और इसके बाद मुंबई (1.10), बेंगलूरु (1.07), कोलकाता (1.05) और चेन्नै (1.04) में रही.
- 27 दिसंबर को दिल्ली में 9 जून के बाद से एक दिन में सबसे अधिक (331 केस) मामले आए

होगी. वैश्विक उदाहरणों पर आधारित पेशनगोइयां भी हैं कि यह लहर कितनी खराब हो सकती है. फ्रांस में 81 फीसद लोगों के टीकाकरण के बावजूद 28 दिसंबर को 1,00,000 नए मामले दर्ज किए गए. नीति आयोग के सदस्य डॉ. वी.के. पॉल चेतावनी देते हैं, ''भारत में इस तरह के प्रकोप से हमारी आबादी के मद्देनजर हर रोज करीब 13 लाख मामले आ सकते हैं. हमें हालात पर निगाह बनाए रखने की जरूरत है. तीसरी लहर को रोकने पर ध्यान केंद्रित करना जरूरी है.'' दूसरे विशेषज्ञों को उम्मीद है कि कोई लहर नहीं आएगी. फोर्टिस मुलुंड, मुंबई के क्रिटिकल केयर मेडिसिन और आइसीयू के डायरेक्टर डॉ. राहुल पंडित का कहना है, ''हमें दो सप्ताह और इंतजार करके यह देखना चाहिए कि आंकड़ों में इजाफा हो रहा है. साथ ही हमें कोविड से बचाव के एहतियाती उपायों को दोगुना कर देना चाहिए और अपने अस्पतालों को तैयार रखना चाहिए.''

विशेषज्ञों का कहना है कि लॉकडाउन आखिरी विकल्प होना चाहिए. मशहूर वायरोलॉजिस्ट डॉ. गगनदीप कंग का कहना है, ''कोविड के साथ जीने के लिए आपको व्यापक लॉकडाउन की जरूरत नहीं है. 'टेस्ट-ट्रेस-ट्रीट-वैक्सिनेट' की रणनीति एक साल पहले के मुकाबले आज ज्यादा उन्नत है. हमें अपने फायदे के लिए इन उपायों का इस्तेमाल करना चाहिए.'' वास्तव में मौजूदा दिशानिर्देशों में राज्यों से कहा गया है कि वे 10 फीसद से अधिक टेस्ट पॉजिटिविटी दर होने या अस्पतालों में 40 फीसद से ज्यादा बेड भर जाने पर ही लॉकडाउन लगाएं. जहां कहीं मामले बढ़ने के संकेत हैं, वहां रणनीतिक तरीके लागू करने चाहिए. मिसाल के तौर पर, मुंबई की आर-वैल्यू पहले 1 से ज्यादा है. हालांकि इस महानगर में लॉकडाउन नहीं लगाया है लेकिन स्कूलों में अनिवार्य रूप से मास्क लगाने और घंटे कम करने जैसे जनसंपर्क घटाने के उपाय किए गए हैं. महाराष्ट्र में रात्रि कर्फ्यू भी लागू है और मॉल तथा सिनेमा हॉल बंद कर दिए गए हैं.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी 25 दिसंबर को कोविड अनुकूल व्यवहार, खासकर मास्क पहनने पर जोर दिया. संक्रामक रोगों की विशेषज्ञ दिल्ली की डॉ. अंकिता बैद्य का कहना है, ''लोगों को तीन-प्लाइ वाले या ए95 मास्क पहनने की जरूरत है. एक परत वाले सूती या कपड़े के अन्य मास्क कारगर नहीं होंगे.''

### टीका ही हथियार है

विशेषज्ञों को भरोसा है कि इस बार कोविड के प्रसार और बीमारी की गंभीरता को कम करने में टीके मददगार होंगे. कोविड-19 के आठ टीकों—कोविशील्ड, कोवैक्सीन, जायकोव-डी, स्पुतनिक-V, जॉनसन ऐंड जॉनसन, कोर्बेवैक्स और कोवोवैक्स—को देश के दवा नियामक ने आपातकालीन प्रयोग की मंजूरी दे दी है. देश में 18 साल से ऊपर के करीब 89 फीसद लोगों को टीके की पहली डोज लग गई है और 61 फीसद को दोनों डोज लगा दी गई है.

लेकिन संकेत हैं कि ओमिक्रॉन को रोकने के लिए टीके की दो डोज पर्याप्त नहीं होंगी. भारत में ओमिक्रॉन के 90 फीसद मामलों में पूरी तरह टीकाकरण हो चुका था, तीन फीसद ने विदेशों में बूस्टर शॉट लिया था और दो फीसद ने एक डोज लगवाई थी. लंदन के इंपीरियल कॉलेज के एक अध्ययन में कहा गया है कि कोविशील्ड की दोनों डोज के बाद ओमिक्रॉन से गंभीर बीमारी के बचाव के मामले महज 20 फीसद हैं (भारत में अब तक करीब 88 फीसद ने कोविशील्ड का टीका लिया है) और मौत से बचने के मामले केवल 30 फीसद है. बूस्टर शॉट लेने से गंभीर बीमारी की आशंका 80 फीसद कम हो जाती है और मौत का अंदेशा 88 फीसद घट जाता है. डॉ. कंग कहती हैं, ''बूस्टर शॉट की बदौलत लक्षण वाले संक्रमण का 70-75 फीसद बचाव होता है.''

भारत सरकार ने पूरी तरह से टीकाकृत स्वास्थ्यकर्मियों और अग्रिम मोर्चे के कर्मचारियों के साथ ही सह-रुग्णता वाले 60 साल से अधिक उम्र के लोगों के लिए 10 जनवरी से बूस्टर शॉट लगाने की घोषणा की है. साठ साल से अधिक उम्र के लोगों को डॉक्टरों की सलाह पर ही शॉट दिया जाएगा और वह भी दूसरी डोज के नौ महीने बाद. 15 से 18 साल की उम्र के बच्चों को 3 जनवरी से कोवैक्सीन का टीका लगाया जा सकता है. मेदांता हॉस्पिटल, गुरुग्राम के चेयरमैन और एमडी डॉ. नरेश त्रेहन का कहना है, ''बच्चों को टीका लगाने से यह सुनिश्चित हो जाएगा कि वे बीमारी से परिवार के सदस्यों को संक्रमित नहीं करेंगे और ओमिक्रॉन के खिलाफ अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करेंगे.''

वैसे, यह स्पष्ट नहीं है कि किस वैक्सीन को बूस्टर के तौर पर लिया जा सकता है. ब्रिटेन में किए गए कॉम-कोव2 के अध्ययन में पाया गया कि उन लोगों की रोगरोधी प्रतिक्रिया बेहतर थी जिन्होंने पहली डोज एस्ट्राजेनेका या फाइजर-बायोएनटेक के नौ सप्ताह बाद मॉडर्ना का टीका लिया. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में मंत्रणा चल रही है कि कोविशील्ड लगा चुके लोगों को तीसरी डोज हाल में स्वीकृत कोवोवैक्स वैक्सीन की दी जा सकती है, जिसे सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया में बनाया जाएगा. इस बारे में अभी फैसला किया जाना है. मंत्रालय के एक अधिकारी ने नाम गोपनीय रखने की गुजारिश के साथ बताया, ''हम तीसरे शॉट के लिए श्रेष्ठ कार्यप्रणालियों पर डेटा का इंतजार कर रहे हैं. हमें ऐसी वैक्सीन चाहिए जिसका बूस्टर शॉट के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन हो सके.''

यह भी हो सकता है कि ओमिक्रॉन खुद ही बहुत लोगों को प्राकृतिक इम्युनिटी प्रदान कर दे. डॉ. बुद्धिराजा का कहना है, ''ओमिक्रॉन जीवित पस्त हो चुके वायरस की तरह है. अगर इससे कुछ मामूली

## हमें क्यों है बूस्टर की जरूरत

### दो डोज वैक्सीन संक्रमण नहीं रोकेंगे

↘ भारत में ओमिक्रॉन के कुल 91% मामले पूर्ण टीकाकरण वाले हैं, 3% ने विदेशों में बूस्टर शॉट लिया है जबकि 2% मरीजों को एक टीका लग चुका था

### दो डोज शायद मौत रोकने में मददगार न हो सके

↘ इंपीरियल कॉलेज का एक अध्ययन बताता है कि कोविशील्ड की दो डोज (भारत में टीका लगवा चुके करीब 88% लोगों को यही लगी है ) ओमिक्रॉन से जन्मी गंभीर बीमारियों से 20% सुरक्षा और मौत से बचाव में 30% सुरक्षा देते हैं.

### बूस्टर कैसे मददगार

↘ एक अध्ययन के मुताबिक बूस्टर शॉट से गंभीर बीमारियों में 80% तक जबकि मौत में 88% तक सुरक्षा मिलती है. विश्व में देखें तो अमेरिका में 19.4 लोग बूस्टर डोज ले चुके हैं जबकि यह दर जर्मनी में 36%, ब्रिटेन में 40% और ब्राजील में 11% है.

**ज्यादा खतरा**
28 दिसंबर को दिल्ली के सरोजनी नगर मार्केट का नजारा

एएनआइ

बीमारी होती है तो यह टीकाकरण के लिए बूस्टर होगा और दूसरों के लिए वैक्सन डोज होगा.''

एक ओर जहां इस वायरस को थामने के उपाय किए जा रहे हैं वहीं इसके बढ़ने पर इलाज की भी तैयारी चल रही है. भारत में करीब 1,810,083 आइसोलेशन बेड, 4,94,314 ऑक्सीजन बेड, 1,39,300 आइसीयू बेड और 18,836 एमटी प्रति दिन के हिसाब से ऑक्सीजन है. सरकार ने ऐंटी-वायरल दवा मोल्नूपिराविर के इस्तेमाल की भी इजाजत दे दी है. अधिक जोखिम वाले लोगों में बीमारी के शुरुआती चरण में इस दवा के इस्तेमाल से अस्पताल में भर्ती करने और मौत के मामले में करीब 30 फीसद की कमी देखी गई है. भारत में 13 कंपनियां इसे बनाएंगी.

भारत में ओमिक्रॉन मामलों के डेटा से पता चला कि केवल 30 फीसद में ही लक्षण दिखे—ज्यादतार मामलों में सर्दी-जुकाम से मिलते-जुलते लक्षण. बेंगलूरू के टाटा इंस्टीट्यूट फॉर जेनेटिक्स ऐंड सोसाइट के डायरेक्टर और वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) में सेंटर फॉर सेल्यूलर ऐंड मॉल्यूक्यूलर बायोलॉजी के पूर्व प्रमुख राकेश मिश्र का कहना है, ''लोग ओमिक्रॉन संक्रमण को सामान्य सर्दी-जुकाम मान सकते हैं. ओमिक्रॉन से पैदा हुई बीमारी डेल्टा से बिल्कुल अलग है. अभी तक यह गंभीर नहीं है.''

सितंबर के बाद से रोजाना परीक्षण के मामले कम हो गए हैं, और आइसीएमआर (भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद) के मुताबिक, यह दिसंबर के पहले सप्ताह में 8,86,263 और 12.5 लाख के बीच था. केरल ने 26 दिसंबर को केवल 42,149 टेस्ट कराए थे, जहां देश में सबसे ज्यादा पॉजिटिविटी रेट 7.7 फीसद है. डॉ. पंडित का कहना है, ''कोविड का इलाज और उससे बचाव काफी हद तक समय पर पहचान पर निर्भर है. कई दवाइयां लक्षण आने के पहले कुछ दिनों के भीतर देनी होती हैं. अगर लोग टेस्ट कराने के लिए आगे नहीं आएंगे तो पूरे प्रसार को तय कर उभरते हॉटस्पॉट का पता लगाना मुश्किल है.''

निकट भविष्य में एक बड़ी चुनौती 2022 के शुरू में उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में प्रस्तावित विधानसभा चुनाव हैं. स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण ने 23 दिसंबर को चुनाव वाले सभी राज्यों से अपने यहां टीकाकरण अभियान तेज करने को कहा. मंत्रालय ने राष्ट्रीय औसत से कम टीकाकरण वाले राज्यों उत्तर प्रदेश और पंजाब में मल्टीडिसिप्लिनरी टीमें भेजी है. उत्तर प्रदेश में 83 फीसद योग्य आबादी को पहली डोज लग गई है और 46 फीसद का पूर्ण टीकाकरण हो गया है. पंजाब ने 2.6 करोड़ टीके लगाए हैं; 77 फीसद योग्य आबादी को पहला टीका लगा दिया गया है और 41 फीसद को दोनों टीके लग गए हैं. सार्वजनिक स्वास्थ्य के विशेषज्ञ के. श्रीनाथ रेड्डी का कहना है, ''हमने देखा है कि कोविड से बचाव के नियम तोड़ने से कैसे अचानक उफान आता है. उन गलतियों को दोहराना नहीं चाहिए. एक ओर जहां टीके, इलाज के नए विकल्पों और कोविड केयर इन्फ्रास्ट्रक्चर में सुधार ने हमें डेल्टा लहर के मुकाबले ओमिक्रॉन के खिलाफ मजबूत स्थिति में ला दिया है, वहीं किसी तरह की गफलत महंगी साबित हो सकती है. ■

**खास रपट | पीयूष जैन**

# महक का काला कारोबार

**पीयूष जैन के घर की दीवारें खोखली थीं जिनमें नोटों की गड्डियां छुपाई गई थीं. उन्हें खोदते ही177 करोड़ रुपए फर्श पर बिखर गए. जैन के घर से बरामद 23 किलो सोने में 12 किलो सोना विदेशी था जिस पर दुबई और स्विट्जरलैंड का मार्क लगा था**

**आशीष मिश्र**

साल 2018 में अजय देवगन अभिनीत बॉलीवुड फिल्म 'रेड' आई थी. फिल्म में लखनऊ में तैनात आयकर उपायुक्त अमय पटनायक (अजय देवगन) को सीतापुर के बाहुबली नेता रामेश्वर सिंह के पास जमा किए गए काले धन की जानकारी मिलती है. अमय पटनायक अपनी टीम को लेकर रामेश्वर सिंह की सीतापुर स्थित कोठी में छापा मारते हैं. काफी प्रयास के बाद अंतत: कोठी की दिवारों, छत पर छिपाए गए करोड़ों रुपए के नोटों की गड्डियां और सोना पकड़ में आता है.

हूबहू 'रेड' फिल्म जैसा नजारा लखनऊ से 80 किलोमीटर कानपुर में दिखा बस किरदार बदले हुए थे. कर चोरी के अंदेशे में महानिदेशालय जीएसटी इंटेलिजेंस (डीजीजीआइ) अहमदाबाद की एक टीम ने कानपुर के किदवई नगर के पास आनंदपुरी इलाके में मौजूद पीयूष जैन के घर पर छापा मारा. पीयूष जैन पान मसाला में महक के लिए इस्तेमाल में आने वाले रासायनिक कंपाउंड बनाने का काम करता है. टैक्स चोरी कर अवैध धन छिपाए जाने की जांच करने पहुंचे डीजीजीआइ अफसरों को 3000 वर्ग फिट में फैले पीयूष जैन के घर की कुछ दीवारें अलग तरह की लगीं. इन दीवारों को ठोंका तो यह अंदर से ये खोखली थीं. दीवारों को तोड़ा गया तो अंदर से नोटों के बंडल गिरने लगे. पांच सौ और दो सौ के नोटों के यह बंडल कागज और पॉलिथिन में पैक थे. घर के एक कोने में छिपा कर रखी गईं अलमारियों में भी नोटों के बंडल मिले. बेडरूम में प्लाई और रैक्सीन के बने शोपीस को तोड़ने पर इनसे भी नोटों के बंडल गिरने लगे. आलम यह था कि पीयूष जैन के घर की फर्श नोटों की गड्डियों से पट गया था. नोटों को गिनने के लिए पहले से लगाई गई चार मशीने कम पड़ गईं तो अगले दिन यानी 24 दिसंबर को 13 और मशीनें मंगानी पड़ी. रुपयों को रखने के लिए स्टील के 80 बक्से और एक कंटेनर भी मंगाए गए.

आनंदपुरी में जांच कर रही डीजीजीआइ टीम के कुछ अधिकारी 24 दिसंबर को पीयूष जैन के बेटे प्रत्युष जैन को लेकर कन्नौज के छिपट्टी मोहल्ले में पहुंचे. यहां पीयूष जैन के पैतृक आवास की जांच शुरू की गई. करीब 80 घंटे से अधिक की

**गिरफ्त में**
कंपाउंड व्यापारी पीयूष जैन को कानपुर सेशन कोर्ट में पेशी के लिए ले जाते यूपी के पुलिस कर्मी

**बड़ी बरामदगी**
कानपुर के आनंद पुरी स्थित पीयूष जैन के आवास से बरामद नकदी

मनीष अग्निहोत्री

पीयूष जैन

कार्रवाई के बाद डीजीजीआइ अहमदाबाद की टीम को पीयूष जैन के आनंदपुरी स्थित घर से 177.45 करोड़ रुपए नकद बरामद हुए. कन्नौज के इस घर से 17 करोड़ रुपए नकद, सोने के बिस्कुट और छह करोड़ रुपए का चंदन का तेल बरामद हुआ. छापेमारी में पीयूष पर 31.50 करोड़ रुपए की टैक्स चोरी का मामला बना है. कंपाउंड कारोबारी पीयूष जैन को टैक्स चोरी के आरोप में धारा 132 (1) और 69 सेंट्रल जीएसटी की धाराओं में एफआइआर दर्ज कर जेल भेज दिया गया है. केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड ( सीबीआइसी) के इतिहास में कानपुर में कंपाउंड कारोबारी पीयूष जैन के ठिकानों से 177 करोड़ रुपए की नकद बरामदगी एक कीर्तिमान बन गयी है.

## 'आपरेशन बिग बाजार'

सीबीआइसी और डीजीजीआइ के इतिहास में नकद की सबसे बड़ी बरामदगी के सफल अभियान के पीछे भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी और वर्तमान में डायरेक्टर जनरल ऑफ जीएसटी इंटेलिजेंस, अहमदाबाद के कार्यालय में तैनात एडीशनल डायरेक्टर जनरल विवेक प्रसाद का दिमाग है. सितंबर 2019 में गुजरात के कांडला पोर्ट में 400 करोड़ रुपए के आइटीसी घोटाले का पर्दाफाश करने वाले

# अवैध कारोबार का फुलप्रूफ बंदोबस्त

मनीष अग्निहोत्री

- फर्जी कंपनी-पान मसाले के लिए रासायनिक कंपाउंड का अवैध कारोबार करने वाले कई सारी फर्जी कंपनियां बनाते हैं. इनमें से ज्यादातर कंपनियां सेंट्रल जीएसटी में रजिस्टर्ड होती है. राज्य की तुलना में सेंट्रल जीएसटी में पंजीकरण आसान होता है.
- टैक्स–हर कंपनी को महीने की 20 तारीख तक टैक्स की जानकारी देनी होती है. अवैध कारोबारी महीने की 20 तारीख के बाद ही फर्जी फर्म का रजिस्ट्रेशन कराते हैं और अगले महीने की 20 तारीख से पहले फर्म को बंद कर देते हैं. इससे फर्जी फर्म पकड़ में नहीं आती.
- कच्चा माल-कच्चा माल की खरीद में हेरफेर किया जाता है. बड़ी मात्रा में ऐसी खरीद की जाती है जो खाताबही (बुक्स ऑफ एकाउंट्स) से मेल नहीं खाती. क्योंकि अगर कच्चा माल सही दस्तावेज के आधार पर खरीदा जाएगा तो उसी के अनुरूप उत्पादन भी दिखाना होगा.
- 'खरीद–कच्चे माल की खरीद 'बी-टू-बी' यानी 'रजिस्टर्ड बिजनेस कंपनी टू रजिस्टर्ड बिजनेस कंपनी' न करके 'बी-टू-सी' यानी 'रजिस्टर्ड बिजनेस कंपनी टू कस्टमर' जाती है. इसमें कई सारे जाली कस्टमर या फर्जी फर्म के नाम से कच्चा माल खरीद लिया जाता है. यह सारी खरीद नकद में की जाती है.
- उत्पादन–सारा उत्पादन दो नंबर का नहीं होता है. एक चौथाई उत्पादन का पूरा रिकार्ड रखा जाता है. इस उत्पादन के लिए कच्चे माल की खरीद 'बी-टू-बी' प्रक्रिया के तहत की जाती है. इसी की आड़ में करीब तीन चौथाई अवैध कारोबार किया जाता है.
- टर्न ओवर–अवैध कारोबार करने वाले अपनी रजिस्टर्ड कंपनी का टर्नओवर कभी ज्यादा बढ़ने नहीं देते. टर्न ओवर बढ़ने पर टैक्स भी बढ़ता है और इससे कंपनी टैक्स से जुड़े विभागों की नजर में आती है. इसलिए सालाना टर्नओवर कम ही दिखाया जाता है.
- बिजली कनेक्शन–कंपाउंड बनाने वाली फैक्ट्री में बिजली के अवैध कनेक्शन की व्यवस्था होती है ताकि अवैध उत्पादन में लगने वाली अतिरिक्त बिजली की मांग कागजों में दर्ज न हो सके. बिजली की मांग से भी उत्पादन का आकलन होता है.
- ई-वे बिल–फर्जी फर्म के नाम पर ई-वे बिल (माल के परिवहन

विवेक प्रसाद कानपुर और लखनऊ में भी तैनात रह चुके हैं. तैनाती के अनुभवों के आधार पर विवेक प्रसाद को पान मसाला और उससे जुड़े कच्चे माल के कारोबार में होने वाली टैक्स चोरी पकड़ने में पारंगत माना जाता है. करीब दो महीने पहले डीजीजीआइ, अहमदाबाद के अधिकारियों ने गुजरात में पान मसाला लदे चार ट्रक पकड़े थे जो अवैध रूप से अहमदाबाद और आसपास के इलाकों में पान मसाला सप्लाई करने पहुंचे थे. ट्रक पर लगे फास्ट टैग की जांच में पता चला कि जिस मार्ग के लिए ई-वे बिल जारी हुआ है उससे इतर रास्ते पर ट्रक पान मसाला सप्लाई करने जा रहे थे. कानपुर में तैनात एक वाणिज्य कर अधिकारी बताते हैं, ''जांच में पता चला कि कानपुर के ट्रांसपोर्ट नगर स्थित 'गणपति रोड कैरियर' के ट्रक पर लदा शिखर पान मसाला 'त्रिमूर्ति फ्रेगरेंस प्राइवेट लिमिटेड' का है.'' इसी के बाद से विवेक प्रसाद ने कानपुर के जीएसटी अधिकारियों को एलर्ट कर दिया और गुपचुप आपरेशन 'बिग बाजार' शुरू किया गया. 22 दिसंबर को कानपुर पहुंची डीजीजीआइ, अहमदाबाद की टीम ने स्थानीय अफसरों को शहर के दक्षिणी इलाके में मौजूद बिग बाजार में बुलाया. यहां से अफसरों को गाड़ी में बिठाकर एक सीलबंद लिफाफा थमाया गया जिसमें शिखर पान मसाला बनाने वाली कंपनी त्रिमूर्ति फ्रेगरेंस प्राइवेट लिमिटेड और गणपति रोड कैरियर के मालिक प्रवीण जैन के ठिकानों पर छापेमारी करने संबंधी आदेश और जरूरी निर्देश थे. ट्रांसपोर्टर प्रवीण जैन के घर से 45 लाख और आफिस से 56 लाख रुपए की नकदी मिली. इनसे 3.09 करोड़ रुपए का टैक्स जमा कराया गया. वहीं शिखर पान मासले के गोदाम में छापे के दौरान जांच दल को 'एसेंस' सप्लाई करने वाले पीयूष जैन के बारे में जानकारी मिली थी. इसी के बाद से पीयूष जैन के ठिकानों पर छापेमारी शुरू हुई. केंद्र और राज्य सरकार के 35 अधिकारी और 85 कर्मचारी अलग-अलग जगहों पर हुई छापेमारी में शामिल रहे.

क्या कानपुर काला धन छिपाने का केंद्र बनता जा रहा है? कानपुर में व्यवसायिक टैक्स मामलों के जानकार वकील दीपक तोमर कहते हैं, ''कानपुर पान मसाला और गुटखा व्यापार का देश का सबसे बड़ा केंद्र है. पान मसाले पर केंद्र और राज्य जीएसटी मिलाकार कुल 28 प्रतिशत टैक्स लगता है. इसके अलावा केंद्र सरकार इन उत्पादों का उपयोग हतोत्साहित करने के लिए इनपर 60 फीसदी सेस भी लगाती है. इतना भारी भरकम टैक्स ही पान मसाला और गुटखा के अवैध कारोबार की जड़ है.''

## सादा जीवन तुच्छ विचार

पान मसाला की आड़ में टैक्स चोरी करने वाले कैसे बच निकलते हैं? कानपुर में छह वर्ष तक तैनात रहे उप वाणिज्य कर आयक्त विवेकानंद कुमार बताते हैं, ''ज्यादातर अवैध कारोबार करने वाले काफी सादगी से रहते हैं ताकि यह किसी की नजर में न आएं. यह अपनी कंपनी का सालाना टर्न ओवर भी काफी कम ही रखते हैं. इसका पूरा टैक्स समय पर जमा करते हैं. इससे जीएसटी और आयकर विभाग की नजर इन पर नहीं पड़ती है. चूंकि यह अपना अवैध कारोबार नकद करते हैं इसलिए यह काफी धन छिपाकर रखते हैं.'' अरबों के अवैध कारोबार के मालिक पीयूष जैन कन्नौज शहर में प्रिया स्कूटर और सैंट्रो कार लेकर ही घूमते थे. पीयूष जैन ने वर्ष 2007 में कानपुर के आनंदपुरी में मकान खरीदा था जहां इनके बेटे प्रत्यूष और प्रियांश रहते हैं. कन्नौज के उत्तरी इलाके

**बक्से पड़ गए कम**
पीयूष जैन के घर से बरामद नकदी को ले जाने के लिए बक्से कम पड़ गए तो टीम को बाजार से नए बक्से खरीदने पड़े, (इनसेट में) गिरफ्तारी के वक्त पीयूष जैन

के लिए सरकार द्वारा जारी प्रपत्र) और टैक्स इनवाइस जारी किया जाता है. इससे अवैध माल को फैक्ट्री से गोदाम में पहुंचाया जाता है. ई-वे बिल और टैक्स इनवाइस सही होने पर धंधा पकड़ में नहीं आता.

➲ सप्लाई–अवैध कारोबारियों को जहां माल भेजना होता है वहां से काफी दूर के प्रदेश में एक फर्जी फर्म बनाते हैं. मसलन कानपुर में माल भेजने के लिए पश्चिम बंगाल में फर्जी फर्म बनाई. हरियाणा की फैक्ट्री से माल सही कागजों पर पश्चिम बंगाल के लिए रवाना किया लेकिन बीच में कानपुर में उतार दिया.

➲ परिवहन–दो बिंदुओं के बीच परिवहन में लगने वाले समय से दोगुने समय के लिए ई-वे बिल जारी होता है. मसलन हरियाणा से पश्चिम बंगाल तक ट्रक जाने में पांच दिन लगता है तो ई-वे बिल 10 दिन तक मान्य होता है.

➲ कई फेरे–एक ई-वे बिल पर कई फेरे लगाए जाते हैं. मसलन हरियाणा से पश्चिम बंगाल तक के ई-वे बिल (10 दिन के लिए मान्य) पर अवैध रूप से कानपुर में माल पहुंचाने में दिन का समय लगता है. इस ई-वे बिल पर हरियाणा से कानपुर तक कई फेरे में अवैध माल पहुंचाया जाता है.

# टैक्स चोरी से बना 'कंपाउंड किंग'

जांच टीम ने कंपाउंड कारोबारी पीयूष जैन के कानपुर के आवास से मिले 177.45 करोड़ रुपए को टर्नओवर की रकम माना है. पीयूष पर 31.50 करोड़ रुपए की टैक्स चोरी का मामला बनता है. दरअसल पान मसाला और गुटखा में महक के लिए उपयोग किया जाने वाले खास फ्लेवर के लिए रासायनिक कंपाउंड का इस्तेमाल किया जाता है. कंपाउंड की महक ही पान मसाला को अलग पहचान दिलाकर लोगों को इसकी लत लगती है. पीयूष जैन और उसका भाई अंबरीष जैन कन्नौज और कानपुर में 'कंपाउंड किंग' के नाम से ही जाने जाते हैं. पीयूष जैन के बाबा फूलचंद्र जैन कन्नौज में छपाई का काम करते थे. इनके पिता महेश चंद्र जैन मुंबई में एक साबुन कंपनी में काम करते थे. महेश चंद्र ने ही कंपाउंड बनाने का काम शुरू किया. केमिस्ट्री से एमएसएसी डिग्री हासिल करने वाले पीयूष ने अपने पिता से कंपाउंड बनाने का नुस्खा सीख लिया. पीयूष ने चंदन का ऐसा सिंथेटिक आयल बनाया जिसका कोई तोड़ नहीं था. यह बिल्कुल चंदन के तेल के जैसा ही एहसास कराता है. इसके बाद पीयूष का कंपाउंड बनाने का धंधा चल निकला. वर्तमान में पीयूष जैन की कंपनी 'ओडोकेम प्राइवेट लिमिटेड' से बना कंपाउंड देश की सभी बड़ी पान मसाला और सौंदर्य प्रसाधन बनाने वाली बड़ी-बड़ी कंपनियां खरीदती हैं. तोमर बताते हैं, ''कंपाउंड बनाने के लिए कत्था, चूना, लौंग, इलायची, मसाले के साथ चमड़ा साफ करने में उपयोग आने वाले 'गैंम्बिभयर' नामक रसायन का भी उपयोग होता है. हर कंपाउंड को बनाने का एक विशेष फार्मूला होता है जो केवल कंपाउंड फैक्ट्री का मालिक ही जानता है.'' कंपाउंड बनाने के लिए कच्चा माल आसाम, पश्चिमी बंगाल, आंध्र प्रदेश महाराष्ट्र से मंगाया जाता है. कच्चे माल मंगाने की प्रक्रिया से ही अवैध कारोबार और टैक्स चोरी की शुरुआत होती है. (देखें ग्राफिक्स) तोमर बताते हैं, ''कानपुर के पान मसाला और गुटखा कारोबार में सालाना टैक्स चोरी 1000 करोड़ से अधिक ही है. कानपुर से अवैध तरीके से उन प्रदेशों में पान मसाला और गुटखा की सप्लाई होती है जहां पर यह बैन हैं. यह पूरा कारोबार टैक्स से बचकर किया जाता है.'' जाहिर है इतनी बड़ी टैक्स चोरी आयकर व जीएसटी अधिकारियों की मिलीभगत का भी संकेत देती है.

में मौजूद छिपट्टी मोहल्ले में जैन स्ट्रीट के नाम जाने वाले इलाके में बेहद संकरी गली के एक कोने पर पीयूष जैन का पुश्तैनी मकान है. मोटी दीवारें, महंगे एयरकंडीशनर, स्टील की रेलिंग और दरवाजे इस कोठी को दूसरे मकानों से अलग करते हैं.

आनंदपुरी और कन्नौज के मकानों में सीसीटीवी कैमरा न लगे होने के कारण जांच अधिकारियों को यह पता लगाने में दिक्कत हो रही है कि अकूत धन और सोना पीयूष जैन के मकान में कैसे पहुंचा? पीयूष जैन के घर से बरामद 23 किलो सोने में से 12 किलो सोना विदेशी है. सोने की इन सिल्लियों पर दुबई और स्विट्जरलैंड का मार्क लगा है. जांच टीम यह पता लगाने में जुटी है कि यह सोना कहां से और कब आया है? इसके पीछे किसी अंतरराष्ट्रीय सोना तस्करी गिरोह का हाथ है या फिर जल्द अमीर बनने के चक्कर में पीयूष ने हवाला कारोबार के जरिए सोने की तस्करी शुरू की है. राज्य जीएसटी विभाग के एक अधिकारी बताते हैं, ''पीयूष जैन के पिता महेश जैन करीब 15 वर्ष से अधिक समय तक विदेश में रहे. वह किस देश में रहे? कब-कब भारत आए? विदेश में उनका क्या व्यापार था? इन सब बिंदुओं पर जांच शुरू कर दी गई है.''

## 'समाजवादी इत्र'

साल 2022 के विधानसभा चुनाव से ठीक पहले पीयूष जैन के घर पर मिले करीब 194 करोड़ रुपए को लेकर राजनीति भी उफान पर है. 28 दिसंबर को मेट्रो का उद्घाटन करने कानपुर पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में पीयूष जैन के घर से मिले रुपयों के जरिए समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव पर निशाना साधा. मोदी ने कहा, ''2017 के पहले भ्रष्टाचार का जो इत्र इन्होंने पूरे यूपी पर छिड़क रखा था, वो फिर सबके सामने आ गया है. लेकिन वे अब मुंह पर ताला लगाकर बैठे हैं. श्रेय लेने के लिए आगे नहीं आ रहे हैं. नोटों का जो पहाड़ पूरे देश ने देखा वही उनकी उपलब्धि और सच्चाई है.'' कन्नौज के छिपट्टी मोहल्ले के जैन स्ट्रीट में पीयूष जैन के घर के करीब पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के करीबी और सपा एमएलसी पुष्पराज जैन उर्फ पंपी का भी मकान है. पुष्पराज जैन ने चार साल पहले 'समाजवादी इत्र' लांच किया था. भाजपा पीयूष जैन के घर पर मिले करोड़ों रुपयों को पुष्पराज के जरिए साल 2022 के विधानसभा चुनाव में सपा को फंडिंग करने के लिए लाए जाने का आरोप लगा रही है. कन्नौज के बीजेपी सांसद सुब्रत पाठक कहते हैं, ''पीयूष जैन और पुष्पराज के मकान आसपास है. पीयूष के मकान में अचानक इतना पैसा मिले और पुष्पराज को कोई जानकारी न हो यह बात समझ में नहीं आती.'' हालांकि पुष्पराज जैन भाजपा के आरोपों को सिरे से नकारते हुए कहते हैं,''भाजपा के लोग चुनाव से पहले अफवाह फैलाने की कोशिश कर रहे है. पीयूष से मेरा कोई कारोबारी रिश्ता नहीं है. ■

www.gnttv.com

# आपके ड्रीम आईडिया को रियलिटी बनाने आ गया है

Bada Business
Presents

HORSES STABLE

# जो जीता वही सिकंदर

Co Presented by

Since 1760
Lewis Berger
Paint your imagination

हर शनिवार रात 8 बजे
और रविवार शाम 5 बजे

GNT

गुड न्यूज़ टुडे

बिहार
इंटरफेथ मैरिज

# जात न पूछो 'इश्क' की

**तेजस्वी-रेचल के अंतरधार्मिक विवाह पर बस थोड़ी हलचल हुई लेकिन बिहारी समाज ने इसे ज्यादा हवा न देकर साबित कर दिया कि वो सचमुच प्रगतिशील है**

पुष्यमित्र

**खूबसूरत जोड़ी** शादी के बाद नई नवेली दुल्हन रेचल के साथ तेजस्वी

सुप्रीम कोर्ट ने 'अपनी पसंद के व्यक्ति से विवाह के अधिकार' को भारतीय संविधान के अनुच्छेद-21 के तहत दिए गए अधिकारों का हिस्सा बताया है बावजूद इसके हमारे समाज की बुनावट कुछ ऐसी है कि वह इंटरफेथ मैरिज यानी अंतरधार्मिक विवाह को इतनी सहजता से स्वीकार नहीं कर पाया है. खासतौर से तब जब इंटरफेथ मैरिज करने वाला को राजनेता हो. और वो राजनेता भी खांटी बिहारी हो.

पिछले दिनों जिस रोज अभिनेता विक्की कौशल की शादी अभिनेत्री कैटरीना कैफ के साथ हो रही थी, उसी दिन बिहार के नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव भी अपनी प्रेयसी रेचल गोदिनाहो के साथ वैवाहिक बंधन में बंध गए. संयोग ऐसा रहा कि दोनों इंटरफेथ यानी दो अलग-अलग धर्म के मानने वालों की शादी थी और दोनों युगलों में दूल्हा हिंदू और दुल्हन क्रिश्चिन थे. मगर जहां शादी के बाद विक्की कौशल और कैटरीना के रोमांस और पारिवारिक जीवन के किस्से मीडिया में आने लगे. कुछ सवाल उठे भी. मसलन हिंदू मैरिज एक्ट के तहत हिंदू और क्रिश्चिन की आपस में शादी नहीं हो सकती.

तेजस्वी-रेचल विवाह के बाद जो पहली खबर निकली वह यह कि शादी से पहले रेचल का धर्म, नाम और टाइटल सब बदल दिया गया है. वह हिंदू हो गई है, उसका नाम अब रेचल नहीं राजेश्वरी होगा और तेजस्वी ने खुद आकर बताया कि उसका टाइटल तो 'यादव' ही होगा. जाहिर है नाम ये बदलाव उनकी राजनीतिक मजबूरी हो. पर दावा है कि सब राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद की सहमति से हुआ है. ये एक मिसाल भर है कि बिहार जैसे जागरुक प्रांत में शादी जैसा पर्सनल मामला भी कैसे पोलिटिकल हो जाता है. ये कोई पहला और अकेला मामला नहीं है. बिहार के कई बड़े राजनेताओं ने इंटरफेथ शादियां की हैं.

### संघ के दफ्तर में हुई थी सुशील मोदी की शादी

पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव से पहले बिहार के एक और मशहूर पूर्व मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी इंटरफेथ विवाह कर चुके हैं. उनकी शादी भी क्रिश्चिन महिला से हुई है. दिलचस्प है कि उनकी पत्नी जेस्सी जार्ज अपना नाम जेस्सी मोदी लिखती हैं. अपनी शादी के बारे में बताते हुए सुशील कुमार मोदी कहते हैं, ''एक रेल यात्रा में जेस्सी से मुलाकात हुई थी. वे केरल की कैथोलिक इसाई धर्म से रिश्ता रखती थीं. उनसे मिलना-जुलना हुआ, नजदीकियां बढ़ीं और फिर तय हो गया कि हम शादी कर लेंगे. मगर जेस्सी का धर्म परिवर्तन नहीं हुआ. हमारी शादी पहले स्पेशल मैरिज एक्ट से हुई, फिर आर्य समाजी विधि से. हां, अब वे अपना नाम जेस्सी मोदी लिखने लगी हैं, मगर उनका सर्टिफिकेट नेम जेस्सी जार्ज ही है.''

अपने शादी के दिन को याद करते हुए सुशील मोदी अचानक रोमांचित हो जाते हैं- ''पटना के आरएसएस कार्यालय के शाखा मैदान में बड़ा सा मंच बना था. उसी मंच पर आर्य समाजी विधि से शादी हुई. अमूमन संघ को आज भी दकियानूसी माना जाता है. मगर हमारी शादी में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी समेत भाउराव देवरस, गोविंदाचार्य और नानाजी देशमुख जैसे संघ के कई बड़े नेता पहुंचे थे. मंच के बैकग्राउंड में भारत माता का चित्र बना था. हालांकि यह आयोजन बहुत लंबा और भव्य नहीं था. कुल एक घंटे का कार्यक्रम था. शादी हुई, फिर कुछ बड़े नेताओं ने आकर आशीर्वाद स्वरूप पांच-पांच मिनट का भाषण दिया.'' वे कहते हैं, हमने सादगी का ख्याल रखा. मेहमानों के बीच सिर्फ कोल्ड ड्रिंक और बर्फी बंटी. करीब ढाई हजार मेहमान आए थे. इस तरह एक मैसेज गया कि संघ जात और धर्म की दीवारों को नहीं मानता. जब यह पूछा गया कि क्या आपकी शादी चर्च में भी हुई तो थोड़ी झिझक के साथ वे बोले, नहीं. चर्च में नहीं हुई. हालांकि जेस्सी अभी भी कभी-कभी चर्च जाती हैं. हमारे घर में दोनों धर्मों के त्योहार मनाए जाते हैं. होली-दीवाली भी और क्रिसमस भी.''

### शाहनवाज भी बंधे इंटरफेथ बंधन में

सुशील मोदी भाजपा के नेता हैं. इसलिए उनकी यह इंटरफेथ शादी सहज ही लोगों को आकर्षित करती है. हालांकि उनके एक अन्य साथी भाजपा नेता शाहनवाज हुसैन ने भी इंटरफेथ शादी ही की है. वे फिलहाल बिहार सरकार में उद्योग मंत्री हैं. उनकी शादी के किस्से मीडिया में लंबे समय से प्रचलित हैं. उनकी शादी के 27 साल बीत गए हैं, मगर शाहनवाज

**पुराने प्रेमी**
शाहनवाज और रेणु हुसैन की मौजूदा तसवीरों में भी मुहब्बत झलकती है

हुसैन और रेणु हुसैन की हाल की तसवीरों में भी वह मुहब्बत झलकती है, जो उनकी इस इंटरफेथ शादी की बुनियाद है.

''अब तो 27 साल बीत गए. हमारे बच्चे भी बड़े हो गए. अब हमारी लव स्टोरी कितना छापिएगा. बच्चे कहेंगे कि मम्मी-पापा अभी भी स्पेस नहीं छोड़ रहे.'' शाहनवाज की निश्छल हंसी में साफ उनकी इश्क अब तक साफ झलकता है. फिर वे खुद बताने लगते हैं, ''रेणु जी स्कूल में पढ़ाती थीं. वे जिस बस से स्कूल जाती थीं, उसी से हम भी जाते थे. एक दिन बस में भीड़ थी, उन्हें सीट नहीं मिली तो हमने सीट छोड़ दिया. दूसरे दिन फिर ऐसा ही हुआ. फिर तो हमारी दोस्ती हो गई. बिल्कुल फिल्मी है, हमारी लव स्टोरी. एक रोज बैडमिंटन खेलते वक्त हमारे अंगूठे से खून निकलने लगा तो वहां खड़ी रेणु जी अपना दुपट्टा फाड़ कर मेरे अंगूठे को बांध दिया. फिर प्यार तो होना ही था.''

वे कहते हैं, ''तब मंदिर आंदोलन का दौर था. मैं भाजपा के युवा मोर्चा का पदाधिकारी था. मैं सुन्नी सैयद था और वे ब्राह्मण थीं. रेणु शर्मा उनका नाम था. शादी कैसे हो, दोनों परिवार राजी नहीं था. बड़ा विरोध था. हमने भी नौ साल तक संघर्ष किया. फिर शादी हुई. हमने तो प्यार किया था, वह पुराना गीत है ना-''जब प्यार करे कोई तो देखे केवल मन.''

मगर जब यह पूछा कि शादी कैसे हुई, क्या धर्म परिवर्तन भी हुआ तो वे बोले, कुछ बातें निजी होती हैं, उन्हें निजी ही रहने दें. कहने लगे कि घर में भी शादी हुई और शादी को हमने कोर्ट में भी रजिस्टर कराया. रेणु जी का नाम वही है, बस उन्होंने शादी के बाद अपना टाइटल बदल कर हुसैन कर लिया है. वे सोशल मीडिया में खुद को रेणु हुसैन लिखती हैं. उनका अपना व्यक्तित्व है. शिक्षक हैं, कविताएं लिखती हैं. और आप लोग तो जानते ही हैं कि हमारे यहां हर तरह के त्योहार मनाए जाते हैं. मेरी शादी का मेरी राजनीति से कोई लेना-देना नहीं. यह दो निजी लोगों का फैसला है. हमरी शादी भी बहुत सादे तरीके से हुई.''

### पप्पू यादव की प्रेम कथा

शाहनवाज की तरह एक और राजनेता की इंटरफेथ लव स्टोरी मीडिया में आती रहती है. वह है पप्पू यादव और रंजीत रंजन की प्रेम कहानी. पप्पू खुद को सनातनी और आनंद मार्गी बताते हैं, ''रंजीत सिख धर्म से रिश्ता रखती हैं. दिलचस्प है कि दोनों पति-पत्नी राजनीति में भी हैं और समान रूप से सफल रहे हैं. अपनी शादी के बारे में बताते हुए पप्पू कहते हैं, मैं तो रंजीत जी से शादी करने के लिए सिख बनने को तैयार था. मगर हमारे ससुराल वालों ने ही मना कर दिया, कहा नहीं, जो जैसे हैं, वैसे ही रहें.'' वे कहते हैं, हमारी शादी आनंद मार्गी विधि से भी हुई और पूर्णिया गुरुद्वारे में भी. वे खास तौर पर जोर देकर कहते हैं, ''हिंदू विधि से नहीं हुई. आनंद मार्गी विधि में 15 से 20 मिनट में शादी हो जाती है. गुरुद्वारे में भी बहुत वक्त नहीं लगता.''

उनकी शादी पूर्णिया के कॉलेज मैदान में हुई. पप्पू बताते हैं कि 1994 में हुई उस शादी में लालू यादव, देवीलाल जैसे बड़े नेता और कई राज्यों के मुख्यमंत्री आए थे. काफी भीड़ हुई थी. दो और बड़े नेताओं राज्य के पूर्व वित्त मंत्री अब्दुल बारी सिद्दीकी और कदवा के कांग्रेस विधायक डॉ. शकील अहमद खान ने भी इंटरफेथ शादी की है. मगर वे दोनों इस मौके पर अपनी शादी का जिक्र करने से बच रहे हैं. अब्दुल बारी सिद्दीकी ने कहा कि फिलहाल इस मौके पर रहने दें. वहीं डॉ शकील अहमद खान की पत्नी चंद्रकांता जी ने इसे निजी पसंद बताते हुए कहा कि हर कोई अपने हिसाब के फैसले लेने के लिए स्वतंत्र है. राजद से जुड़े साहित्यकार और विचारक प्रेम कुमार मणि इस मसले पर कहते हैं कि सबसे पहले तेजस्वी की इस शादी को एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जाना चाहिए और यह इस बात का प्रतीक है कि बाहर से सोया हुआ दिखने वाला बिहार अंदर से कितना प्रगतिशील है. इस शादी के बाद यह बड़ी रोचक बात हुई कि कहीं से किसी ने इस शादी का विरोध नहीं किया. धर्म, नाम और टाइटल बदलने की बात पर वे कहते हैं, रेचल का धर्म परिवर्तन हुआ है या नहीं यह उन्हें नहीं मालूम, अगर हुआ भी हो तो यह उनके व्यक्तिगत पसंद का मसला है. नाम बदलने के मसले को भी बहुत तूल नहीं दिया जाना चाहिए.. यह संभवत: इसलिए हुआ ■

सभी फोटो: बंदीप सिंह

**कीमती टीके**

कृष्ण एल्ला और
अदार पूनावाला

कृष्ण एल्ला और अदार पूनावाला

# वैक्सीन के सूरमा

**कोविड वैक्सीन के निर्माता भारत बायोटेक के कृष्ण एल्ला और सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के अदार पूनावाला ने अपनी असाधारण दूरदर्शिता, पहल और हिम्मत से भारत को स्वास्थ्य के मोर्चे पर एक भयंकर तबाही से बचने में मदद की. वे *इंडिया टुडे* के 2021 के सुर्खियों के सरताज हैं**

**राज चेंगप्पा**

दो एक दूसरे से काफी अलहदा शख्सियतें हैं. 52 वर्षीय कृष्ण एल्ला तमिलनाडु के किसान के बेटे हैं. वे खुद भी किसान बनना चाहते थे. उनके पिता ने कहा कि डिग्री लेकर कुछ दूसरे हुनर हासिल करना उनके लिए बेहतर होगा. तो एल्ला ने पहले एक बहुराष्ट्रीय कीटनाशक कंपनी में काम किया. फिर अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी से उन्हें प्लांट पैथोलॉजी या पौध रोग विज्ञान में मास्टर्स डिग्री के लिए फेलोशिप मिल गई. इस विषय में पीएचडी करने के बाद वे मॉलीक्यूलर बायोलॉजी के क्षेत्र में आ गए और उन्होंने डीएनए के स्तर पर कोशिकाओं का विशेष अध्ययन किया. यहीं से वैक्सीनोलॉजी या टीका विज्ञान में उनकी दिलचस्पी पैदा हुई. 1996 में जब उनकी पत्नी सुचेता भारत लौटने को बहुत उत्सुक थीं, उन्होंने हैदराबाद में एक फर्म स्थापित करने का फैसला किया, जो मुख्य रूप से बच्चों की बीमारियों के लिए सुरक्षित और सस्ते टीकों पर अनुसंधान और उनका निर्माण करे. इस तरह भारत बायोटेक इंटरनेशनल लिमिटेड (बीबीआइएल) का जन्म हुआ. एल्ला ने कड़ी मेहनत से अपने को प्रतिष्ठित आला नवोन्मेषक के तौर पर स्थापित किया.

दूसरी तरफ, 40 वर्षीय अदार पूनावाला अत्यंत संपन्न परिवार में जन्मे. शुरुआती उम्र से उनके पास कहीं भी आने-जाने के लिए महंगी और आलीशान कारों का बेड़ा

था. उनके पिता सायरस पूनावाला ने पुणे में रेसहॉर्स ब्रीडर के तौर पर करियर शुरू किया. 1966 में उन्होंने कम खर्च में वैक्सीन बनाने के लिए सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआइआइ) की स्थापना की और बढ़ाते-बढ़ाते इसे दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीन निर्माता बना दिया. 2001 में अदार भी कारोबार से जुड़ गए. इंग्लैंड के एक प्राइवेट स्कूल से पढ़ाई पूरी करने के बाद यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टमिंस्टर से बिजनेस मैनेजमेंट की डिग्री वे ले ही चुके थे. 2011 में सीईओ के ओहदे से उनका राजतिलक हुआ और बीते दशक में उन्होंने कारोबार 140 देशों में फैलाया. 2019-20 में एसआइआइ के 5,200 करोड़ रुपए के राजस्व का 85 फीसद विदेशी बाजार से आया.

महामारी के हमले से पहले अदार पूनावाला अपनी तड़क-भड़क से भरी जीवनशैली की वजह से खबरों में ज्यादा थे. इसमें रोल्स रॉयस फैंटम ड्राइव करते हुए काम पर जाना और पुराने ए 320 एयरक्राफ्ट को पुणे के बाहरी छोर पर एसआइआइ की नई मैन्युफैक्चरिंग सुविधा के अपने कॉर्पोरेट कैंप ऑफिस में बदलना शामिल है. कारोबार में व्यस्त न हों तो वे लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से ग्रेजुएट और फैशनपरस्त पत्नी नताशा के साथ पुणे, मुंबई और लंदन के बीच उड़ते हुए समाज के प्रतिष्ठित लोगों के साथ पींगे बढ़ाते रहते हैं. इससे बिल्कुल उलट एल्ला टोयोटा इनोवा या टाटा हेक्सा ड्राइव करते हुए काम पर जाते हैं, अपनी मध्यमवर्गीय जड़ों से जुड़े हैं और आलीशान जिंदगी से परहेज करते हैं. शोध-अनुसंधान में दिलचस्पी ही उनका जुनून है. हां, वे कुछ हद तक खाने के शौकीन हैं. उन्होंने अपने ब्रांड के मसाले और अखरोट-बादाम आदि की मैन्युफैक्चरिंग में भी कारोबार फैलाया है. इसमें वे क्रायोजेनिक ग्राइंडिंग सहित नफीस टेक्नोलॉजी का प्रयोग करते हैं, ताकि उनका असल स्वाद-गंध बना रहे और निर्यात के लिए कड़े सुरक्षा मानकों का पालन पक्का किया जा सके.

मार्च 2020 में जब भारत में महामारी का प्रकोप फूटा, एल्ला और पूनावाला दोनों ने पाया कि देश ऐसे टीकों के विकास और निर्माण की बेतहाशा खोज में था जो कोविड-19 (कोरोनावायरस डिजीज-19) से लड़ सकें और स्वास्थ्य पर इसके विनाशकारी प्रभावों को कम कर सकें, और यह भी कि वे इस अभियान के मोर्चे पर सबसे आगे हैं. एसआइआइ और बीबीआइएल की मदद से भारत, जिसने 2021 की शुरुआत में अपना टीकाकरण कार्यक्रम शुरू किया, 27 दिसंबर तक अपनी वयस्क आबादी को टीकों की रिकॉर्ड 1.4 अरब खुराक लगा सका. ऐसा करते हुए कृष्ण एल्ला और अदार पूनावाला कोविड-19 को पछाड़ने की लड़ाई के नायक बनकर उभरे. भारतीयों को कुछ अधिक सुरक्षित महसूस करवाने और जिंदगियां बचाने के लिए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई. नीति आयोग के सदस्य और नेशनल एक्सपर्ट ग्रुप ऑन वैक्सीन एडमिनिस्ट्रेशन फॉर कोविड-19 (एनईजीवीएसी) के अध्यक्ष डॉ. वी.के. पॉल कहते हैं, ''अपनी मिली-जुली कोशिशों से उन्होंने स्वास्थ्य की एक बड़ी विपदा टालने में मदद की और दुनिया को दिखा दिया कि भारत के पास भी दुनिया के सर्वोच्च मानकों पर खरी उतरने वाली कोविड-19 के टीके बनाने की अकादेमिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षमता और गहराई है.''

यह मामूली उपलब्धि नहीं है. महामारी की पहली लहर ने जब देश पर धावा बोला, पॉल ने अप्रैल 2020 में *इंडिया टुडे* से कहा था, ''इस महामारी से पार पाने का खराब तरीका यह है कि बहुत सारे लोगों को वायरस से संक्रमित होने दें और इस तरह हर्ड इम्युनिटी हासिल करें. जिंदगी और सेहत के लिहाज से यह भारी कीमत होगी. इस संकट से पार पाने का अच्छा तरीका यह है कि वायरस के खिलाफ टीके विकसित करें.'' यह कहना जितना आसान था, करना नहीं. तजुर्बा तो यही कहता था कि असरदार वैक्सीन विकसित करने में पांच से 10 साल के बीच वक्त लगेगा. कोविड-19 ने दुनिया को उसी तरह तार-तार कर देने का खतरा पैदा कर दिया था जैसे एक सदी पहले स्पैनिश फ्लू ने किया था. अगर यह वायरस बना और विकसित हुआ था, तो बगैर देरी किए इसका मुकाबला करने के लिए भारत और दुनिया भर में फटाफट अनुसंधान और विकास भी तो हुए. यहीं एल्ला और अदार तस्वीर में आते हैं.

**1.4**
**अरब**
**अब तक भारत में वयस्कों की आबादी को कोविड के इतने टीके लगाए जा चुके हैं***
*28 दिसंबर 2021 तक

एल्ला एक तरह से भविष्यदर्शी थे. महामारी के हमले से पहले दिसंबर 2019 में ही उन्होंने बेंगलूरू में एक व्याख्यान देते हुए ऐसे एक वायरस के खतरों से आगाह किया था और तैयारी की जरूरत बताई थी. उन्होंने जीका और चिकनगुनिया की मिनी-महामारियों के खिलाफ टीके विकसित करने पर काम किया था और दूरदर्शिता का परिचय देते हुए अपनी इकाई में ऐसी एक संभावना के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर बना लिया था. इसमें खतरनाक वायरसों के खिलाफ वैक्सीन विकसित करने के लिए दुनिया भर में मौजूद अव्वल दर्जे की बायोसेफ्टी लेवल (बीएसएल) प्रयोगशालाओं में से एक और बड़ी तादाद में उनके उत्पादन के लिए जरूरी मैन्युफैक्चरिंग क्षमता स्थापित करना भी था.

लिहाजा 11 मार्च 2020 को डब्ल्यूएचओ ने जब सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम-कोरोनावायरस-2 (सार्स-कोव-2) या संक्षेप में कोविड-19 को वैश्विक महामारी घोषित किया, तो एल्ला ने तय किया कि वे इससे लड़ने के लिए स्वदेशी वैक्सीन के विकास और उसके निर्माण की जिम्मेदारी उठाएंगे. एल्ला कहते हैं, ''मेरे लिए यह भारत के एटमी शक्ति हासिल करने वाले लम्हे के बराबर था. पहले केवल शक्तिशाली देशों के पास ही एटम बम बनाने की परिष्कृत टेक्नोलॉजी थी, पर भारत ने दिखा दिया कि हम भी स्वदेशी तरीके से बना सकते हैं. मैंने देखा कि यह आंत्रेप्रेन्योर की नई पीढ़ी के लिए ऐसा ही मौका है जब भारत टीकों के क्षेत्र में दुनिया का अगुआ बन सकता है.''

पूनावाला ने महामारी से पैदा चुनौती को कुछ अलहदा ढंग से देखा. वे कहते हैं, ''हमारे सामने दो विकल्प थे. या तो मैन्युफैक्चरर होने के नाते बैठे-बैठे इंतजार करें कि नई टेक्नोलॉजी आएगी और अपने को साबित करेगी या ऑक्सफोर्ड, नोवावैक्स और ऐसे ही

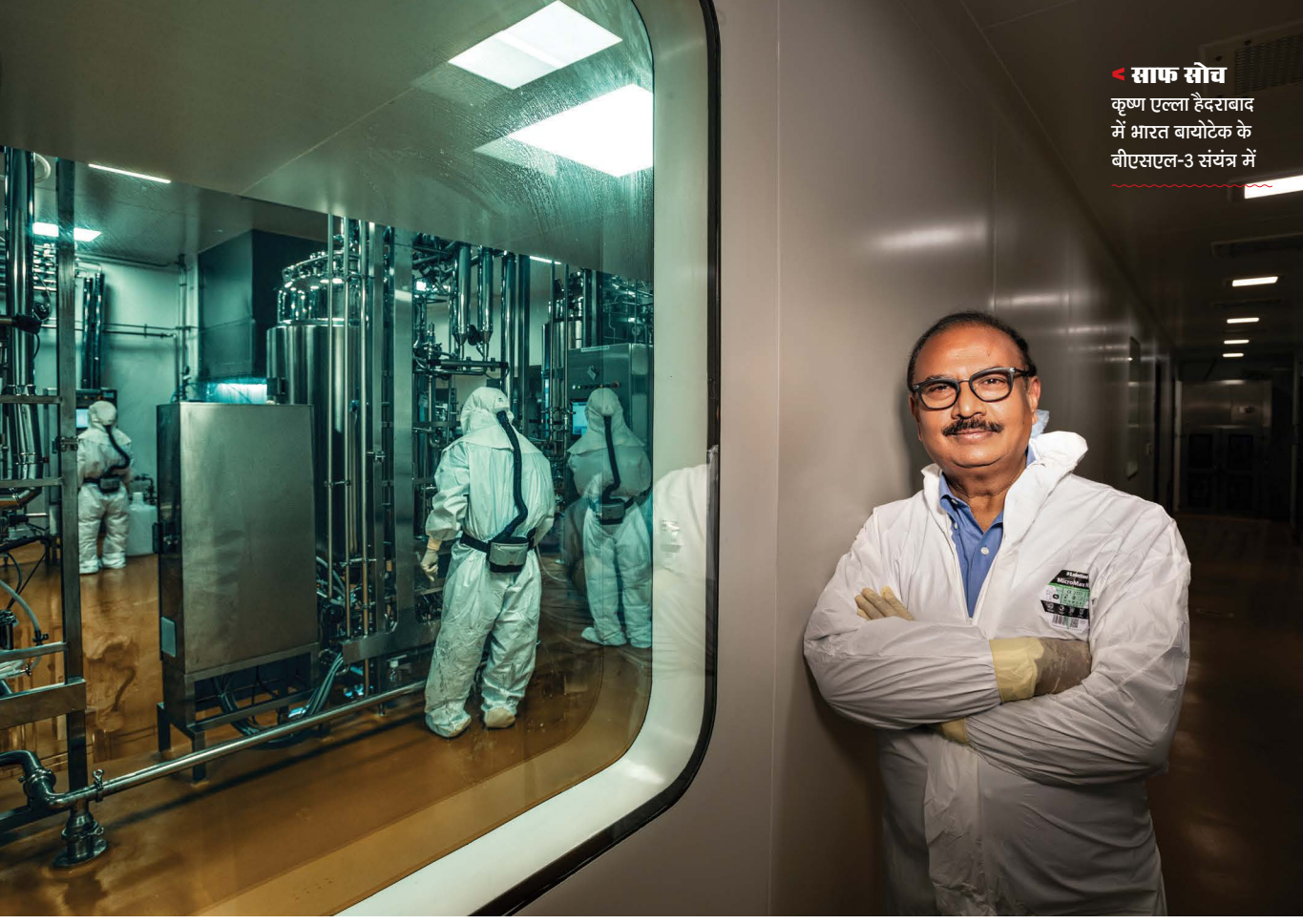

**< साफ सोच**
कृष्ण एल्ला हैदराबाद में भारत बायोटेक के बीएसएल-3 संयंत्र में

बहुत-से दूसरे नवोन्मेषी और अकादेमिक समुदायों के साथ काम करते हुए वैक्सीन विकसित करें और बड़ी तादाद में उत्पादन की सुविधाएं खड़ी करें. दूसरा विकल्प जोखिम और चुनौतियां लेकर आया. हमें उत्पादन संयंत्रों के विस्तार के लिए करीब 1 अरब डॉलर पूंजी उगाहनी पड़ी, फिर वैक्सीन बनाने की इजाजतें लेनी पड़ीं. उसके बाद बड़ी तादाद में सप्लाइ. पर हमने तय किया कि तेजी से काम करना जरूरी है और इस दिशा में चल पड़े.''

एल्ला की तरह पूनावाला ने भी महामारी सरीखी स्थिति के अंदेशे में अपनी फर्म को तैयार करने के लिए वह किया जिसे वे ''भविष्य की योजना बनाना'' कहते हैं. 2011 में सीईओ के तौर पर कमान संभालने के बाद से ही उन्होंने कई सारी नई वैक्सीन के लिए सीरम की सुविधाओं का विस्तार किया था. इसमें बहुत रफ्तार से बड़ी तादाद में वैक्सीन बनाने के लिए विशेष उपकरणों की स्थापना करना भी था. उन्हें अंदाजा हो गया कि जरूरत की कोई भी नई वैक्सीन बनाने के लिए वे तेजी से इन मशीनों में फेरबदल कर पाएंगे. मलेरिया की वैक्सीन बनाने के लिए ब्रिटिश-स्वीडिश फार्मा फर्म एस्ट्राजेनेका के साथ उनकी कंपनी पहले से ही काम कर रही थी. एस्ट्राजेनेका ने जब कोविड-19 की वैक्सीन विकसित करने को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के साथ हाथ मिलाया, तो पूनावाला कहते हैं, ''यह साफ था कि वे हमारे पहले पार्टनर होने चाहिए.'' इस तरह कोविशील्ड का जन्म हुआ.

मगर एल्ला और पूनावाला दोनों ने ही शुरुआत में उन्हीं वैक्सीनों में निवेश किया, जिन्हें बनाने के लिए जीन-आधारित नई टेक्नोलॉजी का नहीं बल्कि पारंपरिक और स्थापित टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया गया था. 18वीं सदी में एडवर्ड जेनर के चेचक की वैक्सीन का आविष्कार करने के बाद से ही वैज्ञानिक उनकी तकनीक का इस्तेमाल करते आए हैं. इसमें वैक्सीन विकसित करने के लिए रोग के वाहक वायरस के निष्क्रिय कर दिए गए रूपों को इंजेक्ट किया जाता है और फिर यह वैक्सीन उसी वायरस के खिलाफ रोग प्रतिरोधक क्षमता देती है. अगर किसी व्यक्ति में 'मारे गए' या निष्क्रिय कर दिए गए वायरस का छोटा-सा अंश इंजेक्ट किया जाता है या वह निगल लेता है, तो उस व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता उसके खिलाफ प्रतिक्रिया करके ऐंटीबॉडी विकसित कर लेगी. लिहाजा जब वह व्यक्ति असली वायरस के संपर्क में आएगा, तो उसके भीतर पहले ही विकसित ये ऐंटीबॉडी घुसपैठिये पर हमला कर उसे बेअसर कर देंगे.

ज्यादा बोझिल और जटिल होने के बावजूद एल्ला ने मृत या निष्क्रिय वायरस का रास्ता चुना, क्योंकि इसी तकनीक के जरिए वे पीलिया, डायरिया और तपेदिक के खिलाफ वैक्सीन विकसित कर चुके थे. उन्हें अंदाजा था कि ऊंचे दांव को देखते हुए खासकर सुरक्षा नियमों के मामले में जरा-सी भी चूक या नाकामी का नतीजा उनकी फर्म के खिलाफ व्यापक मुकदमेबाजी में हो सकता है. इसीलिए अपने दम पर वैक्सीन विकसित करने के बजाए उन्होंने केंद्र सरकार की संस्था के साथ मिलकर वैक्सीन बनाने का रास्ता चुना. एल्ला राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान (एनआइवी) के पास गए, जो भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के तहत आने वाली प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्था है. उसकी वजह, ''हम जिंदा वायरस पर काम कर रहे थे. यह बेहद संक्रामक था. इसके साथ काम करना हमारे कर्मचारियों के लिए भी खतरनाक था. मैं सरकार को भागीदार बनाना चाहता था, ताकि हम सब कुछ पारदर्शी तरीके से कर सकें. वैक्सीन की सुरक्षा, प्रभाव और खुराक के बारे में परीक्षण करने के लिए एनआइवी के पास परिष्कृत सुविधाएं थीं. मैंने इस पब्लिक-प्राइवेट भागीदारी की अहमियत समझी, जो भारत को वैश्विक मौजूदगी दे सकती थी.''

एनआइवी में उनकी साहसी डायरेक्टर प्रिया अब्राहम इंतजार ही कर रही थीं. दिसंबर 2019 में जब चर्चा फैलने लगी कि चीन के वुहान में एक नए किस्म के न्यूमोनिया का प्रकोप फैल रहा है, तो अब्राहम कहती हैं, ''हमारे ऐंटीना पहले ही हिलने लगे''. वे चिंतित थीं कि वायरस जल्द भारत आ सकता है. जनवरी का पहला हफ्ता आते-आते एनआइवी के राष्ट्रीय इंफ्लुएंजा केंद्र ने वायरस का पता लगाने की खातिर रिवर्स ट्रांस्क्रिप्ट पॉलीमरेस चेन रिएक्शन (आरटी-पीसीआर) टेस्ट करने के

**v प्राणों की रक्षा**
अदार पूनावाला पुणे में एसआइआइ के मुख्यालय में

**पूनावाला ने वैक्सीन के मनुष्यों पर होने वाले क्लीनिकल ट्रायल के नतीजे आने से पहले ही कोविशील्ड की करोड़ों खुराक जमा करके भारी वित्तीय जोखिम उठाया था, जिसका उन्हें लाभ मिला**

लिए जरूरी प्राथमिक चीजें हासिल करना शुरू कर दिया. 29 जनवरी को जब अब्राहम दिल्ली की यात्रा पर थीं, पुणे से उनके साथी ने फोन करके बताया कि उन्हें भारत में पहला पॉजिटिव मामला मिला है. प्रिया उलटे पैर पुणे भागीं. उन्होंने नतीजे की तस्दीक के लिए अपनी एक अन्य प्रयोगशाला से उस नमूने की दोबारा जांच करवाने का फैसला किया.

बाद में जब अब्राहम ने कोविड-19 की तस्वीर देखी, उन्होंने कहा, ''यह खूबसूरत वायरस की तरह दिखता था. इस पर कांटे थे जो सूर्य की किरणों की तरह या मुकुट के उभारों की तरह निकले और खूबसूरती से व्यवस्थित थे... दिखने में यह क्लासिक कोरोना वायरस था.'' एनआइवी के पास बीएसएल लेवल 4 है, इसलिए वे दुनिया की पहली संस्थाओं में थे जिन्होंने वायरस के अल्फा रूप को अलग किया, उसकी जीनोम संरचना के गूढ़ अर्थों को समझा और अपनी प्रयोगशाला में उसे कृत्रिम ढंग से उगाया. यही वक्त था जब एल्ला ने आइसीएमआर के महानिदेशक बलराम भार्गव से औपचारिक दरख्वास्त की कि एनआइवी को स्वदेशी वैक्सीन के विकास के लिए बीबीआइएल के साथ मिलकर काम करने की इजाजत दें.

उधर भार्गव और उनकी टीम दुनिया भर के संभावित वैक्सीन उम्मीदवारों का सर्वे कर चुकी थी. मॉडर्ना, फाइजर और जॉनसन ऐंड जॉनसन सरीखी बहुराष्ट्रीय दवा कंपनियां अपेक्षाकृत नई जीन टेक्नोलॉजी से वैक्सीन बनाने के ऊंचे पायदान पर थीं. मगर इनके साथ सीमित उत्पादन की समस्या तो थी ही, इनमें से कई वैक्सीन को शून्य से नीचे 70 डिग्री की महंगी कोल्ड चेन में रखना जरूरी था. इससे भारत के स्वास्थ्य ढांचे पर भारी दबाव आ जाता. वहीं निष्क्रिय वायरस का इस्तेमाल करके पारंपरिक तरीके से बनी वैक्सीन रखने और लाने-ले जाने के लिए केवल सामान्य रेफ्रिजरेटर की जरूरत थी. बीबीआइएल की योजना ऐसी ही वैक्सीन बनाने की थी. भार्गव ने तय किया कि बीबीआइएल के साथ मिलकर वैक्सीन बनाना ही सबसे अच्छा होगा. तो अप्रैल 2020 में आइसीएमआर ने बीबीआइएल के साथ एक सहमति पत्र (एमओयू) पर दस्तखत किए. इसके मुताबिक बौद्धिक संपदा अधिकार दोनों ने साझा किए और कोविड वैक्सीन की बिक्री से बीबीआइएल को मिलने वाले राजस्व का पांच फीसद आइसीएमआर को दिया गया. कोवैक्सीन का जन्म हो चुका था.

हाल में आई अपनी किताब *गोइंग वायरल* में भार्गव ने कोवैक्सीन के विकास का अत्यंत रोचक वृत्तांत पेश किया है. अपने फैसले की वजह बताते हुए वे लिखते हैं, ''अपने दम पर कोविड-19 की वैक्सीन विकसित करना बेहद आकर्षक था, क्योंकि इससे आयात का खर्च और विदेशी सप्लायर या सरकारों पर निर्भरता दोनों से बचते. भारत दुनिया की फार्मेसी के तौर पर जाना जाता था, पर उसके पास पूर्णत: देश में बने उत्पाद ज्यादा नहीं थे. यह दुनिया को दिखाने का मौका था कि पूरी तरह घरेलू विशेषज्ञता से विकसित अत्याधुनिक उत्पाद लेकर आने की क्षमता भारत में है. हम जानें बचाना चाहते थे और देश को गौरवान्वित करना चाहते थे.'' अंत में वे दोनों ही कर सके.

आइसीएमआर के साथ हाथ मिलाने के बाद बीबीआइएल ने वैक्सीन विकसित करने की प्रक्रिया शुरू की. देश में लॉकडाउन लगा था. कोविड-19 वायरस से भरी एक नन्ही-सी शीशी एनआइवी के पुणे मुख्यालय से 600 किमी दूर हैदराबाद ले जाना चुनौती साबित हुआ. संबंधित राज्य पुलिस से इस कंसाइनमेंट के लिए रास्ते की अनुमति देने का आग्रह किया गया. बीबीआइएल के तकनीशियन रास्ते में कोई रेस्तरां खुला न होने से ढेर सारा खाना लेकर एक कार में निकले, कोविड-19 वायरस की नन्ही-सी शीशी ली, उसे सीलबंद रेफ्रिजरेटेड बॉक्स में रखा और उसी रात बारी-बारी से गाड़ी चलाते हुए लौट आए. फिर बीबीआइएल की बीएसएल प्रयोगशाला में विशाल 1,000 लीटर के फर्मेंटरों में वायरस को मल्टीप्लाइ करने की प्रक्रिया शुरू हुई. यह कड़ाई से नियंत्रित और ज्यादातर स्वचालित प्रक्रिया थी. इसमें विकसित किए गए वायरस को रासायनिक उपचार से गुजारा जाता है. उसके उस आरएनए प्रोटीन पर हमला किया जाता है जिसके जरिए वह मानव कोशिका से चिपकता और तेजी से प्रजनन करके संख्या बढ़ाता है. वायरस की दूसरी तमाम संरचनाओं को नष्ट किए बगैर ऐसा किया जाता है. इसी की बदौलत टीके लगने के बाद व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक प्रणाली इसके खिलाफ ऐंटीबॉडी विकसित कर पाती है.

कोवैक्सीन को इस्तेमाल के लिए जारी करने से पहले इसे अभी पशुओं पर पूर्व-नैदानिक परीक्षण और इनसानों पर नैदानिक परीक्षणों के तीन चरणों से गुजरना था. इसकी निगरानी भारत के दवा नियंत्रक की ओर से गठित एक स्वतंत्र समिति करती है. चूहे और खरगोश सरीखे छोटे जानवरों पर कोवैक्सीन

के प्रभाव के परीक्षण में एनआइवी की विशेषज्ञता बेशकीमती साबित हुई. चूंकि यह जानलेवा वायरस था, इसलिए एनआइवी चुनी हुई वैक्सीन का परीक्षण बंदर पर करने को उत्सुक थी, क्योंकि वे परीक्षण के विषय के रूप में इनसानों के सबसे नजदीक आते हैं. वैसे तो उन्हें शहरों से पकड़ा जा सकता था जहां वे झुंड के झुंड घूमते हैं, पर लॉकडाउन की वजह से बंदर नजदीकी जंगलों में चले गए थे. तो एनआइवी को वन संरक्षकों के संपर्क करके उन्हें पकड़ने के लिए जरूरी इजाजत लेनी पड़ी. 22 बंदर चार समूहों में बांटे गए. एक समूह को प्लैसीबो (प्रायोगिक दवा) दी गई और तीन अन्य को वैक्सीन के तीन अलग-अलग रूप दिए गए. दो हफ्ते बाद चारों समूहों को जिंदा वायरसों के बीच रखा गया और उनकी प्रतिक्रिया की निगरानी की गई. पता चला कि कोवैक्सीन ने पर्याप्त रोग प्रतिरोधक क्षमता पैदा कर दी थी.

उधर विदेश में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी और एस्ट्राजेनेका से विकसित वैक्सीन के इनसानों पर नैदानिक परीक्षण चल रहे थे. पूनावाला ने उनके नतीजों का अब और इंतजार नहीं करने का फैसला किया. पशुओं पर पूर्व-नैदानिक परीक्षणों से जब पता चल गया कि वैक्सीन असरदार है, तो उन्होंने साहसी फैसला लेते हुए उसका फॉर्मूला हासिल किया और अपनी फैक्ट्री में लाखों कोविशील्ड बनाकर जमा करके रखने का वित्तीय जोखिम उठाया. कोविशील्ड आम सर्दी-जुकाम के वायरस (एडीनोवायरस) के कमजोर बनाए गए रूप पर आधारित वायरल वेक्टर का इस्तेमाल करती है. एडीनोवायरस चिंपांजी में संक्रमण पैदा करता है और इसमें उसी बेहद अहम कांटेदार प्रोटीन का जेनेटिक पदार्थ होता है जो कोविड-19 वायरस में पाया गया है. पूनावाला भारत में नैदानिक परीक्षण की इजाजत लेने के लिए भारत के दवा नियंत्रक के पास तकरीबन उसी वक्त पहुंचे, जब कोवैक्सीन ने ऐसा करने की इजाजत मांगी थी. मानव नैदानिक परीक्षण के तीन चरण होते हैं. पहले चरण में थोड़े-से लोगों को वैक्सीन दी जाती है, यह देखने के लिए यह सुरक्षित है या नहीं और इसकी कोई प्रतिकूल प्रतिक्रिया तो नहीं होती. पहले चरण में उत्तीर्ण होने पर इसकी रोग प्रतिरोधक प्रतिक्रिया को समझने के लिए दूसरे चरण में इसे वालेंटियर के ज्यादा बड़े समूह में इंजेक्ट किया जाता है. दूसरा चरण भी सफल रहा, तो लोगों के और ज्यादा बड़े समूह (कोवैक्सीन के मामले में 26,000) को रैंडम ढंग से वैक्सीन लगाई जाती या प्लसीबो दिया जाता है और मूल्यांकन किया जाता है कि वैक्सीन कितनी अच्छी तरह इन लोगों की सुरक्षा कर पाती है.

आम तौर पर इन परीक्षणों में कई साल लगते हैं और तब कहीं जाकर वैक्सीन को इस्तेमाल की मंजूरी मिलती है. मगर यहां केंद्र सरकार आगे आई और उसने नियम की कड़ाई और ईमानदारी से समझौता

ग्राफिक: तन्मय चक्रवर्ती

## खुराकें एक अरब से ज्यादा

25 दिसंबर तक वयस्क आबादी में से जितने % को टीका लगा

**पहली खुराक**
**84,10,75,116**
**87%** टीकाकरण योग्य आबादी का

**दूसरी खुराक**
**58,92,06,643**
**55%** टीकाकरण योग्य आबादी का

28 दिसंबर, 2021 तक

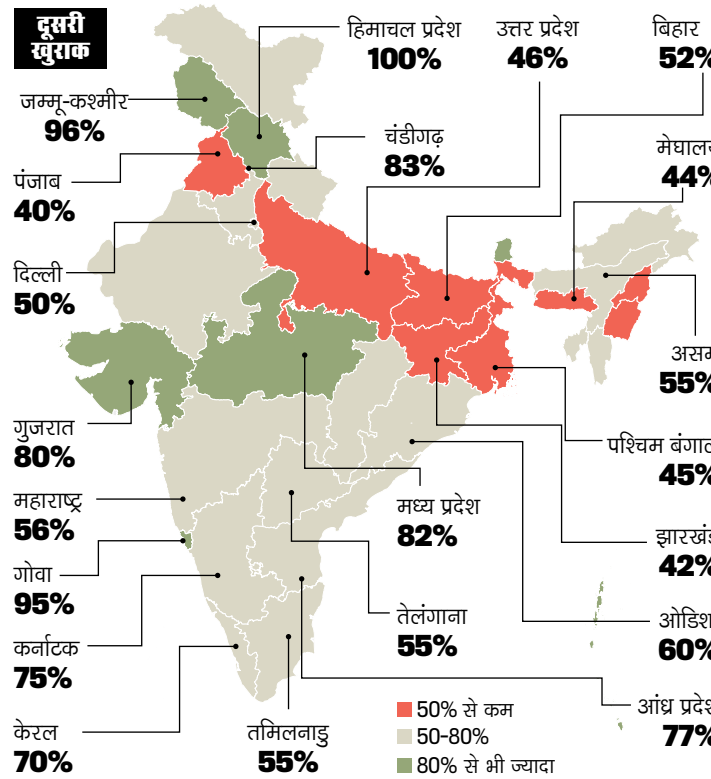


## तेजी से जो बढ़े आगे

28 दिसंबर तक दुनिया में जितने % योग्य वयस्क आबादी को लगा टीका

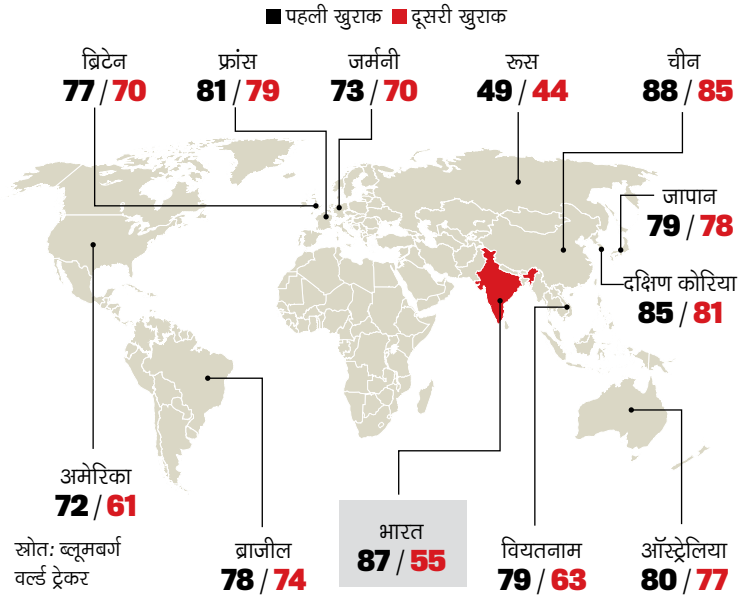


स्रोत: ब्लूमबर्ग वर्ल्ड ट्रेकर

**अनूठी मिसाल**
प्रिया अब्राहम पुणे की एनआइवी प्रयोगशाला में

**''माइक्रोस्कोप में तो कोविड बड़ा खूबसूरत-सा वायरस दिखता है. उसके स्पाइक ऐसे लगते हैं जैसे सूरज की किरणें. पर इसने खतरों से आगाह करने वाले हमारे एंटीने को खड़ा कर दिया है''**

**प्रिया अब्राहम**
*निदेशक, राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान*

**बातचीत**

# ''कोवैक्सीन का आविष्कार एटमी शक्ति हासिल करने जैसा लम्हा था''

भारत बॉयोटेक के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक **डॉ. कृष्ण एल्ला** ने टीके विकसित करने में भारत की ताकत और युवा उद्यमियों की नई सोच की आवश्यकता पर ग्रुप एडिटोरियल डायरेक्टर **राज चेंगप्पा** से बात की. उसके अंश:

**● आपने कोविड-19 वैक्सीन बनाने के लिए स्वदेशी रास्ते का फैसला क्यों किया था?**
मेरे लिए तो यह भारत के एटमी शक्ति हासिल करने जैसा लम्हा था. पहले केवल शक्तिशाली देशों के पास ही एटमी क्षमता थी. नई पीढ़ी के उद्यमियों के लिए यह साबित करना जरूरी है कि भारत अपने बूते कुछ भी कर सकता है—हम स्वदेशी जटिल टीके भी विकसित कर सकते हैं.

**● वैक्सीन विकसित करने में पांच से दस साल लगता है. आपने इसे एक साल में कैसे किया?**
रोटावायरस वैक्सीन को बनने में लगे 17 साल और टाइफाइड के टीके में 10 साल. फिर, हम एक साल में ही कोविड की वैक्सीन बनाने में कैसे सफल हुए? ऐसा इसलिए था क्योंकि यह वैश्विक आवश्यकता थी, इसलिए नियामक प्रणाली और सरकार दोनों ने सक्रिय रूप से इस पर जोर दिया. यहीं से सार्वजनिक-निजी भागीदारी की भूमिका शुरू होती है. हमारे अपने विकास के अलावा, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ

किए बगैर इस प्रक्रिया को फास्ट-ट्रैक कर दिया. बायोटेक्नॉलोजी विभाग ने तमाम वैक्सीन उम्मीदवारों के बहुत-से नैदानिक परीक्षणों को आसान और सुगम बनाया. दवा नियंत्रक ने भी पहले दो चरणों को एक में मिला दिया और डब्ल्यूएचओ से विकसित अंतरराष्ट्रीय दिशानिर्देशों के मुताबिक नतीजों का तेजी से मूल्यांकन करने के लिए समितियां बना दीं.

क्लीनिकल ट्रायल के दौरान ही एल्ला और पूनावाला दोनों को मीडिया में कठघरे में खड़ा किया जाने लगा. एल्ला याद करते हैं कि कोवैक्सीन के परीक्षणों के दौरान मध्य प्रदेश में एक वॉलंटियर की मृत्यु की खबर आई और पूरे राज्य में विरोध प्रदर्शन होने लगे. चूंकि एल्ला ने बेहतरीन मानकों का पालन करने के लिए परीक्षण की प्रक्रिया एक बाहरी बहुराष्ट्रीय कंपनी को सौंप दी थी, इसलिए उन्हें उसके नतीजों का बेसब्री से इंतजार करना पड़ा. कंपनी ने बताया कि उस वॉलंटियर को प्लैसीबो दिया गया था, न कि असल वैक्सीन. एल्ला ने राहत की सांस ली. वे इस कदर फिक्रमंद थे कि अभी जब मानव परीक्षण शुरू भी नहीं हुए थे, कोवैक्सीन लेने वाले वे पहले व्यक्ति थे ताकि यह पक्का कर सकें कि यह सुरक्षित है. उसके बाद उनके वरिष्ठ साथियों ने वैक्सीन ली. वे कहते हैं, ''यह जरूरी है कि आम जनता पर इसका परीक्षण करने से पहले हम इसे खुद ले पाएं.''

मीडिया की गहन छानबीन की वजह से पूनावाला के

**''बीबीआइएल और सीरम इंस्टीट्यूट ने एक बड़ी तबाही टालने में मदद की और दुनिया को दिखाया कि भारत विश्वस्तरीय कोविड वैक्सीन बनाने में समर्थ है''**

**डॉ. वी.के. पॉल**

*नीति आयोग के सदस्य*

लिए भी वैक्सीन के विकास और परीक्षण का दौर चुनौती भरा रहा. वे याद करते हैं, ''हमने धैर्य रखा. मुझे एक चीज प्रेरित कर रही थी कि जितने ज्यादा महीने गंवाएंगे, उतनी ज्यादा जानें जाएंगी.'' जब परीक्षण लगभग पूरे हो गए, उनके 12 साल के बेटे सायरस ने पूछा, ''कोविशील्ड वायरस के खिलाफ कारगर नहीं हुई तो क्या होगा... आप क्या करने वाले हो?'' अदार ने उससे कहा, ''मुझे कोई और नौकरी खोजनी पड़ेगी, कुछ और करना पड़ेगा.' उन्हें नई नौकरी नहीं खोजनी पड़ी, क्योंकि जनवरी 2021 आते-आते कोविशील्ड और कोवैक्सीन दोनों को भारत के दवा नियंत्रक ने आपात प्रयोग की मंजूरी दे दी. एल्ला, पूनावाला दोनों के लिए यह गर्व का क्षण था.

अब बात बस उत्पादन क्षमता बढ़ाने और गुणवत्ता बनाए रखते हुए सरकार के टीकाकरण अभियान के लिए जरूरी तादाद में वैक्सीन मुहैया करने की थी. जल्द और तेजी से सप्लाइ करने की जरूरत तब और बढ़ गई जब 2021 की गर्मियों में कोविड की दूसरी लहर ने प्रचंड वेग से देश को अपनी चपेट में ले लिया. केंद्र सरकार ज्यादा से ज्यादा वैक्सीन हासिल करने में जुट गई. आखिर उसे साल के अंत तक 94 करोड़ वयस्क आबादी में हरेक को टीके की दो खुराक लगाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य पूरा करना था. उन्होंने दोनों निर्माताओं को अग्रिम धनराशि दी. दूसरे संभावित उम्मीदवारों को वैक्सीन लाने के लिए भी प्रोत्साहित किया. इनमें जायडस

वायरोलॉजी (एनआइवी) ने गुणवत्ता नियंत्रण, मानकों और पशुओं पर प्रभावों के अध्ययनों में हमारी मदद की. मैं इस उपलब्धि के लिए अपने सभी कर्मचारियों, सरकारी मशीनरी, नियामक प्रणाली और एनआइवी को सलाम करता हूं. मेरे कर्मचारियों ने दिन-रात काम किया और उससे कामयाबी मिली.

**● अब आप कोविड-19 के लिए नाक से लेने वाली भारत की पहली वैक्सीन बना रहे हैं.**

मैं इसे केवल मजाक में 'चुंबन' वैक्सीन नहीं कहता. किसी ने नाक के जरिए अगर यह वैक्सीन ली और वह किसी कोविड संक्रमित का चुंबन लेता है तो भी संक्रमित नहीं होगा. आजकल, हम वायरस का प्रसार रोकने के लिए मास्क पहन रहे हैं. मेरी नाक का टीका वायरस को रोकने में मदद करेगा. इंजेक्शन से लगने वाले टीके गले से ऊपरी हिस्से की रक्षा नहीं कर सकते, लेकिन नाक वाले टीके से यह बचाव हो सकेगा. हमारे आंतरिक अध्ययनों में पता चला है कि जिन्होंने कोविशील्ड या कोवैक्सीन लिया है उनके लिए यह प्रभावी बूस्टर के रूप में भी काम करेगा.

**● युवा उद्यमियों को आपकी क्या सलाह है?**

मैं चाहता हूं कि युवा पीढ़ी जोखिम उठाए और आने वाली समस्याओं का समाधान करे. आप ऐसा करते हैं, तो आप सर्वश्रेष्ठ उद्यमी होंगे. दूसरी है आत्मनिर्भरता, जिसे प्रधानमंत्री मोदी 'आत्मनिर्भर भारत' कहते हैं. हमारी सफलता दूसरों के लिए प्रेरणा है और इस बात का प्रमाण है कि देश में बाधाओं के बावजूद उपलब्धियां हासिल की जा सकती हैं. तीसरी बात यह कि आगे जाकर एक जेनेरिक वैक्सीन बनानी चाहिए—जैसे कि पेंटावैलेंट वैक्सीन—जो यूनिसेफ चाहता है. चौथी बात नवाचार है. जैसे, हमने मुंह से लेने वाला रोटावायरस वैक्सीन बनाया. युवा उद्यमियों को नए काम करने की जरूरत है. केवल दूसरों की बनाई दवाओं की नकल करने से कुछ नहीं होगा.

**● आपको क्या लगता है कि भारत सरकार को मदद के लिए क्या करना चाहिए?**

हम अपनी वैक्सीन जरूरतों का ध्यान रख रहे हैं, लेकिन हमें अफ्रीका की भी मदद करनी चाहिए और अपने उत्पादन के 50 प्रतिशत टीके दे देना चाहिए. अफ्रीका में यह धारणा है कि भारतीय कंपनियां बाजारों के दोहन के लिए हैं, मदद के लिए नहीं. अफ्रीका की मदद करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है. मैं अफ्रीका के लिए हैजा के टीके पर काम कर रहा हूं. हमें सरकार से प्रोत्साहन, वित्तीय मदद, नैदानिक परीक्षणों की सुविधा और नियामक प्रक्रिया में मंजूरी मिलनी चाहिए.

**● आपको प्रेरणा कहां से मिलती है?**

मेरे लिए सांस लेना, खाना-पीना सब कुछ विज्ञान है. मेरे लिए दुनिया में विज्ञान के अलावा और कुछ नहीं है.

# "अगला दशक भारत के वैक्सीन उद्योग का स्वर्ण युग होगा"

सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे के सीईओ **अदार पूनावाला** ने अपनी कोविड वैक्सीन यात्रा और आगे की योजनाओं के बारे में ग्रुप एडिटोरियल डायरेक्टर **राज चेंगप्पा** से बातचीत की. उसके अंश:

**● सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया की सबसे खास बात क्या है?**

जब से मैंने 2011 में कार्यभार संभाला, तभी से मैं सभी टीकों के लिए समय से पहले क्षमता का निर्माण कर रहा हूं. इनमें वे नए टीके भी शामिल हैं, जिन्हें हम बाजार में उतारने जा रहे थे. कोविड संकट के दौरान यह तैयारी वास्तव में काम आई क्योंकि हम उन सुविधाओं का जल्दी से उपयोग करने, उन्हें नए सिरे से व्यवस्थित करने और जहां जरूरत हो वहां नए विशिष्ट उपकरण खरीदने में सक्षम हो सके. मैं इसे जोखिम नहीं, बल्कि भविष्य की योजना कहूंगा जिसने हमें इतनी जल्दी अधिक उत्पादन करने में सक्षम बनाया.

**● महामारी ने हमें वायरस से लड़ने के बारे में क्या सबक सिखाया?**

कामों को समय से पहले करना इस दौर में सीखे गए कुछ सबकों में शामिल है. चाहे वह क्षमता नियोजन हो या पूरे देश में वितरण, इन सबके लिए एक विशाल समन्वय और लॉजिस्टिक्स संबंधी प्रयासों की जरूरत थी. मुझे लगता है कि हमने बहुत अच्छा काम किया. हमने अपने काम में काट-छांट नहीं की और सब कुछ काफी तेजी से किया और यही मैं आने वाले वर्षों में देखना चाहता हूं. मुझे उम्मीद है कि यह रफ्तार महामारी के बाद भी जारी रहेगी. हम काम करने के उन तरीकों पर वापस नहीं जा सकते जहां हमें लाइसेंस की अनुमति हासिल करने में लंबा समय लगता था. भारत के पास अवसर हैं; दुनिया चीन के विकल्प के रूप में यहां निवेश करना चाहती है. हमें इसका फायदा उठाना चाहिए. सरकार इस पर ध्यान दे सकती है कि नीतियों को कैसे सरल बनाया जाए और अनुमतियों तथा

लाइसेंसों में सुधार कैसे किया जाए.

**● हम भारत को वैक्सीन महाशक्ति कैसे बना सकते हैं?**

यह कामयाबी हम एक तरह से पहले ही हासिल कर चुके हैं क्योंकि वैश्विक स्तर पर टीकों की कुल आपूर्ति का 60-70 प्रतिशत भारत से आता है. मूल्य श्रृंखला में ऊपर जाने के लिए हमें धन की जरूरत है ताकि हमारे पास अपना शोध और नवाचार हो. उसके लिए, आपको बढ़िया लाभ कमा सकने की आवश्यकता है. अमेरिका या यूरोप के उलट, भारत में अगर कंपनियां एक निश्चित आकार से आगे जाती हैं और लाभ कमाती हैं तो इस पर मुंह बिचकाया जाता है. लेकिन इन लाभों का उपयोग अंततः देश में क्षमता और नवाचार में पुनर्निवेश के लिए किया जाता है. मूल्य निर्धारण नीतियां, वह वातावरण जिसमें नए कारखाने लगाने की अनुमतियां और लाइसेंस तेजी से मिलें, नवाचार, फायदेमंद अनुसंधान में पुनर्निवेश और निर्यात प्रोत्साहन, वे चीजें हैं जो एक वैक्सीन महाशक्ति के रूप में हमारी स्थिति को मजबूत करेंगी. अगले 10 साल भारत के वैक्सीन उद्योग के स्वर्ण युग बनने जा रहे हैं. हमें इसका लाभ उठाना चाहिए.

**● क्या कोविशील्ड ओमिक्रॉन से बचाती है?**

ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है कि कोविशील्ड सहित जिन भी टीकों को लाइसेंस दिया गया है वे ओमिक्रॉन से आपकी रक्षा नहीं करेंगे. आंकड़े अभी आ रहे हैं. यदि ये टीके अपनी दक्षता में 40-50 प्रतिशत तक कमजोर पड़ जाते हैं, तो बूस्टर डोज के लिए जाना होगा. यह स्थिति तब तक रहेगी जब तक कि आपको वे नए टीके नहीं मिल जाते जिन पर एसआइआइ (सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया) सहित कई कंपनियां काम कर रही हैं.

**● पिछले एक साल में आपने किस तरह के दबाव का सामना किया?**

हमें पता था कि हमें रिकॉर्ड समय में काम पूरा करना होगा क्योंकि हर महीना बीतने के साथ कोविड से मौतों की संख्या बढ़ती जाएगी. मेरे दिमाग में बस यही बात थी. मेरी टीम के 8,000 लोगों ने अथक परिश्रम किया. मेरे उद्देश्यों, लक्ष्यों और रणनीतियों को लागू करने वाली टीम के बिना हम कहीं नहीं पहुंच सकते थे.

**● सीरम इंस्टीट्यूट की अगली बड़ी योजनाएं क्या हैं?**

हमारे पास कोवोवैक्स है, जिसे 3 साल तक के बच्चों के लिए चयनित टीके के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है. अगर जल्दी लाइसेंस मिल जाता है तो हम स्पुतनिक लाइट का उत्पादन करेंगे. नाक से दिया जाने वाला हमारा चौथा टीका कोडाजेनिक्स के साथ साझेदारी में विकसित किया जा रहा है. इसे तैयार होने में एक साल लग सकता है. यह सभी प्रकार के कोविड वेरिएंट के खिलाफ बेहतरीन विकल्प होगा.

कैडिला भी थी, जिसने वैक्सीन विकसित करने के लिए डीएनए स्ट्रेनों के इस्तेमाल का ज्यादा उन्नत पर बगैर आजमाया रास्ता चुना था. इसे हाल ही मंजूरी मिली है.

इस बीच दो और भारतीय कंपनियों ने वैक्सीन विकसित करने के लिए नए-नवैले तरीकों पर काम किया. बायोलॉजिकल ई लिमि ने कॉर्बिवैक्स नाम की प्रोटीन सब-यूनिट वैक्सीन विकसित करने के लिए अमेरिका की कंपनी बायलर कॉलेज मेडिसिन से हाथ मिलाया, तो जेनोवा बायोफार्मास्यूटिकल्स ने एमआरएनए वाला वही रास्ता अपनाया जिससे मॉर्डना और फाइजर ने वैक्सीन बनाईं. कॉर्बिवैक्स को आपातकालीन इस्तेमाल की मंजूरी मिल गई है जबकि जेनोवा की वैक्सीन के अंतिम परीक्षण चल रहे हैं. केंद्र सरकार मॉडर्ना, फाइजर और जॉनसन ऐंड जॉनसन सरीखी दिग्गज बहुराष्ट्रीय फार्मा कंपनियों से भी बातचीत कर रही थी, पर बात जमी नहीं. महंगे दाम और इन्फ्रास्ट्रक्चर की जरूरतों के अलावा जैसा कि केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण बताते हैं, ये कंपनियां इस बात पर भी जोर दे रही थीं कि वैक्सीन के नाकाम होने या टीके लगे लोगों को नुक्सान पहुंचने की स्थिति में भारत उन्हें उनकी जिम्मेदारियों से माफी दे. रूसी वैक्सीन स्पुतनिक बनाने की कोशिशें भी अब तक परवान नहीं चढ़ीं.

**''वैक्सीन के मामले में अब हम साल भर में ही शोध-अनुसंधान से लेकर मंजूरी और सप्लाइ की प्रक्रिया संपन्न कर सकते हैं. भविष्य के लिहाज से यह बहुत उत्साहवर्धक है''**

**राजेश भूषण**
*केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव*

नतीजा यह कि एसआइआइ और बीबीआइएल ने मिलकर जनवरी 2021 से भारत सरकार को 1.4 अरब से ज्यादा वैक्सीन सप्लाइ की हैं. इनमें एसआइआइ का हिस्सा करीब 85 फीसद है. 27 दिसंबर तक 8 3 करोड़ लोगों को पहली और 58 करोड़ लोगों को दोनों खुराक लग चुकी थी. यह भारी-भरकम काम था. इस असाधारण काम का श्रेय केंद्र और राज्य सरकारों और उनकी एजेंसियों को जाता है, जिन्होंने देश भर में वैक्सीन रखने की विशेष सुविधा और सुरक्षा मानकों के साथ टीका केंद्र स्थापित किए और यह सब तमाम परेशानियों से जूझते हुए तेज रफ्तार से किया.

केंद्र सरकार ने दोनों कंपनियों को कुल मिलाकर 23,000 करोड़ रुपए की बड़ी रकम अदा की. इससे उन्हें न केवल अपनी मौजूदा सप्लाइ को बढ़ाने बल्कि नई वैक्सीन पर काम करने का बढ़ावा मिला. बीबीआइएल अपनी नैजल यानी नाक से ली जाने वाली वैक्सीन को मंजूरी मिलने की कगार पर है. एल्ला इसे 'किस वैक्सीन (चुंबन टीका)' कहते हैं क्योंकि यह नासिका नली, मुख और श्वसन प्रणाली की रक्षा करती है, जो वायरस के हमले की चपेट में आने वाले प्रमुख कमजोर अंग हैं. भूषण मानते हैं कि यह गेम चेंजर होगी, क्योंकि इसे लगाना आसान होने की वजह से टीके की झिझक से उबरने में मदद मिल सकती है. इस बीच एसआइआइ को कोवोवैक्स के लिए मंजूरी मिल गई है. यह प्रोटीन सब-यूनिट वैक्सीन है जो इसने अमेरिकी बायोटेक कंपनी नोवोवैक्स और कोएलिशन फॉर एपिडेमिक प्रिपेअर्डनेस ऐंड इनोवेशन (सीईपीआइ) के साथ मिलकर मैन्युफैक्चर की है.

सबसे पुराने और सबसे सुरक्षित तरीके से स्वदेशी वैक्सीन बनाने में अदार पूनावाला (जिन्होंने मंजूरी से पहले ही वैक्सीन का भंडार बनाकर भारी जोखिम मोल लिया) और कृष्ण एल्ला की कामयाबी को भूषण भारत की वैक्सीन क्षमता के सचमुच वयस्क होने का संकेत मानते हैं. कोविड हमले के पहले ही भारत दुनिया की वैक्सीन राजधानी था और दुनिया की 60 फीसद से ज्यादा जरूरत पूरी करता था. भूषण कहते हैं, ''अब जब वैक्सीन के लिए आरऐंडडी (अनुसंधान और विकास) से लेकर मंजूरी और सप्लाइ तक का पूरा सफर हम एक साल में पूरा कर सकते हैं, जबकि पहले इसमें सालों लग सकते थे, तो यह भविष्य के लिए जबरदस्त उत्साह बढ़ाने वाली बात है.'' उनके लिए सबक ये हैं कि ''हमें आगे बढ़कर सक्रिय रहना और आरऐंडडी को बढ़ावा देना चाहिए, हमें अपने काम पूरा करने के मामले में मैन्युफैक्चरर पर भरोसा करना चाहिए और उन्हें वित्तीय और दूसरे तरीकों से सहारा देना चाहिए. इससे हमारे यहां मजबूत बहुराष्ट्रीय कंपनियां होंगी, जिनके मुख्यालय यूरोप या अमेरिका में नहीं, भारत में होंगे.''

फिर भी, अब जब हम देश के वयस्क टीकाकरण कार्यक्रम की सफलता का जश्न मना रहे हैं, 2022 के उदय के साथ कोविड-19 का खतरा भारत ही नहीं दुनिया भर में उतना ही ज्यादा बना हुआ है. इस वायरस ने ओमिक्रॉन की शक्ल में और भी ज्यादा संक्रामक रूप बदलकर दिखा दिया है कि वह इनसान से ज्यादा धूर्त और चालाक है. ओमिक्रॉन ने देशों को लॉकडाउन लगाने और भारत को कई शहरों में फिर रात का कर्फ्यू लगाने को मजबूर कर दिया है. फिर भी अगर वैक्सीन वायरस को परास्त नहीं कर पाई है तो भी कोविड-19 अपने कई अवतारों के बावजूद कुछ हद तक घेर लिया गया है. कोवैक्सीन और कोविशील्ड दोनों से इस वैरिएंट के खिलाफ अच्छी रोग प्रतिरोधक क्षमता मिलना साबित हुआ है. हालांकि समय के साथ यह क्षमता घट सकती है, जिससे बूस्टर खुराक लेना जरूरी हो सकता है. वायरस के नए उभार से उस अच्छे काम की अहमियत कम नहीं होती, जो एल्ला और पूनावाला की कोशिशों से मुमकिन हुआ है. 2021 में दूसरे काबिल न्यूजमेकर भी थे, जिनके बारे में आगे के पन्नों पर बताया गया है. ममता बनर्जी, जो भाजपा को धूल चटाकर तीसरी बार मुख्यमंत्री बनीं. प्रधानमंत्री मोदी, जिन्होंने अतीत की अपनी हिचकिचाहट से उबरकर बड़े निजीकरण पर जोर दिया. कई सारे बिजनेस स्टार्टअप, जिन्होंने आर्थिक तंगी में यूनिकॉर्न का दर्जा हासिल किया. नीरज चोपड़ा, जिन्होंने भारत के लिए एथलेटिक्स में पहला ओलंपिक गोल्ड मेडल और देश का दिल जीता. अक्षय कुमार और भुवन बाम, जिन्होंने अपनी निपुण अदाकारी से मनोरंजन की सुर्खियां बटोरीं. मगर उनमें से कोई भी कृष्ण एल्ला और अदार पूनावाला की उस अद्वितीय उपलब्धि को ढक नहीं सकता, जिसमें उन्होंने हाल के सालों में मानवजाति पर कहर बनकर टूटी बदतरीन आपदा के खिलाफ अपनी-अपनी वैक्सीन बनाकर हजारों जिंदगियां बचाईं और हमें ज्यादा सुरक्षित महसूस करवाया. इन्हीं कारणों से *इंडिया टुडे* ने उन्हें 2021 के सुर्खियों के सरताज करार दिया है. ■

नरेंद्र मोदी

# सुधार शिरोमणि

**पहले कार्यकाल में प्रधानमंत्री के सुधार एजेंडे पर आहिस्ता-आहिस्ता अमल हुआ. दूसरे कार्यकाल में वे भारत के आर्थिक फलक के सुधारों पर तेज रफ्तार से आगे बढ़े और 2021 में निजीकरण पर जबरदस्त जोर दिया, जिसमें श्रम कानूनों को सरल बनाने के साथ पीएसयू की परिसंपत्तियों का मौद्रीकरण भी था. अलबत्ता इन्हें कामयाबी के साथ जमीन पर उतारने की चुनौतियां कायम हैं**

श्वेता पुंज

साल 2014 में पहले कार्यकाल की शुरुआत के समय से ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुआई वाले एनडीए से बड़ी उम्मीद थी कि अपने 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम राजकाज' के नारे पर खरे उतरते हुए उसकी केंद्र सरकार बड़े सुधारों को तेजी से अंजाम देना शुरू करेगी. खासकर उन सुधारों को, जो सरकार को कारोबार करने के कारोबार से बाहर ले आएं. मगर सुधारों की घोषणा आसान है, उन्हें जमीन पर उतारना कठिन. मोदी के पहले कार्यकाल में बुनियादी बदलावों के बजाय धीमे-धीमे प्रगति ज्यादा देखी गई. इस दौरान दो बड़े नीतिगत बदलाव हुए—नोटबंदी और जीएसटी (वस्तु और सेवा कर). दोनों के अमल की आलोचना हुई. जीएसटी हालांकि नोटबंदी के मुकाबले ज्यादा फायदेमंद साबित हुआ, पर मोदी सरकार के टैक्स नेटवर्क की शुरुआत भी डांवाडोल रही.

चंद्रदीप कुमार

दूसरे कार्यकाल में मोदी तेज रफ्तार और फैसलाकुन ढंग से आगे बढ़े. कॉरपोरेट टैक्स की दरें कम करने से लेकर बैंक सुधारों और सबके लिए स्वास्थ्य बीमे तक ताबड़तोड़ ढेर सारे बदलाव कर डाले. हालांकि उन्हें अपना सबसे महत्वाकांक्षी (और विवादास्पद) सुधार—कृषि कानून—नवंबर में वापस लेना पड़ा. मगर यह 2021 का साल ही था, जब उनकी सरकार पीएसयू के निजीकरण पर पक्के इरादे से जोर देते हुए बड़े नीतिगत बदलाव लेकर आई. अलबत्ता व्यापक कृषि सुधारों के मोर्चे पर जिस तरह पीछे हटना पड़ा, उसे देखते हुए केंद्र को ट्रेड यूनियनों और विपक्ष के जबरदस्त प्रतिरोध का सामना करना पड़ सकता है. तो भी शुरुआत कर दी गई है और 2021 को मोदी की अगुआई में केंद्रीय सुधारों का अनूठा साल बना दिया गया है.

सुधारों पर सरकार के जोर का अग्रदूत 2021-22 का केंद्रीय बजट था. इसमें केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने विनिवेश, निजीकरण और परिसंपत्तियों के मौद्रीकरण की रणनीति के जरिये पीएसयू पर सरकार का शिकंजा छोड़ने की योजनाओं का ऐलान किया. केंद्र ने 2021-22 में विनिवेश के जरिये 1.75 लाख करोड़ रुपए के राजस्व का लक्ष्य रखा. इसमें सार्वजनिक क्षेत्र के दो बैंक और एक सामान्य बीमा (जनरल इंश्योरेंस) कंपनी भी थी. उसके बाद एयर इंडिया का विनिवेश जल्द पूरा करने की बारी थी. यह ऐसा काम था जिसके लिए पिछली कई सरकारें हाथ-पैर मार चुकी थीं. पीएमओ (प्रधानमंत्री कार्यालय) के अफसरों का कहना है कि इससे दूसरे विनिवेशों का सांचा बन गया. डीआइपीएएम (विनिवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग) के

सचिव तुहिन कांत पांडेय ने इस साल सीआइआइ (भारतीय उद्योग परिसंघ) के सालाना जलसे में कहा: ''देश 17 साल बाद सचमुच कोई निजीकरण होता देखेगा. आखिरी निजीकरण 2003-04 में हुआ था.''

इस साल अगस्त में केंद्र ने नेशनल मोनेटाइजेशन पाइपलाइन (एनएमपी) का भी ऐलान किया. बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की संपत्तियां बेचे बगैर निजी क्षेत्र की कंपनियों को उनके संचालन की इजाजत देकर केंद्र को अगले चार सालों में 6 लाख करोड़ रुपए हासिल होने की उम्मीद है. यह भारत के शिक्षा और स्वास्थ्य के कुल बजट के बराबर धनराशि है. इसका इस्तेमाल बुनियादी ढांचे से जुड़ी सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं में पैसा लगाने और बढ़ते राजकोषीय घाटे को पाटने में होगा. सड़क, रेलवे, बिजली पारेषण और टेलीकॉम सहित 14 सेक्टर की परियोजनाएं प्रतिस्पर्धी बोली के जरिये लंबे वक्त के लिए लीज पर दी जाएंगी. इसमें 1.6 लाख करोड़ रुपए की सड़क, 1.5 लाख करोड़ रुपए की रेलवे, 45,000 करोड़ रुपए की बिजली पारेषण से जुड़ी तथा अन्य परियोजनाएं हैं. सीआइआइ के एक आयोजन में 11 अगस्त को मोदी ने कहा, ''सरकार मजबूरी में नहीं बल्कि गहरे विश्वास से सुधार के कदम उठा रही है.'' नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार कहते हैं, ''सुधारक के तौर पर वे आमूलचूल बदलाव की दृष्टि से सोच रहे हैं.'' 2021 में मोदी का जोर ज्यादा मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था, कारोबार में सरकारी एकाधिकार कम करने और निवेश आकर्षित करने पर रहा है.

अक्तूबर में सरकार ने आयकर नियमों में एक बड़ा बदलाव अधिसूचित किया. करीब एक दशक पहले वजूद में आया रेट्रोस्पेक्टिव या पिछले प्रभाव से लगाया जाने वाला कर—जिसकी वजह से कई निवेशक बिदक गए थे—उसने आधिकारिक तौर पर खत्म कर दिया. उधर करों के युक्तिकरण की केंद्र की नीति के प्रभाव इस साल धीमे-धीमे सामने आना शुरू हुए. कॉरपोरेट प्रॉफिट टैक्स 35 फीसद से घटकर 17 फीसद पर और भारतीय कर दरें वैश्विक मानकों के बराबर आ गईं.

समयबद्ध अमल पक्का करने के लिए प्रधानमंत्री ने इस साल कई मंत्रालयों के साथ प्रगति बैठकें करके अटकी हुई परियोजनाओं की समीक्षा की. केंद्रीय मंत्रालयों के नुमाइंदे राज्य सरकारों के विभागीय प्रतिनिधियों, कार्यपालन एजेंसियों के प्रमुखों, जिला कलेक्टरों वगैरह के साथ आमने-सामने बैठे. सितंबर तक 14 लाख करोड़ रुपए की परियोजनाओं की समीक्षा की गई और उन्हें फास्ट-ट्रैक पर डाला गया.

मोदी सरकार ने एक और क्षेत्र पर ध्यान दिया. वह है श्रम कानूनों को सरल-सुगम बनाना. राजनैतिक तौर पर विवादास्पद इन सुधारों की शुरुआत इस साल अप्रैल में हुई. कुल 44 श्रम कानूनों को मिलाकर चार संहिताएं बनाई गईं. न्यूमतम वेतन से जुड़े करीब 542 अलग-अलग नियमों को सरल बनाकर 12 न्यूनतम वेतन नियम बनाए गए. नए श्रम कानून श्रम बाजार को ज्यादा छूट और लचीलापन देते हैं. वे 300 या उससे कम श्रमिकों वाले मैन्यूफैक्चरर को वाजिब हर्जाने के साथ श्रमिकों की छंटनी का अधिकार भी देते हैं. इस साल अप्रैल से नई वेतन संहिता भी लागू हो गई. मंत्रालयों को पुराने और बेकार हो चुके कानूनों की पहचान करने के निर्देश भी दिए गए, ताकि उन्हें रद्द किया जा सके.

नीति आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष और कोलंबिया यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर अरविंद पनगढ़िया कहते हैं, ''श्रम कानून सुधार 1991 से लटके थे. उस वक्त इन सुधारों के लिए विश्व बैंक बहुत उत्सुक था, पर सरकार तैयार नहीं थी.

## 2021 के बड़े सुधार

### विनिवेश

- कुछेक रणनीतिक क्षेत्रों को छोड़कर विभिन्न क्षेत्रों में सार्वजनिक उपक्रमों (पीएसयू) का विनिवेश किया जाना है
- इन रणनीतिक क्षेत्रों में सिर्फ चार सार्वजनिक उपक्रम कार्यरत रहेंगे
- एयर इंडिया का विनिवेश टाटा समूह को कर दिया गया

### संपत्तियों का मौद्रीकरण

- राष्ट्रीय मौद्रीकरण पाइपलाइन (एनएमपी) का ऐलान, 6 लाख रु. उगाहने का लक्ष्य
- एनएमपी प्रोजेक्ट में सड़क मार्गों से 1.6 लाख करोड़ रु., रेलवे से 1.5 लाख करोड़ रु., बिजली ट्रांसमिशन से 45,000 करोड़ रु. और बिजली उत्पादन से 39,832 करोड़ रु. उगाहना शामिल है

### कराधान

- कॉर्पोरेट टैक्स में कटौती पर अमल. नए मैन्यूफैक्चरर 15 फीसद टैक्स दर का लाभ हासिल कर सकते हैं
- प्रत्यक्ष कर भुगतान में मुकदमेबाजी घटाने के लिए 'विवाद से विश्वास' कार्यक्रम
- आयकर रिटर्न की तत्काल प्रक्रिया और जल्दी रिफंड के लिए ई-फाइलिंग पोर्टल
- पिछली अवधि से कराधान का प्रावधान हटाया
- कुछ प्रकरणों को आपराधिक सूची से हटाया गया: कारोबारी सहूलियत के लिए कंपनी कानून की 48 धाराओं को आपराधिक सूची से हटाया गया. बाकी 66 समझौते योग्य अपाराधों में से 23 को आंतरिक सुलह प्रक्रिया से सुलझाया जा सकेगा

### उत्पादन

- उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआइ) योजना का कई क्षेत्रों में विस्तार किया गया, जिसमें मेडिकल उपकरण, बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रानिक्स मैन्यूफैक्चरिंग और सेमीकंडक्टर शामिल हैं.

### अंतरिक्ष क्षेत्र

- केंद्र ने अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए इन-स्पेसई का गठन किया. आगे सभी कार्यक्रमों का प्रबंधन एक सिंगल विंडो स्वतंत्र एजेंसी करने वाली है.

### दूरसंचार

- एजीआर (एडजस्टेड ग्रॉस रेवन्यू) और स्पैक्ट्रम से संबंधित बकायों पर मोरेटोरियम (भुगतान के लिए वक्त दिया). एजीआर को तर्कसंगत भी बनाया-एजीआर की गणना में गैर-टेलीकॉम रेवन्यू अलग कर दिया गया.
- इस क्षेत्र में स्वाभाविक रूट से 100 फीसद एफडीआइ की अनुमति
- स्पैक्ट्रम आवंटन की अवधि 20 से 30 साल की गई
- स्पैक्ट्रम शेयरिंग पर सरकारी शुल्क हटाया गया.

यशवंत सिन्हा (पूर्व वित्त मंत्री) ने अपने बजट में श्रम सुधार रखे, पर लागू कर नहीं पाए. यूपीए ने तो इन्हें करने का दिखावा तक नहीं किया. 2015 में जब मैं प्रधानमंत्री से मिला, ढेरों चीजें जो उन्होंने बाद में कीं, उस वक्त भी उनके राडार पर थीं. इनमें बैंकों का निजीकरण भी था. उनमें गजब का धैर्य है. वे सही मौके का इंतजार करते हैं.''

इस बीच सिंगल ब्रांड रिटेल में एफडीआइ (विदेशी प्रत्यक्ष निवेश) के लिए स्थानीय स्रोतों से प्राप्ति के नियमों में ढील दी गई. प्रतिरक्षा, मल्टी-ब्रांड और बीमा को छोड़कर लगभग सभी क्षेत्रों को 100 फीसद एफडीआइ के लिए खोल दिया गया. सरकार की कोशिशों के नतीजे भी सामने आने लगे. वित्त वर्ष 2020-21 में भारत ने एफडीआइ का अब तक का सबसे ज्यादा अंतर्प्रवाह 81.7 अरब डॉलर (करीब 6.12 लाख करोड़ रुपए) दर्ज किया. करीब 42.8 अरब डॉलर (3.2 लाख करोड़ रुपए) अप्रैल से सितंबर 2021 के बीच आए. एक बड़े सरकारी अफसर कहते हैं, ''प्रधानमंत्री प्रोजेक्ट मोड में काम करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि प्रमुख परियोजनाओं को आगे बढ़ाने पर जोर देने से उससे जुड़े सभी विभाग में गति आ जाएगी.'' पीएमओ ने भी विकास पर जोर बनाए रखा. जन धन से लेकर उज्जवला और स्वच्छ भारत तक मोदी सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को मिशन मोड में लागू किया जा रहा है. आकांक्षी जिला कार्यक्रम के तहत भारत के 112 सबसे पिछड़े जिलों की सतत निगरानी की जा रही है. नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत कहते हैं, ''हमने इन जिलों को विकास के विभिन्न मानदंडों पर (अच्छी प्रगति करते) देखा है. प्रगति की निगरानी के लिए प्रधानमंत्री समय-समय पर बैठकें करते हैं. वे मानते हैं कि किसी भी योजना की कामयाबी जमीन पर उसके फलीभूत होने से तय होती है.'' कई प्रधानमंत्रियों के साथ काम कर चुके कांत कहते हैं कि उन्हें प्रतिस्पर्धी और सहकारी संघवाद की गतिशीलता दिखाई देती है. सभी मंत्रालयों ने डेटा डैशबोर्ड बनाए हैं, जिससे समीक्षाएं पारदर्शी और सबको सुलभ हो गई हैं. इससे नतीजों की माप-जोख में मदद मिली है.

2021 में केंद्रीय सुधारों के नतीजतन टेलीकॉम क्षेत्र को नई जिंदगी मिली. यह क्षेत्र बेहद मामूली मुनाफे पर काम कर रहा था और दो कंपनियों के वर्चस्व के खतरे से घिरा दिखाई देता था. नौ ढांचागत और पांच प्रक्रियागत सुधार लाए गए. इनमें 100 फीसद एफडीआइ की इजाजत, लाइसेंस की जरूरतों को सरल बनाना, स्पैक्ट्रम आवंटन की अवधि बढ़ाना तथा अन्य सुधार शामिल हैं. लाइसेंस फीस के लिए बैंक गारंटी की जरूरतों में 80 फीसद तक कटौती कर दी गई. टेलीकॉम कंपनियों को एजीआर (समायोजित सकल राजस्व) और स्पैक्ट्रम भुगतान चार साल टालने का विकल्प दिया गया. एजीआर की गणना में गैर-टेलीकॉम राजस्व जोड़ना टेलीफोन कंपनियों की दुखती रग थी. इसे भी खत्म कर दिया गया, जिससे वोडाफोन सरीखी फर्मों को मदद मिली.

पीएमओ के अफसर कहते हैं कि सुधारों और खासकर डिजिटल भुगतान, सामाजिक बुनियादी ढांचे (आवास से शौचालय तक) और बुनियादी ढांचे के निर्माण से जुड़े सुधारों को तेज रफ्तार देने में महामारी भी काम आई. बुनियादी ढांचे के निर्माण में 100 लाख करोड़ रुपए के नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर मास्टर प्लान गति शक्ति की घोषणा भी है. इंफ्रास्ट्रक्चर पर केंद्र के जोर देने का यह नया अध्याय है. कहा जाता है कि प्रधानमंत्री राज्यों की ओर से युद्ध स्तर पर इस योजना के अमल की निगरानी कर रहे हैं.

**''प्रगति की निगरानी के लिए प्रधानमंत्री समय-समय पर बैठकें करते हैं. वे मानते हैं कि किसी भी योजना की कामयाबी जमीन पर उसके फलीभूत होने से तय होती है**

अमिताभ कांत
*सीईओ, नीति आयोग*

निजीकरण की दिशा में केंद्र के महत्वाकांक्षी एजेंडे की कामयाबी अलबत्ता जोखिमों से घिरी है. विनिवेश के लक्ष्य पूरे करना कभी आसान नहीं रहा. कोटक महिंद्रा एसेट मैनेजमेंट कंपनी के एमडी नीलेश शाह कहते हैं, ''बाजार [की स्थिति] चाहे जो रही हो, विनिवेश के लक्ष्य पूरे करने में हम हमेशा नाकाम रहे. हमारा विनिवेश ऐसा है कि मूल्य खत्म हो जाता है, क्योंकि हमने बाजार विनिवेश का रास्ता चुना, जिसमें लगातार आपूर्ति से कीमतें वाजिब मूल्य से नीचे बनी रहती हैं.'' उनके मुताबिक, विनिवेश का सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि सिंगापुर की टेमासेक की तरह सरकारी मिल्कियत में पेशेवर ढंग से काम कर रही कंपनी बनाएं.

बैंकों के विराष्ट्रीयकरण के जोर पकड़ते ही श्रम संगठन मोदी के खिलाफ कमर कसने लगे. कुछ ने यह भी कहा कि निजीकरण करने से जरूरी नहीं कि मैनेजमेंट अच्छा हो जाता हो. मोदी के आलोचक यह भी आरोप लगाते हैं कि उनकी सरकार जो सुधार पेश कर रही है, उनमें से बहुतेरे चतुर मार्केटिंग के अलावा कुछ नहीं हैं. प्रधानमंत्री के बड़े सुधारक होने के नैरेटिव का जवाब देते हुए पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने एक अग्रणी दैनिक में लिखा: 'श्रम कानूनों को संहिता में बदलना पथप्रदर्शक सुधार नहीं बल्कि प्रशासनिक कार्रवाई भर है.'

मोदी के साथ काम कर रहे लोग अक्सर उनकी इन खूबियों के कसीदे पढ़ते हैं कि वे हितधारकों की बातें गौर से सुनते हैं, अमल पर ध्यान देते हैं, जवाबदेही पर जोर देते हैं और वे भी ताड़ लेते हैं जो दूसरों की नजरों से चूक जाता है. मगर उनकी नुक्ताचीनी करने वाले कहते हैं कि सुधारों से आर्थिक वृद्धि भी होनी चाहिए. प्रधानमंत्री के ज्यादातर कार्यकाल में सात फीसद की मध्यम वृद्धि ही देखी गई. महामारी से पहले की कुछ तिमाहियों में यह भी गिरकर पांच फीसद से नीचे आ गई. महामारी से हालात और भी खराब हो गए. ग्रोथ हालांकि अब लौट आई है, पर इसे कायम रख पाना चुनौती होगी. सुधारों से उम्मीद यही होती है कि अंततः प्रगति हो. बहुत कुछ अमल पर निर्भर करता है. इन सारे सुधारों की तरह भारत की प्रगति भी अभी आधी-अधूरी है. ड्राइवर की सीट पर प्रधानमंत्री हैं. तेज रफ्तार तो उन्हें देनी ही चाहिए, पर जरा संभलकर. ■

**ममता बनर्जी**

# दमदार चुनौती

ममता बनर्जी ने नरेंद्र मोदी-अमित शाह की जोड़ी की अपराजेयता का मिथ यकीनन चकनाचूर कर दिया. भाजपा के उत्तेजक चुनाव प्रचार, ध्रुवीकरण के हथकंडों और भारी संसाधन झोंकने के बावजूद 2021 में पश्चिम बंगाल के चुनाव में उनकी शानदार जीत ने विपक्षी खेमे में नई उम्मीदें जगा दी हैं. अब वे 2024 में लोकसभा की लड़ाई के लिए उन्हें मोदी का सबसे काबिल प्रतिद्वंद्वी मान रहे हैं.

रोमिता दत्ता

उन चुनौतियों से सीधे टकराना ममता बनर्जी की फितरत है. 1984 में चुनावी राजनीति में उनका धमाकेदार प्रवेश हो, जब स्वर्गीय प्रणब मुखर्जी ने जाधवपुर लोकसभा सीट से माकपा के वजनदार उम्मीदवार सोमनाथ चटर्जी के खिलाफ उन्हें कांग्रेस का उम्मीदवार बनाकर मैदान में उतारा था, या 2021 में भाजपा के साथ पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव की जबरदस्त लड़ाई हो, ममता ने दिखा दिया कि जंग में टिके रहने और अंतत: जीतकर उभरने का दम-खम उनमें है. दीदी और उनकी तृणमूल कांग्रेस को बोरिया-बिस्तर बांधकर बंगाल से उखाड़ फेंकने के भाजपा के घमंडी दावे, ''उखाड़ के फेंक देंगे''—खोखले साबित हुए. बंगाल ने फिर ''निजेर मेये (अपनी बेटी'' पर भरोसा जताया और दोटूक जनादेश के साथ ममता को लगातार तीसरे कार्यकाल के लिए गद्दी पर बिठा दिया.

ममता को जो बात दूसरों से अलग करती है, वह है किसी भी लड़ाई में जमकर लड़ने की धुन और लगन. 1984 में जाधवपुर में उनके पास बहुत कम संसाधन थे, क्योंकि कांग्रेस 'हारी हुई' सीट पर पैसा लगाने को तैयार नहीं थी. ममता न तो पार्टी कार्यकर्ताओं को लंबे जुलूसों में अपने पीछे लामबंद कर पाईं और न ही निर्वाचन क्षेत्र के चक्कर लगाने के लिए गाड़ियां किराये पर ले पाईं. दीवारों पर अपने प्रचार की इबारतें भी उन्होंने खुद लिखीं, पोस्टर लगाए और घर-घर जाकर प्रचार किया. गरीब बस्तियों में वे घरों में जातीं और रसोई में चाय और झाल मुरी खाते हुए महिलाओं से रिश्ता कायम करतीं. 29 बरस की एक महिला, सफेद साड़ी में, हाथ में लोहे का कड़ा और एचएमटी की घड़ी पहने, झोला उठाए, हवाई चप्पलों में राजनीति की ऊबड़खाबड़ जमीन नापने निकल पड़ी थी. उस मुकाबले में सोमनाथ की हैरतअंगेज हार ने दिग्गज नेता को पटखनी देने वाली लड़की का तमगा ममता की झोली में डाल दिया.

ममता अब 66 की हैं. बीते चार दशकों में वे और ज्यादा बेधड़क सियासी शख्सियत बन गई हैं, जो टीएमसी की राष्ट्रीय दस्तक के साथ दुर्जेय भाजपा और दूसरों से लोहा लेने को तैयार है. ममता के मुरीदों

बंदीप सिंह

‘‘आज जो बंगाल सोचता है वह कल भारत करता है. बंगाल ने क्या किया है, यह लोगों को बताने के लिए हम विभिन्न राज्यों में जाएंगे. हमें रोका नहीं जा सकता’

**—ममता बनर्जी**

*मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल*

**संघर्ष का खेल** अप्रैल 2021 में हावड़ा के निश्चिंदा में चुनावी रैली को व्हीलचेयर पर बैठकर ममता बनर्जी ने संबोधित किया

देबज्योति चक्रबर्ती

के लिए बंगाल की जीत कामयाबी की महागाथा है. उन्होंने 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के हाथों हार पर रोने-धोने में वक्त नहीं गंवाया, बल्कि रणनीतिकार प्रशांत किशोर और भतीजे अभिषेक बनर्जी के साथ पार्टी के कायाकल्प में जुट गईं और सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को बंगाल के 10 करोड़ मतदाताओं के हरेक वर्ग के हिसाब से संवारा. चुनौती जबरदस्त थी. भगवा खेमे ने पूरी ताकत झोंक दी थी. प्रचार के शिखर पर उसने केंद्रीय मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों सहित 70 राष्ट्रीय नेता अपने 'ईबार बांग्ला (इस बार बंगाल)' मिशन में उतार दिए. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद 18 बार वहां गए जबकि अमित शाह ने 20 बार बंगाल की धरती नापी.

ममता ने डटकर सामना किया. चुनाव आठ चरणों में फैले थे. कड़ी निगरानी की व्यवस्था थी. चुनाव आयोग ने हरेक चरण में अर्धसैनिक बलों की 700-1,000 कंपनियां तैनात कीं, राज्य के दो दर्जन से ज्यादा शीर्ष पुलिस अफसरों को हटा दिया, नंदीग्राम में ममता पर कथित हमले के बाद सुरक्षा महानिदेशक का तबादला किया और सुरक्षा कर्मियों की उनकी आरामगाह का चप्पा-चप्पा छान मारा. यहां तक कि उन्हें एक दिन के लिए चुनाव प्रचार से भी रोक दिया.

कुछ भी दीदी को भयभीत न कर सका. ऐड़ी की वह चोट तो कतई नहीं, जो उन्हें नंदीग्राम में लगी थी. हालांकि वहां वे अपने आश्रित से दुश्मन बने सुवेंदु अधिकारी से मामूली अंतर से हार गईं. डॉक्टरों की सलाह को अनदेखा करके वे फिर प्रचार में जुट गईं—व्हीलचेयर पर. एक रैली में फुटबॉल (बंगाल का पंसदीदा खेल) नचाते हुए ममता ने ऐलान किया 'खेला होबे' और कई मीम की प्रेरणा बन गईं. राज्यसभा सांसद और प्रसार भारती के पूर्व सीईओ जवाहर सरकार कहते हैं, ''जनता के साथ ममता का जुड़ाव चुनाव से परे है. उन्होंने सुलभ नहीं होने या नेताओं की तरह श्रेष्ठ होने और लोगों से खुद को दूर कर लेने का आभामंडल अख्तियार नहीं किया. उनकी कल्याणकारी योजनाएं जमीनी लोगों से उनके करीबी जुड़ाव और उनकी जरूरतों की समझ से विकसित हुई हैं.''

विरोधियों ने सोचा कि टीएमसी के नेताओं के पीछे केंद्रीय एजेंसियों को लगाकर चुनाव में दबाव की रणनीति काम में लाई जाए. ममता ने पूरी ताकत से पलट वार किया. प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) अभिषेक के दरवाजे पर आ पहुंचा और उनकी पत्नी रुजिरा से कथित धनशोधन के मामले में पूछताछ की. भाजपा ने भ्रष्टाचार को लेकर हल्ला मचाया. ममता ने ईडी की कार्रवाई

## ममता के चढ़ाव

- प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह की अगुआई वाली भाजपा के खिलाफ ममता की जोरदार फतह—धनबल, जनबल, दांव-पेंच भी ममता की ताकत और जादू के आगे टिक न सके
- चुनाव के दौरान पैर की हड्डी टूटना भी दीदी के जज्बे को तोड़ नहीं पाया. हाथ में फुटबॉल लिए व्हीलचेयर पर सवार ममता खेला होबे की प्रतीक बन गईं. विरोधियों को भी समझ आ गया कि वे खेल में पूरे दमखम से हैं
- 2024 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी के विश्वसनीय चैलेंजर के तौर पर विपक्षी खेमे में उनका कद बढ़ गया. कांग्रेस, भाजपा, जद (यू), एनसीपी और आप के कई नेता उनकी तरफ खिंचे चले आए
- टीएमसी बंगाल के बाहर जमीन तलाश रही है और इसकी शुरुआत भाजपा शासित त्रिपुरा, गोवा और हरियाणा से हुई
- कम ही नेता ममता की 25,000 करोड़ रुपए की लोक कल्याणकारी नीतियों के बराबर ठहर सकते हैं. वे सरकारी सेवाएं लोगों के दरवाजे पर ले गईं और 1.5 करोड़ नौकरियों के सृजन के लिए कारोबार और निवेश पर जोर दे रही हैं

## ... और उतार

- अपने राजनैतिक जीवन में पहली बार चुनाव हारीं, जब उन्हीं के बनाए-बढ़ाए सुवेंदु अधिकारी ने उन्हें नंदीग्राम से हराया. बाद में भवानीपुर से जीतकर विधानसभा में पहुंचीं
- पार्टी के गुंडों पर लगाम कसने में नाकाम, जिन पर विपक्ष ने हाल में कोलकाता नगर निकाय के चुनाव में धांधली के आरोप लगाए
- टीएमसी एक व्यक्ति एक पद का सिद्धांत लागू नहीं कर पाई, क्योंकि ममता वफादारों को कई भूमिकाओं से नवाजने के लोभ से बच नहीं पातीं
- आलोचकों का कहना है कि उनकी लोकलुभावन योजनाओं ने खजाना खाली कर दिया और राज्य गहरे वित्तीय संकट से घिर गया है

**''ममता के पास बेहतर और समझदार देश के निर्माण का अदम्य संकल्प है. ऐसा देश जिसमें विभिन्न आस्थाओं का सम्मान हो और मानवाधिकार तथा संवैधानिक मूल्य पवित्र माने जाएं''**

**—पवन के. वर्मा**

*राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, तृणमूल कांग्रेस*

**''ममता ने चुनावी राजनीति के इतिहास की सबसे अहम जीतों में से एक को हासिल किया है. यह तो हुआ, अब तीसरे कार्यकाल में उनका ध्यान तेजी से उद्योगों, बुनियादी ढांचे और आइटी पर है ''**

**—डेरेक ओ ब्रायन**

*राज्यसभा सांसद, तृणमूल कांग्रेस*

को बंगाल की 'बेटियों और बहुओं' पर हमला बताकर बाजी पलट दी. राज्यसभा सांसद डेरेक ओ ब्रायन कहते हैं, ''इस पूरे गंदे चुनाव अभियान में प्रधानमंत्री ने ममता बनर्जी का मखौल उड़ाया, गृह मंत्री ने फब्तियां कसीं, भाजपा ने उनकी साख को कमतर आंका. तो भी उन्होंने चुनावी राजनीति के इतिहास की सबसे अहम जीतों में से एक में पार्टी की अगुआई की.'' वे आगे कहते हैं, ''यह तो हुआ, अब तीसरे कार्यकाल में उनका ध्यान तेजी से उद्योग, बुनियादी ढांचे और आइटी पर है. वे तृणमूल को गृहराज्य से बाहर पंख फैलाने के लिए भी तैयार कर रही हैं.''

2021 में ममता के दो काबिल प्रतिस्पर्धी थे—तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन और असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा. स्टालिन बरसों इंतजार के बाद सत्ता में आए. उन्होंने अपने निकट पूर्ववर्ती के मुकाबले राजकाज में ज्यादा परिपक्वता दिखाई. प्रशासन में राजनैतिक नफे-नुक्सान का ख्याल रखे बिना प्रशासन को असरदार बनाने पर ध्यान दिया. तमिलनाडु को 2030 तक 1 ट्रिलियन या खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की आकांक्षा के साथ वे महिलाओं के लिए मुफ्त बस यात्रा और सस्ते दूध सरीखे लोकलुभावन चुनावी वायदे पूरे करने की व्यावहारिक जरूरत पर भी ध्यान दे रहे हैं. उन्होंने जन शिकायतों के निवारण का तंत्र कायम किया है. तुनुकमिजाज ममता की तुलना में स्टालिन ने शांत और गंभीर छवि बनाई, वे सहकारी संघवाद तथा राज्य के लिए अधिक स्वायत्तता की मांग को लेकर भी खासे मुखर हैं.

दूसरे उभरते सितारे हैं सरमा. उत्तर-पूर्व में भाजपा के विस्तार के वास्तुकार सरमा ने असम में लगातार दूसरे विधानसभा चुनाव में पार्टी को जीत दिलवाई. उन्हें सर्बानंद सोनोवाल की जगह मुख्यमंत्री बनाया गया. इससे उत्तर-पूर्व में भाजपा की योजनाओं में उनकी अहमियत जाहिर होती है. सोनोवाल की सरकार में भी सरमा तेजतर्रार मंत्री थे, पर खुद उनकी सरकार के कुछ निर्णय विवादास्पद रहे. इनमें गौतस्करी विरोधी कानून भी है जो मंदिरों और सत्रों (वैष्णव मठों) के 5 किमी के दायरे में गोमांस की बिक्री पर प्रतिबंध लगाता है. अतिक्रमणकारियों के कब्जे से, जिनमें ज्यादातर कथित अवैध बांग्लादेशी हैं, सरकारी जमीन छुड़ाने के अभियान में छिटपुट हिंसा हुई. आलोचकों ने इसे मुसलमानों को निशाना बनाने का कोशिश करार दिया.

ममता की आलोचनाएं की जाती हैं. उन्हें मनमौजी और गठबंधन की मुश्किल भागीदार माना जाता है. विरोधी उनके अस्थिर व्यवहार का हौआ खड़ा कर रहे और कांग्रेस और भाजपा के साथ उनके टूटे रिश्तों का हवाला दे रहे हैं. राहुल गांधी पर उनकी टिप्पणी पर कांग्रेस के साथ उनका टकराव हुआ. 2024 के आम चुनाव में भाजपा के खिलाफ विपक्ष की संयुक्त रणनीति को लेकर असहमतियां सामने आईं. उन्होंने कांग्रेस के नेताओं को अपने पाले में लाने का अंधाधुंध अभियान छेड़ दिया. इस सबकी वजह से कइयों के लिए वे ऐसी राजनीतिज्ञ हैं जिस पर भरोसा नहीं किया जा सकता. उन्होंने ऐलान किया कि यूपीए (संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन) लगभग 'मर चुका' है. यह कांग्रेस की अगुआई में भाजपा-विरोधी मोर्चे के लिए उनके राजी न होने का इशारा था.

जो भी हो, बंगाल की जोरदार जीत ने ममता को प्रधानमंत्री मोदी के शायद सबसे दमदार चैलेंजर की स्थिति में ला खड़ा किया. शरद पवार, फारूख अब्दुल्ला, गुलाम नबी आजाद और सुब्रमण्यम स्वामी सरीखे दिग्गज नेताओं का हाथ उनकी पीठ पर है. राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में टीएमसी में आए पूर्व राज्यसभा सदस्य पवन के. वर्मा कहते हैं, ''भाजपा का मुकाबला करने का जोश और जुनून ममता बनर्जी में है. बेहतर और समझदार देश के निर्माण का अदम्य संकल्प उनके पास है. ऐसा देश जिसमें विभिन्न आस्थाओं का सम्मान हो और मानवाधिकार तथा संवैधानिक मूल्य पवित्र माने जाएं.''

टीएमसी के विस्तार की कोशिश भाजपा शासित गोवा और त्रिपुरा से शुरू हुई, जहां कांग्रेस के नेताओं में सेंध लगाई गई और ममता के 'कल्याणकारी मॉडल' का डंका पीटा गया. गोवा के लोगों से ममता ने पूछा कि क्या भाजपा के अच्छे दिन का मतलब आसमान छूती महंगाई था. उन्हें गरीब परिवारों की माताओं को दिए जा रहे बंगाल सरकार के मूल मासिक भत्ते के बारे में बताया. त्रिपुरा में उन्होंने बंगाल की तरह मुफ्त स्वास्थ्य बीमा और लड़कियों की उच्च शिक्षा के लिए वजीफा देने का वायदा किया.

अभी शुरुआत है, पर उनके कदमों ने गद्दीनशीन सरकारों को चौंका दिया और ध्यान देने पर मजबूर कर दिया. केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अगस्त में त्रिपुरा के देशज परिवारों के लिए 1,300 करोड़ रुपए के पैकेज का ऐलान किया. पार्टियां अगले साल की शुरुआत में अहम विधानसभा चुनावों के लिए कमर कस कर रही हैं. ऐसे में उम्मीद है कि ममता खुद को और बढ़-चढ़कर पेश करेंगी. कांग्रेस के चुनावी प्रदर्शन में थोड़ी भी गिरावट से 2024 में मोदी के चैलेंजर के तौर पर उनका दावा और पुख्ता हो जाएगा.

हालांकि स्टालिन और सरमा की चुनावी फतह भी बाकमाल थीं पर यह दिलेर ममता ही थीं जिन्होंने भाजपा के बलशाली रथ को रोककर 2021 की लड़ाई लड़ी और जीती. इन्हीं कारणों से वे इंडिया टुडे की पॉलिटीशियन ऑफ दि ईयर (साल की राजनेता) हैं. ■

# यूनिकॉर्न का धावा

इंटरनेट का प्रसार और स्मार्टफोन का प्रयोग बढ़ने तथा निवेशक पूंजी की भरमार की बदौलत देश में एक अरब डॉलर से ज्यादा कीमत वाले स्टार्टअप—यूनिकॉर्न—की संख्या में तेजी से इजाफा देखा गया. आखिर वे 2021 में सुर्खियों में क्यों छाए रहे

एम.जी. अरुण

अगर कोविड-19 के समय कारोबार सुर्खियों में आया भी तो खबरें अक्सर अच्छी नहीं होती थीं. बर्बादी और मायूसी की ढेरों कहानियां हैं, जिनमें लॉकडाउन और सप्लाइ चेन की दिक्कतों से फैक्टरियां और फुटकर बिक्री की दुकानें समान रूप से बाधित हुईं. ज्यादातर पारंपरिक कारोबारों का हश्र खराब हुआ, चाहे वह निर्माण, फुटकर या हॉस्पिटेलिटी, खासकर एमएसएमई (लघु, छोटे और मध्यम उपक्रम) क्षेत्र के हों. लेकिन डिजिटल क्षेत्र में कई नई कंपनियों—स्टार्टअप, जैसा कि उन्हें अक्सर कहा जाता है—के लिए महामारी अपना संचालन बढ़ाने, पोर्टफोलियो को विस्तृत करने और अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए बहुत बड़े अवसर के रूप में आई. इनमें एडटेक (एजुकेशन टेक्नोलॉजी), मोबिलिटी, फूड टेक, फिनटेक (फाइनेंशियल टेक्नोलॉजी) और गेमिंग जैसी कुछ कंपनियां शामिल हैं. वेंचर कैपिटलिस्ट और प्राइवेट इक्विटी निवेशकों की फंडिंग और बाजार में हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए बेचैन जोशीले युवाओं की वजह से उनके ग्रोथ को बढ़ावा मिला. इनमें से कई कंपनियों की कीमत पिछले 12 महीनों में आसमान छूने लगी, जिसकी बदौलत वे 'यूनिकॉर्न' बन गईं. कारोबार की भाषा में एक अरब डॉलर (7,500 करोड़ रु.) से ज्यादा कीमत वाली कंपनी को यूनिकॉर्न कहा जाता है. भारत में 2021 में 42 नई यूनिकॉर्न पैदा हुए, जो 2020 में 11 के मुकाबले चारगुना ज्यादा इजाफा है. इन कंपनियों का कुल मूल्य करीब 82 अरब डॉलर (6.2 लाख करोड़ रु.) है. सरकार समर्थित निवेश सहायक इनवेस्टइंडिया के मुताबिक, भारत में 79 यूनिकॉर्न—अमेरिका और चीन के बाद दुनिया में तीसरे नंबर पर सबसे ज्यादा—हैं, जिनका कुल मूल्य 260.5 अरब डॉलर (19.5 लाख करोड़ रु.) है.

भारत का सबसे मूल्यवान यूनिकॉर्न एडटेक स्टार्टअप बायजूज़ है, जिसका बाजार मूल्य इस साल अगस्त में 21 अरब डॉलर (1.57 लाख करोड़ रु.) आंका गया और दुनियाभर में इसकी रैंकिंग 15 थी. दूसरी है छह अरब डॉलर (45,000 करोड़ रु.) की फूड टेक फर्म स्विगी, जो देशभर के 500 शहरों में उपभोक्ताओं को 1,85,000 से ज्यादा रेस्तरांओं से जोड़ती है. फंतासी स्पोर्ट्स फर्म ड्रीम11 के प्लेटफॉर्म पर 14 करोड़ से ज्यादा यूज़र हैं और इसका मूल्य आठ अरब डॉलर (60,000 करोड़ रु.) है. फिनटेक कंपनियों ने भी झंडे गाड़े हैं—लॉकडाउन के दौरान घर में फंसे लाखों लोगों के ऑनलाइन शेयर कारोबार और निवेश करने में तेजी आई, जिससे जेरोधा जैसी ब्रोकरेज और क्रिप्टो एक्सचेंज कॉइनस्विच कुबेर जैसी कंपनियां बहुत लोकप्रिय स्टार्टअप बन गईं.

इन सबके पीछे हाल के वर्षों में स्मार्टफोन रखने वाले लोगों में इज़ाफा और इंटरनेट कनेक्टिविटी में सुधार है. उद्योग के आकलन से अंदाजा मिलता है कि भारत में 2023 तक स्मार्टफोन के इस्तेमाल में जबरदस्त इज़ाफा होगा और यह 65-70 करोड़ पहुंच जाएगा. इंटरनेट ऐंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक, इंटरनेट के सक्रिय यूज़र की संख्या में जबरदस्त इज़ाफे की संभावना है. 2020 में ऐसे यूज़र की संख्या 62.2 करोड़ से बढ़कर 2025 में 90 करोड़ हो जाएगी. इन्फोसिस के चेयरमैन नंदन नीलेकणि ने हाल में ब्लूमबर्ग

फोटोः बंदीप सिंह

**42**

नए यूनिकॉर्न हो गए 2021 में, दुनिया में तीसरे नम्बर पर हम

**79**

यूनिकॉर्न की भारत में कुल संख्या

**82**

**अरब डॉलर**

(6.2 लाख करोड़ रु.) संयुक्त मूल्यांकन है 2021 में बने यूनिकॉर्न का

**260.5**

**अरब डॉलर**

(6.2 लाख करोड़ रु.) संयुक्त मूल्यांकन है भारत के सारे यूनिकॉर्न का

**नायका**

फाल्गुनी नायर, 58 वर्ष

फाउंडर और सीईओ

**सुर्खियों में आने की वजह**

- अक्तूबर में नायका का आइपीओ 82 गुना ओवरसब्सक्राइबर हुआ
- नायर 7.6 अरब डॉलर (57,000 करोड़ रु.) के साथ भारत की सबसे अमीर महिला उद्यमी हैं

को बताया, ''पुराने दिनों के उलट जब हम सब कुछ सिफर से शुरू करते थे, आज कंपनी तैयार करने के लिए काफी इन्फ्रास्ट्रक्चर पहले से ही मौजूद है. चुनौती दूसरों के बेहतर करने से पहले कामयाब होने की है. अब रफ्तार और क्रियान्वयन पहले से ज्यादा अहम होते जा रहे हैं.'' फिनटेक के मामले में नेशनल पेमेंट काउंसिल ऑफ इंडिया के मुताबिक, 2020-21 वित्त वर्ष के दौरान भारत में यूपीआइ आधारित (यूनिफायड पेमेंट इंटरफेस आधारित) प्लेटफॉर्मों के जरिए 26.85 अरब लेनदेन किए गए. विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह के कारक निवेशकों को चीन और दूसरी उभरती अर्थव्यवस्थाओं की याद दिलाते हैं, जहां इंटरनेट और सॉफ्टवेयर कंपनियों ने बड़े पैमाने पर मूल्य सृजित किया.

ज्यादातर कारोबारों के लिए 2021 अगर 2020 ज्यादा नहीं तो उतना ही चुनौतीपूर्ण था क्योंकि इसमें महामारी की दूसरी लहर के दौरान हजारों लोगों की मौत हो गई. यह वह दौर था जिसने भारतीय कंपनियों के धैर्य और अर्थव्यवस्था के दोबारा खुलने के साथ ही अपने उपभोक्ता आधार को बरकरार रखने की रणनीति की परीक्षा ली, और इसमें यह भी देखा गया कि उन्होंने अपनी विस्तार योजनाओं की खातिर किस तरह पर्याप्त धन उगाहा. हमने इन्हीं खूबियों पर आधारित चार ऐसे यूनिकॉर्न की शिनाख्त की है, जिनके लिए यह साल शानदार रहा, उन्होंने शायद मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज या गौतम अडानी के अडानी ग्रुप जैसे पारंपरिक कारोबार दिग्गजों से भी ज्यादा बेहतर प्रदर्शन किया. एक ओर जहां कुछ बड़े कॉर्पोरेट ने महामारी के दौरान मेगा डील किए, वहीं ऑनलाइन कारोबार में अप्रत्याशित तेजी देखी गई. निवेशकों ने 2021 में स्टार्टअप ईकोसिस्टम में 34.5 अरब डॉलर (2.6 लाख करोड़ रु.) डाले, जो पिछले साल 13 अरब डॉलर (97,5000 करोड़ रु.) के मुकाबले दोगुना से भी ज्यादा है. चार स्टार्टअप—जोमैटो, नायका, फार्मईजी और रेजरपे—के लिए यह साल खास तौर पर अच्छा रहा.

**पूंजी बाजारों का दोहन:** भारत में शेयर बाजार के हालिया इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं से एक यह था कि ढेरों कंपनियां सार्वजनिक रूप से धन उगाहने के लिए आईं और सितंबर में बीएसई सेंसेक्स 60,000 का अंक पार कर गया. भारतीय शेयर बाजारों में 2021 के दौरान 63 कंपनियों ने—2020 में 15 और 2019 में 16 कंपनियों ने—आइपीओ (इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग) जारी कर सामूहिक रूप से 1.18 लाख करोड़ रु. उगाहे. आइपीओ में

इजाफे के पीछे कई वजहें हैं, जिनमें कम ब्याज दरें, केंद्र और आरबीआइ (भारतीय रिजर्व बैंक) की ओर से प्रोत्साहन पैकेज और यह तथ्य शामिल है कि भारत ने टीकाकरण अभियान के तहत अब तक अपनी आधी योग्य आबादी को टीका लगा दिया है. इसके अलावा नए निवेशकों की संख्या में भी जबरदस्त इजाफा हुआ है—एसबीआइ (भारतीय स्टेट बैंक) की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 2020-21 के दौरान शेयर बाजारों में 1.42 निवेशकों ने प्रवेश किया.

जिन चार स्टार्टअप का यहां जिक्र किया जा रहा है उन्होंने 2021 की दूसरी छमाही में शेयर बाजारों से धन उगाहा. पेटीएम ने अपने आइपीओ से 18,500 करोड़ रु., जोमैटो ने 9,375 करोड़ रु., नायका ने 5,351.91 करोड़ रु. और पॉलिसी बाजार ने 5,625 करोड़ रु. उगाहे. पेटीएम को छोड़कर, जिसे अपेक्षाकृत कम उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली (मोटे आंकड़ों के बावजूद यह केवल 1.89 गुना ही ओवरसब्सक्राइब हुआ), बाकी सारे आइपीओ को हाथोहाथ लिया गया. इनमें से दीपिंदर गोयल पोषित जोमैटो और फाल्गुनी नायर पोषित नायका बिल्कुल अलग रहीं—जोमैटो का आइपीओ 40.38 गुना ओवरसब्सक्राइब हुआ, जिससे 2.13 लाख करोड़ रु. के शेयरों की मांग पैदा हो गई. यह 2008 में रिलायंस पावर के आइपीओ और 2010 में कोल इंडिया के निर्गम के बाद शेयर बाजारों के इतिहास में तीसरी सबसे बड़ी मांग थी. इसने कथित तौर पर दूसरे नंबर पर अब तक का सबसे ज्यादा 323 लाख आवेदन हासिल किया. इससे पहले रिलायंस पावर को 478 लाख आवेदन मिले थे. नायका का आइपीओ करीब 82 गुना ओवरसब्सक्राइब हुआ, जिससे करीब 2.17 अरब शेयरों की मांग पैदा हो गई जबकि निर्गम मात्र 2.628 करोड़ शेयरों का था. इन चार स्टार्टअप ने कुल मिलाकर 1.2 लाख करोड़ रु. उगाहे.

पंजाब में जन्मे, आइआइटी दिल्ली के 38 वर्षीय स्नातक गोयल ने कंसल्टिंग फर्म बेन ऐंड कंपनी जॉइन किया था. उन्होंने 2008 में फूडीबे की स्थापना की, जिससे फूड आउटलेट को एक ऐप पर एकीकृत करके फूड का ऑर्डर देना आसान बना दिया—2010 में यही जोमैटो बन गया. कंपनी का दावा है कि 2020-21 में उसके 3.2 करोड़ सक्रिय मासिक यूजर थे. मार्च 2021 में देश के 525 शहरों और कस्बों में उसकी मौजूदगी थी और 3,89,932 रेस्तरां उसकी सूची में थे. एक ओर जहां 31 मार्च, 2021 तक भारत से बाहर 23 देशों में उसकी मौजूदगी थी, वहीं उसने केवल भारतीय बाजार में ही आगे बढ़ने का रणनीतिक फैसला किया है. 2020-21 में जोमैटो का राजस्व 2,118.4 करोड़ रु. और कुल घाटा 816.43 करोड़ रु. था. लगता है कि निवेशक उसके सामने मौजूद अवसरों पर दांव लगा रहे हैं. मैनेजमेंट कंसल्टेंसी रेडसियर के मुताबिक, 2019 में जोमैटो का कुल सेवायोग्य बाजार अवसर 65 अरब डॉलर (4.8 लाख करोड़ रु.) का था, जो प्रति वर्ष 9 फीसद की दर से बढ़कर 2025 में 110 अरब डॉलर (8.2 लाख करोड़ रु.) का हो जाएगा.

हेमंत मिश्र

**"पुराने दिनों के उलट जब हम सब कुछ सिफर से शुरू करते थे, आज कंपनी तैयार करने के लिए काफी इन्फ्रास्ट्रक्चर पहले से ही मौजूद है. अब रफ्तार और क्रियान्वयन पहले से ज्यादा अहम होते जा रहे हैं"**
**—नंदन नीलेकणि**
*चेयरमैन, इन्फोसिस*

पूर्व मर्चेंट बैंकर, नायका की संस्थापिका 58 वर्षीया नायर ने 2012 में उद्यमी बनने का फैसला किया. आइआइएम अहमदाबाद की स्नातक ने अपने करियर का ज्यादातर वक्त कोटक महिंद्रा कैपिटल में बिताया और वे वहां एमडी तथा उसके संस्थागत इक्विटी कारोबार की प्रमुख बन गईं. नायका ने थर्ड पार्टी सौंदर्य प्रसाधनों को बेचने के अपने कारोबार को विस्तृत करके अपने ब्रांड लॉन्च किए और फैशन के कारोबार में प्रवेश कर गई. 31 मार्च को समाप्त हुए वित्त वर्ष में नायका का सकल मर्चेंडाइज मूल्य (बिके हुए माल का कुल मूल्य) 50 फीसद से ज्यादा बढ़कर 4,046 करोड़ रु. हो गया. यह लाभदायक ई-टेलर भी है, जिसने 2020-21 में 2,453 करोड़ रु. के राजस्व पर 62 करोड़ रु. मुनाफा कमाया. फोर्ब्स के मुताबिक, नायर 2021 में 7.6 अरब डॉलर (57,000 करोड़ रु.) की संपत्ति के साथ भारत की सबसे अमीर उद्यमी बन गईं.

## रेजरपे

हर्षिल माथुर, 31 वर्ष
शशांक कुमार, 30 वर्ष
सह-संस्थापक

### सुर्खियों में रहने की वजह

- 7.5 अरब डॉलर की रेजरपे देश का दूसरा सबसे मूल्यवान फिनटेक स्टार्टअप है
- महामारी के शुरुआती तीन महीनों में गोता लगाने के बाद यह कंपनी 40-45 फीसद महीने दर महीने के हिसाब से बढ़ी

**विशेषज्ञता और क्षमता का निर्माण:** स्टार्टअप की दुनिया में अपनी क्षमता और पहुंच बढ़ाने के लिए आम तौर पर सफल स्टार्टअप को दूसरी कंपनियां अधिग्रहित कर लेती हैं. ऑफलाइन दिग्गज भी अपना ई-कॉमर्स तैयार करने के लिए स्टार्टअप का अधिग्रहण कर रहे हैं, जैसा कि इस साल टाटा ग्रुप के ग्रॉसरी ई-टेलर बिग बास्केट को खरीदने के मामले में दिखा. लेकिन किसी स्टार्टअप के लिए भारत में पारंपरिक कारोबार करने वाली कंपनी को खरीदते नहीं सुना गया. लेकिन फार्मईजी के मामले में यही हुआ—मई में इस कंपनी ने 4,546 करोड़ रु. में थायरोकेयर का 66 फीसद हिस्सा खरीद लिया, जो हेल्थकेयर के क्षेत्र में सबसे बड़े सौदों में शुमार है.

फार्मईजी की स्थापन 2015 में उस समय की गई जब डायाहेल्थ.कॉम के अपेक्षाकृत कम सफल उपक्रम के बाद सिद्धार्थ शाह, हार्दिक डेढ़िया और हर्ष पारेख ने एक दवा डिलिवरी की कंपनी बनाने की खातिर अपने बचपन के दोस्तों धवल शाह और धर्मिल शेठ (सभी की उम्र 32 साल) से हाथ मिलाया. इस कंपनी को महामारी के दौरान जबरदस्त कामयाबी मिली क्योंकि ऑनलाइन ऑर्डर करना सामान्य हो गया. इससे पहले फार्मईजी ने मेडलाइफ का अधिग्रहण किया था और इससे वह यूनिकॉर्न क्लब में पहुंचने वाला पहला भारतीय ई-फार्मेसी स्टार्टअप बन गया. थायरोकेयर को खरीदने के साथ ही फार्मईजी ने अपनी सेवाओं की श्रेणी में लैब और क्लिनिकल

# देश के सबसे मूल्यवान यूनिकॉर्न

*भारत के प्रमुख यूनिकॉर्न एडटेक, फिनटेक, ई-कॉमर्स, गेमिंग, फूड टेक जैसे विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे हैं*

| | | |
|---|---|---|
| **बायजूज़** *एडटेक* **21** | **इनमोबि** *ऐडटेक* **12** | **ओयो** *शेयर्ड इकोनॉमी* **10** |
| **ड्रीम11** *गेमिंग* **8** | **रेजरपे** *गेमिंग* **8** | **ओला** *शेयर्ड इकोनॉमी* **7** |
| **फार्मईजी** *हेल्थटेक* **6** | **स्विगी** *ऑन-डिमांड डिलिवरी* **6** | **ऑफबिजिनेस** *फिनटेक* **5** |
| **ब्राउजरस्टैक** *सास* **4** | **क्रेड** *फिनटेक* **4** | **मीशो** *ई-कॉमर्स* **4** |
| **जेरोधा** *फिनटेक* **4** | | |

आंकड़े अरब डॉलर में, कंपनियों का मूल्य

*स्रोत: हुरुन लिस्ट ऑफ यूनिकॉर्न्स*

## फार्मईजी

**सिद्धांत शाह, 32 वर्ष; हर्ष पारेख, 32 वर्ष; धर्मिल शेठ, 32 वर्ष; धवल शाह, 32 वर्ष; हार्दिक डेढ़िया, 32 वर्ष, सह-संस्थापक**

### सुर्खियों में होने की वजह

- फार्मईजी ने मई में डायग्नोस्टिक चेन थायरोकेयर को 4,546 करोड़ रु. में खरीदा
- इसे हेल्थकेयर सेक्टर में सबसे बड़े सौदों में से एक करार दिया गया

अमित वर्मा

## जोमैटो

**दीपिंदर गोयल, 38 वर्ष फाउंडर और सीईओ**

### सुर्खियों में होने की वजह

- जुलाई में जोमैटो का आइपीओ 40.38 गुना ओवरसब्सक्राइब हुई
- भारतीय शेयर बाजारों के इतिहास में इसके शेयरों की मांग तीसरी सबसे ज्यादा दर्ज की गई

परीक्षण जोड़ दिया. उसका दावा है कि वह 1,200 से ज्यादा शहरों में 50 लाख से ज्यादा लोगों को सेवा देती है, जिसमें दवा पहुंचाना और जांच की सेवाएं, दोनों शामिल हैं. इन युवाओं के साहसिक अधिग्रहण करने के पीछे क्या राज है? विशेषज्ञ इस चाल को ब्लिट्जस्केलिंग कहते हैं, जिसका मतलब है बड़े बाजार, कभी-कभी वैश्विक बाजार में भी सेवा देने के लिए तेजी से कंपनी का निर्माण और इसका मकसद बड़े पैमाने पर सबसे पहले काम शुरू करना होता है. लिंक्डइन और पेपाल के सह-संस्थापक रीड हॉफमैन का कहना है कि नेटवर्क वाले युग में और वैश्विक माहौल में कंपनियों को तेजी से काम करना होता है ''क्योंकि दुनिया में कहीं से भी मिलने वाली प्रतिस्पर्धा आपको क्षमता के मामले पछाड़ सकती है.'' फार्मईजी की महत्वाकांक्षा को टेमासेक, प्रोसस वेंचर्स और टीपीजी ग्रोथ जैसे कुछ निवेशकों का समूह पोषित कर रहा है. स्टेलारिस वेंचर पार्टनर्स के पार्टनर रितेश बंगलानी के मुताबिक, मूल्यांकन नतीजा है और यह किसी उद्योग विशेष को लेकर आशावाद नहीं है. वे कहते हैं, ''वैश्विक निवेशक भारत में टेक उद्योग को लेकर बहुत आशावादी हैं. मूल्यांकन निवेशक की आकांक्षाओं का केवल संकेत देता है और इससे पूंजी तक पहुंच आसान हो जाती है.'' वे कहते हैं कि आखिर में इन कंपनियों को उनकी आकांक्षाओं पर खरा उतरना होता है.

**बड़ा, जोरदार ग्रोथ:** ज्यादा से ज्यादा शेयर हासिल करने के लिए तेजी से कदम बढ़ाना प्रतिस्पर्धा में आगे बने रहने के लिए जरूरी है. इस मामले में रेजरपे की सफलता अप्रत्याशित है. इस कंपनी की स्थापना 2014 में आइआइटी रूड़की के स्नातकों—30 वर्षीय शशांक कुमार और 31 वर्षीय हर्षिल माथुर ने की थी. यह पैसे के प्रबंधन की कंपनी है जो व्यापारियों, स्कूलों, ई-कॉमर्स और दूसरी कंपनियों को ऑनलाइन पेमेंट स्वीकार करने और देने के लिए तेज, सस्ता और सुरक्षित तरीका मुहैया कराती है. महामारी के पहले तीन महीनों में 30 फीसद गिरावट के बाद इस कंपनी ने बाकी की अवधि में महीने दर महीने 40-45 फीसद तेजी से ग्रोथ दर्ज किया. यह पेटीएएम के बाद देश की दूसरी सबसे मूल्यवान फिनटेक स्टार्टअप बन गई. हाल में 375 अरब डॉलर (2,812.5 करोड़ रु.) के सीरीज-एफ फंडरेज के साथ ही इसका मूल्य अप्रैल 2021 में तीन अरब डॉलर (22,500 करोड़ रु.) से बढ़कर 7.5 अरब डॉलर (56,250 करोड़ रु.) हो गया.

भारतीय उद्यमी डिजिटल क्रांति का दोहन करके उससे लाभ उठाने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं. भारतीय टेक स्टार्टअप की ओर से उठाए गए कदमों के मद्देनजर दुनियाभर की कंपनियों को पछाड़कर उनके उभरने की पूरी संभावना है. आने वाले वर्ष इसके गवाह बनेंगे. फंडिंग में उफान अगले साल भी जारी रहने की उम्मीद के साथ ही अवसरों की कमी नहीं रहेगी. ■

आज तक

# देश का नं. 1 हिंदी न्यूज़ ऐप

जुड़े रहिए हर खबर से,
कहीं भी, कभी भी

अभी डाउनलोड करें

aajtak.in/app

उपलब्ध है

# आंसू बने अंगारे

गणतंत्र दिवस पर हुई हिंसा के बाद तीन कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों का आंदोलन जब एकबारगी अपने मकसद से भटका लग रहा था और अन्य किसान नेता पस्त पड़ने लगे थे तब भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश टिकैत ने लगभग अकेले ही इसकी दिशा बदल दी. आखिरकार सर्वशक्तिमान केंद्र सरकार को कदम पीछे खींचने पड़े, कानूनों को निरस्त करना पड़ा और किसानों से माफी मांगनी पड़ी

प्रशांत श्रीवास्तव

फोटोः बंदीप सिंह

किसान आंदोलन का अगर कोई निर्णायक मोड़ था, तो वह 28 जनवरी 2021 को आया. पूरा दिन दिल्ली पुलिस की हिरासत में बिताने के बाद मीडिया से बात करते वक्त फूट-फूट कर रोते भारतीय किसान यूनियन (बीकेयू) के नेता राकेश टिकैत की तस्वीरों ने देश को स्तब्ध कर दिया. किसान आंदोलन उत्साह की नई लहर के साथ फिर उठ खड़ा हुआ, जो गणतंत्र दिवस पर कुछ उपद्रवी तत्वों के हाथ लाल किले पर की गई हिंसा की वजह से करीब-करीब तितर-बितर होने की कगार पर पहुंच गया था और 52 वर्षीय टिकैत भारत के लाखों किसानों की आवाज बन गए. फिर घटनाओं का ऐसा सिलसिला चला कि उसकी परिणति 19 नवंबर में हुई

इंडिया टुडे

देश की भाषा में देश की धड़कन

INDIA TODAY GROUP

# सबसे भरोसेमंद स्रोतों से, सबसे सटीक जानकारी

## सब्सक्राइब करें और पाएं 21% तक की छूट

हां! मैं इंडिया टुडे को सब्सक्राइब करना चाहता/चाहती हूँ

अपनी पसंद के सब्सक्रिप्शन को टिक करें और फॉर्म को इस पते पर भेज दें– **वी केअर, लिविंग मीडिया इंडिया लि. सी-9, सेक्टर-10, नोएडा 201302 (भारत)**

| टिक करें | अवधि | कुल अंक | कवर प्राइस (₹) | ऑफर प्राइस (₹) | डिस्काउंट |
|---|---|---|---|---|---|
| ☐ | 2 वर्ष | 104 | ~~5200~~ | 4099 | 21% |
| ☐ | 1 वर्ष | 52 | ~~2600~~ | 2199 | 15% |

कृपया फॉर्म को ब्लॉक लेटर में भरें

मैं चेक/डीडी जमा कर रहा/रही हूँ जिसकी संख्या.....है और इसे दिनांक..... को लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड के पक्ष में ..... (बैंक का नाम).....रुपये की धनराशि (दिल्ली से बाहर के चेक के लिए ₹ 50 रुपये अतिरिक्त जोड़ें, समान मूल्य के चेक मान्य नहीं होंगे) के लिए बनवाया गया है.

नाम..... पता.....

..... शहर..... राज्य..... पिन.....

मोबाइल..... ईमेल.....

सब्सक्राइब करने के लिए यहां स्कैन करें.

ऑफर के विषय में विशेष जानकारी के लिए निम्न माध्यमों से संपर्क भी कर सकते हैं

हमारे टॉल फ्री नंबर पर कॉल करें
18001800100 (0120) 2479900

ईमेल भेजें
wecare@intoday.com

लॉग ऑन करें
subscriptions.intoday.in/indiatoday-hindi

लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड इस ऑफर या इसके अंश को कभी भी समाप्त करने या आगे बढ़ाने का अधिकार सुरक्षित रखता है. अन्य नियम व शर्तों की जानकारी के लिए कृपया देखें-www.indiatoday.in

## राकेश टिकैत

जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को न केवल झुकना पड़ा और तीनों विवादित कृषि कानूनों को वापस लेने का ऐलान करना पड़ा, बल्कि किसानों से माफी भी मांगनी पड़ी, यह कहकर कि सरकार इन कानूनों की खूबियां उन्हें समझा नहीं सकी.

26 जनवरी को दिल्ली के लाल किले के नजदीक प्रदर्शनकारी किसानों और पुलिस के बीच झड़पों के बाद हालात अच्छे दिखाई नहीं दे रहे थे. आंदोलन की ऊंची नैतिक जमीन खिसक चुकी थी और राजधानी के गाजीपुर और सिंघु बॉर्डर पर कई दिनों से डेरा जमाए किसान तंबू खाली करके जा चुके थे. किसान यूनियनें फूट की कगार पर थीं. राकेश टिकैत के बड़े भाई और बीकेयू के अध्यक्ष नरेश टिकैत तक आंदोलन खत्म करने का ऐलान कर चुके थे. इस बीच धरना स्थलों पर सुरक्षा बल जमा होने लगे. ऐसा लग रहा था कि बचे-खुचे प्रदर्शनकारियों को जबरन हटाया जाने वाला है. बीकेयू के प्रवक्ता राकेश और उनके समर्थक उन इने-गिने लोगों में थे जिन्होंने जिद पकड़ ली थी कि विरोध जारी रहेगा. तभी कमजोर पड़ते विरोध प्रदर्शन को कुचलने की कोशिश में सरकार ने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली.

आंसी आंखों से राकेश टिकैत ने कहा, ''राकेश टिकैत ना हटेगा, ना धरनास्थल खाली होगा. सरकार से बात होगी, कानून वापसी होगी. ये किसानों को मार रहे हैं... लेकिन हम कहीं नहीं जाने वाले.'' यह भावात्मक उवाच सोशल मीडिया पर वायरल होकर पूरे पश्चिम उत्तर प्रदेश और दूसरी जगहों पर फैल गया. घर लौट रहे किसानों ने अपनी बैलगाड़ियां और ट्रैक्टर बीच रास्ते से मोड़ लिए और वापस धरना स्थलों की तरफ बढ़ने लगे. उनके साथ अब हजारों अन्य किसान भी आ जुड़े.

राकेश कहते हैं, ''नवंबर में विरोध शुरू होने के बाद सरकार के साथ बातचीत 12 बार नाकाम रहीं, पर 28 जनवरी के बाद तो पूरी तरह बंद हो गई. हो सकता है उन्हें (सरकार को) लगा हो कि अब ये (किसान) कानून रद्द होने तक वापस नहीं जाएंगे.'' मार्च आते-आते मुरादाबाद, पीलीभीत और लखनऊ में भी विरोध प्रदर्शन होने लगे. राकेश ने उत्तर प्रदेश और हरियाणा और बाद में छह दूसरे राज्यों की यात्राएं कीं. वे जहां-जहां गए, किसानों की भारी भीड़ उन्हें सुनने के लिए जमा हुई. वे बताते हैं, ''जब कोविड की दूसरी लहर उफान पर थी, कई किसान घर चले गए, पर प्रदर्शन नहीं रुका.''

महीने बीत गए. गतिरोध बना रहा. मगर 3 अक्तूबर को पीलीभीत जिले के लखीमपुर में एक खौफनाक घटना घटी. इसके बाद सरकार नुक्सान की भरपाई के अलावा कुछ नहीं कर सकती थी. केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्र टेनी के बेटे ने कथित तौर पर प्रदर्शनकारी किसानों की भीड़ पर अपनी कार चढ़ा दी. छह लोग मारे गए. घटना के वीडियो वायरल हो गए. किसान समुदाय गुस्से से आगबबूला हो उठा. राकेश की यह बात एक बार फिर सही साबित हुई कि मगरूर केंद्र सरकार किसानों को मारने पर आमादा है. किसान यूनियनों ने नए आंदोलनों का ऐलान कर

**''जिस तरह से पुलिस हमारे अन्नदाताओं से दुर्व्यवहार कर रही थी उसे देखकर मैं भावुक हो गया...पहले दिन से हमें एकदम स्पष्ट था कि हम वापस नहीं जाएंगे. 'कानून वापसी, घर वापसी' ही हमारा नारा था.''**

**''अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के कार्यकाल में फसलों की कीमत को लेकर हुए प्रदर्शन के दौरान मैंने जून 2002 में संसद के मुख्य प्रवेशद्वार पर ताला लगा दिया था. संयोग से वाजपेयी जी उस दिन संसद में थे. ताला और चेन को सुबूत के तौर पर लिया गया जो अब भी उस थाने में रखे हैं जहां मुझे हवालात में बंद रखा गया था''**

**ताकत बने आंसू**
राकेश टिकैत बीते साल 28 जनवरी को मीडिया से बात करते हुए रो पड़े

दिया. कई जिलों में महापंचायतें और रेल रोको अभियान भी चलाए गए. उधर किसानों के मुद्दों को लेकर लगातार अनिश्चितता के भंवर में झूल रहे पंजाब में आंदोलन सांप्रदायिक रंग लेने लगा. वहां सिख कट्टरतावाद फिर सिर उठाने लगा. केंद्र सरकार अब और आंख नहीं फेर सकती थी. खासकर जब पंजाब और उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव कुछ ही महीने दूर रह गए थे. अंत नजदीक आ गया था.

फतह के बाद इंडिया टुडे से बात करते हुए राकेश ने कहा, ''हमारे दिमाग में पहले दिन से साफ था कि वापस नहीं जाएंगे. 'कानून वापसी, घर वापसी' हमारा नारा था. हमारी लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई. अगर सरकार एमएसपी और दूसरे मामलों में अपने वायदे पूरे नहीं करती तो हम फिर विरोध करेंगे. '' किसानों को भी आंदोलन की भारी कीमत चुकानी पड़ी. विरोध प्रदर्शनों की अगुआई कर रहे संयुक्त किसान मोर्चे का कहना है कि प्रदर्शन में हिस्सा लेते हुए अलग-अलग वजहों से 700 किसानों की जानें गईं.

## खरा है संघर्ष

राकेश के लिए विरोध प्रदर्शन कोई नई बात नहीं है. बीते दो दशकों में उन्होंने कई आंदोलनों की अगुआई की. 42 बार जेल जा चुके बीकेयू प्रमुख दिग्गज किसान नेता महेंद्र सिंह टिकैत के बेटे हैं, जिन्होंने 1988 में गन्ने का दाम बढ़ाने और बिजली की दरें कम करने की मांग को लेकर अपने 2,00,000 से ज्यादा साथियों के साथ राजधानी पर धावा बोलकर नई दिल्ली को घुटनों पर ला दिया था.

टिकैत ताकतवर जाट समुदाय से ताल्लुक रखते हैं. राज्य की आबादी में इस समुदाय की हिस्सेदारी करीब 6-7 फीसद है जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में वे अच्छी-खासी 15 फीसद तादाद में हैं. बागपत, मुजफ्फरपुर, मेरठ, शामली, आगरा, अलीगढ़ और हाथरस सहित पश्चिम उत्तर प्रदेश के 20 जिलों की करीब 100 सीटों पर जाट समुदाय की अच्छी पकड़ है. 2011 में महेंद्र सिंह टिकैत के निधन के बाद बड़े भाई नरेश ने बीकेयू के अध्यक्ष की कुर्सी संभाली, जबकि राकेश ने प्रवक्ता बनकर सड़कों पर प्रदर्शन की कमान संभाली. 2018 में उन्होंने बिना शर्त कर्ज माफी, चीनी मिलों पर बकाया रकम के भुगतान और फसलों की ज्यादा कीमत की मांगों को लेकर हरिद्वार से दिल्ली तक किसान क्रांति यात्रा की अगुआई की. राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी) के प्रमुख और स्वर्गीय अजित सिंह के बेटे जयंत चौधरी, राकेश को कर दिखाने के जज्बे वाला शख्स करार देते हैं. वे कहते हैं, ''हिम्मत और गहरा जुड़ाव हो तभी आप लड़ाई को आगे बढ़ाते रह सकते हैं. यही उन्होंने किया है. इस आंदोलन में टिकैत का जबरदस्त योगदान है. ''

मुजफ्फरपुर के सिसौली कस्बे में 1969 में जन्मे राकेश ने मेरठ विश्वविद्यालय से एमए किया. फिर 1988 में कांस्टेबल बनकर दिल्ली पुलिस में भर्ती हो गए. पूरा समय बीकेयू के लिए काम करने की खातिर 1995 में उन्होंने नौकरी छोड़ दी. बीकेयू के एक वरिष्ठ सदस्य धर्मेंद्र मलिक कहते हैं, ''बीकेयू से जुड़ने के बाद उन्होंने 10 दिन से ज्यादा अपने गांव में नहीं बिताए. मैं 2000 से उनके साथ काम कर रहा हूं. किसानों से जुड़े हर मुद्दे पर वे सक्रिय रहे.'' राकेश विवाहित हैं और उनके तीन बच्चे हैं. परिवार सिसौली में ही रहता है. उनके एक करीबी सहयोगी कहते हैं कि वे खुद भी 'ताकतवर गन्ना किसान' हैं और 'मुजफ्फरनगर में उनके कई खेत' हैं. पुश्तैनी जोत के अलावा टिकैत परिवार के पास करीब 70 बीघा (42 एकड़) वह जमीन भी है, जो 1940 के दशक में स्वर्गीय महेंद्र सिंह टिकैत को महज आठ साल की उम्र में बालियान खाप का प्रमुख बनने पर समुदाय ने उपहार में दी थी.

अपने राजनैतिक अभियानों में टिकैत परिवार ने कई गलत कदम भी उठाए. शायद इसीलिए राकेश ने साफ किया कि वे उत्तर प्रदेश विधानसभा का आने वाला चुनाव नहीं लड़ेंगे, जैसा पंजाब में उनके दूसरे साथी कर रहे हैं. उन्होंने 2007 का चुनाव खतौली सीट से कांग्रेस के समर्थन से लड़ा, पर जमानत भी नहीं बचा सके. 2014 की भी यही कहानी है. अपना नाम नहीं छापने की शर्त पर आरएलडी के एक पदाधिकारी कहते हैं, ''मुजफ्फरपुर के दंगों के बाद 2013 में टिकैत ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जाट समुदाय और खापों को गोलबंद करके भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पीछे एकजुट किया. इस ध्रुवीकरण से इलाके में जाटों और मुसलमानों की एकता टूट गई.' टिकैत परिवार ने बाद में आरएलडी प्रमुख स्वर्गीय अजित सिंह से सुलह कर ली और राकेश ने 2014 का लोकसभा चुनाव अमरोहा से आरएलडी के टिकट पर लड़ा, लेकिन इस बार भी बुरी तरह हारे. बाद में टिकैत भाइयों ने माना कि भाजपा की मदद करना उनकी सबसे बड़ी गलती थी. अबकी बार राकेश ने आंदोलन का पंथनिरपेक्ष स्वरूप बरकरार रखने का खास ख्याल रखा.

## मिर्च का स्वाद पसंद है

**टिकैत को मीठी चीजें पसंद नहीं हैं जबकि हरी मिर्च उनके दोपहर के भोजन के लिए अनिवार्य हैं. उनके एक करीबी सहयोगी कहते हैं, '' टिकैत की जीवनशैली काफी साधारण है. आंदोलन के दौरान उन्होंने केवल दाल- रोटी खाई लेकिन हरी मिर्च उनके खाने का अनिवार्य हिस्सा रही ''**

बीते तीन चुनावों (2014, 2017 और 2019) में जाटों ने भाजपा के पक्ष में बढ़-चढ़कर मतदान किया. किसान आंदोलन ने जाटों की पारंपरिक पार्टी आरएलडी को इस बार इलाके में अपना दबदबा फिर हासिल करने की उम्मीद दिखाई पड़ रही है. पार्टी के मुखिया जयंत चौधरी ने बीते दो महीनों में टिकैत भाइयों सहित किसान नेताओं के साथ रैलियां की हैं. वे विभिन्न तबकों को भाजपा के खिलाफ एकजुट करने में जुटे हैं. टिकैत ने हालांकि ऐलान किया है कि वे विधानसभा चुनाव में किसी भी पार्टी का समर्थन नहीं करेंगे, मगर आंदोलन ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के राजनीतिक समीकरण बदलकर रख दिए हैं और भाजपा की राह में कांटे बिछा दिए हैं.

किसान आंदोलन को कामयाबी ऐसे वक्त मिली जब भारत एक अजीबोगरीब चौराहे पर है. उग्र राष्ट्रवाद हवाओं में तारी है और असहमति के हर स्वर को कुचल दिया जाता है. कोविड के संकट ने दूसरे बड़े विरोध प्रदर्शनों को तितर-बितर कर दिया. इनमें नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के खिलाफ हुआ आंदोलन प्रमुख था. मगर टिकैत और किसानों की जीत ने सोने से मढ़ी इस कसौटी को फिर पुख्ता कर दिया—लोकतंत्र में जनता की इच्छाशक्ति ही सर्वोपरि है और उसके आगे निरंकुश बहुमत वाली सरकारों को भी बाज दफे घुटने टेकने ही पड़ते है. ■

**आर्यन खान केस**

# खिसक गया नैतिक आधार

क्रूज शिप पर ड्रग भंडाफोड़ केस में बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान का बेटा गिरफ्तार किया गया. लेकिन यह मामला उलटा पड़ गया, जिससे जांच करने वाली एजेंसी नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की साख पर लगा बट्टा. इससे नशीले पदार्थों के सेवन से जुड़े कानूनों में संशोधन की जरूरत पर भी बहस शुरू हो गई

किरण डी. तारे

बॉलीवुड के किसी भी मनोरंजन उद्योग की तरह हिंदी सिनेमा भी अक्ल या तर्क को किनारे रख देने पर ही चलता है. इससे बॉलीवुड को हर साल दो अरब से ज्यादा मूवी टिकट बेचने में मदद मिलती है. लेकिन हाल के समय में मामला उलट गया है और फिल्मी दुनिया से जुड़े लोगों की कुछ जुनूनी किस्म की जुर्म की असली कहानियां सामने आई हैं. सबसे पहले 2020 में अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की सनसनीखेज खुदकुशी का केस आया; फिर इस साल 1990 के दशक की लोकप्रिय अभिनेत्री के पति को सॉफ्ट पोर्न बनाने के मामले में गिरफ्तार किया गया. कुछ ही हफ़्ते बाद पता चला कि एक ठग ने कई नई अभिनेत्रियों को जेवर, महंगी कारों और प्राइवेट जेट से सफर कराने का लालच देकर करोड़ों रुपए ठग लिए. ऐसे में इस साल अक्तूबर में यह नामुमकिन सा लगा कि बॉलीवुड के सुपरस्टारों में से एक का सबसे बड़ा बेटा मादक पदार्थों के काले कारोबार में शामिल हो सकता है.

चौबीस साल के आर्यन खान ऐसी उम्र में हैं जब ज्यादातर सितारों के बच्चे महानता के बोझ तले दबे होते हैं. यह यान प्रक्षेपण जैसा समय होता है जो अमूमन कोई बड़े बजट की फिल्म होती है जिसके जरिए किसी स्टार का बेटा/बेटी बिना माई-बाप वाले हजारों संघर्षरत लोगों को पछाड़कर इंडस्ट्री के लांचिंग पैड से नई उड़ान भरता हैं. लगता है कि युवा खान की किस्मत में इसी तरह की शुरुआत लिखी थी. इंडस्ट्री के शाही घराने में पैदा हुए आर्यन पहले ही कभी खुशी कभी गम (2000) में अपने वालिद शाहरुख खान के बचपन का किरदार निभा चुके थे. उन्होंने 2010 में राज्य स्तरीय ताइक्वांडो में स्वर्ण पदक जीता, 2019 में द लायन किंग के हिंदी संस्करण में सिंबा के पात्र के लिए आवाज दी. 2020 में यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया के स्कूल ऑफ सिनेमैटिक आर्ट्स से डिग्री हासिल की. लेकिन शोहरत से उनकी भेंट अलग तरह से हुई.

आर्यन और उनके बचपन के दोस्त अरबाज मर्चेंट 2 अक्तूबर को मुंबई के बालार्ड पायर से एक क्रूज लाइनर पर सवार होने वाले थे. क्रूज कॉर्डेलिया गोवा जाने वाला था. केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत काम करने वाले नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) को सूचना मिली थी कि कॉर्डेलिया में रेव पार्टी होगी. मर्चेंट 27 संदिग्धों में शुमार था और उसने 80,000 रु. में टिकट खरीदा है और एजेंसी की उसी में दिलचस्पी थी. एनसीबी अधिकारियों का कहना है कि गिरफ्तारी के समय मर्चेंट के जूतों में मादक पदार्थ भरा पाया गया. आर्यन को भी हिरासत में लिया गया, कथित ड्रग्स रखने के इल्जाम में करीब आठ घंटे पूछताछ करने बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया.

इस कांड के कारण फिल्म उद्योग में ड्रग्स के इस्तेमाल और मादक पदार्थों के सेवन से जुड़े कानूनों में संशोधन की जरूरत पर बहस शुरू हो गई. इस भंडाफोड़ में एनसीबी की भूमिका पर भी सवाल उठने लगे. इन सवालों में किरण गोसावी को मुख्य गवाह बनाने की एजेंसी की पसंद भी शामिल था. पुणे पुलिस को धोखाधड़ी के दो मामलों में गोसावी की तलाश थी. एनसीबी के एक गवाह प्रभाकर सैल ने बाद में आरोप लगाया कि एजेंसी के सेलेब्रिटी जोनल डायरेक्टर समीर वानखेड़े ने उन्हें सादे कागज पर दस्तखत करने के लिए मजबूर किया था. सैल ने यह भी इल्जाम लगाया कि उसने गोसावी को सैम डि'सूजा नामक व्यक्ति से वानखेड़े को देने के लिए आठ करोड़ रु. का इंतजाम करने को कहते सुना था. इस इल्जाम के बाद पुलिस ने वानखेड़े खिलाफ जांच शुरू कर दी. इस तरह यह केंद्र और राज्य सरकार के बीच टकराव का एक और बिंदु बन गया.

यह विवाद इंडस्ट्री के लिए अजीब वक्त पर आया. कोविड-19 और लॉकडाउन ने पिछले साल सारे थिएटर बंद करा दिए और पिछले दो साल बॉलीवुड के लिए अब तक सबसे खराब रहे हैं. अपनी मनोरंजन की भूख को मिटाने के लिए दर्शकों के ओटीटी की ओर मुड़ जाने से मनोज बाजपेयी और पंकज त्रिपाठी जैसे 'चरित्र अभिनेताओं' की छाया ने खान की उस त्रिमूर्ति को

पुनीत परांजपे/एएफपी

**< अंदर-बाहर**
अपनी जमानत पर एक सुनवाई के लिए मुंबई की एक अदालत पहुंचे आर्यन

आगोश में ले लिया जिसने दो दशक से भी ज्यादा समय से दशर्कों को सम्मोहित कर रखा था. आर्यन मामले से पहले सुशांत सिंह राजपूत की खुदकुशी से जुड़े मादक पदार्थों के मामले की जांच वानखेड़े ने की थी.

लेकिन कुछ ही रोज के अंदर इस मामले में कई मोड़ आ गए. पुलिस जांच में वानखेड़े के खिलाफ सैल के इल्जाम बेबुनियाद पाए गए. लेकिन उन्हें इस बात के सबूत जरूर मिले कि शाहरुख खान की सेक्रेटरी पूजा डडलानी 25 लाख रु. सैम डि'सूजा को देने की तैयारी कर रही थीं— यानी आर्यन की रिहाई के लिए तय हुई रकम 50 लाख रु. की पहली किस्त. नोटों का बैग गोसावी को दिया जाना था जो इसे वानखेड़े की तरफ से लेने का स्वांग रच रहा था. पुलिस ने पाया कि गोसावी झूठ बोल रहा है—गोसावी ने इस तरह की कोई मांग नहीं की थी. डि'सूजा ने पुलिस को दिए एक बयान में पैसे के लेनदेन का पूरा ब्योरा दिया. मजेदार बात यह है कि पुलिस ने इस लेनदेन के बारे में अभी तक डडलानी और शाहरुख खान से कोई पूछताछ नहीं की है. एक और लोचा जिसे सुलझाया नहीं गया है—एनसीबी ने आर्यन के व्हाट्सऐप चैट हासिल करने का दावा किया जिसमें कथित तौर पर उन्होंने किसी दोस्त से मादक पदार्थों के बारे में पूछा था. उसने सबसे पहले यह कहा कि आर्यन के पास कोई मादक पदार्थ नहीं मिला. बाद ने बयान बदलकर कहा कि उनके पास से 'कमर्शियल क्वांटीटीज' (व्यावसायिक मात्रा) में मादक पदार्थ मिले. फिर एजेंसी ने उन पर शहर में ड्रग्स की सप्लाइ की साजिश का इल्जाम मढ़ दिया.

वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि एनडीपीएस कानून का सुधारवादी नजरिया दरकिनार किया गया और एजेंसी बड़ी मछलियों पर ध्यान नहीं दे रही है. उन्होंने कहा, ''अगर बेहद कम स्टाफ और काम के बोझ तले दबी एनसीबी को ऐसे व्यक्तिगत मामलों से जूझना पड़ रहा है तो मुझे लगता है कि देश में बढ़िया मादक पदार्थ नियंत्रण सिस्टम चलाने की कोई संभावना नहीं है.'' बॉम्बे हाइकोर्ट ने आर्यन और अरबाज को 28 अक्तूबर को जमानत पर रिहा कर

## आर्यन खान के खिलाफ मामला आखिर क्यों कमजोर हुआ

- एनसीबी इस बात के सुबूत नहीं मुहैया करा पाई कि आर्यन खान और अरबाज मर्चेंट ने रेव पार्टी में ड्रग्स सप्लाई करने के लिए साजिश रची थी
- एजेंसी यह भी साबित नहीं कर पाई कि आर्यन के पास ड्रग्स था या उसने इसका सेवन किया था
- एनसीबी ने आरोपियों का चिकित्सा परीक्षण भी नहीं कराया जिससे यह साबित हो कि उन्होंने नशे का सेवन किया था, यह बात कोर्ट ने भी कही
- बॉम्बे हाईकोर्ट ने कहा कि आर्यन का स्वीकारोक्ति वाला बयान अदालत में मानने योग्य नहीं है
- हाईकोर्ट ने व्यवस्था दी कि आर्यन की व्हाट्सऐप चैट से कुछ भी आपत्तिजनक नहीं मिला है और इसे कोर्ट में साक्ष्य नहीं माना जा सकता

दिया. लेकिन इस स्टार पुत्र को आर्थर रोड जेल में करीब एक महीना गुजारना पड़ गया. आभासी सबूत पर आधारित एनसीबी का मामला जल्दी ही अदालत में खुल गया. हाइकोर्ट ने यह कहते हुए कि उसे आर्यन के व्हाट्सऐप चैट में ''कुछ भी आपत्तिजनक'' नहीं लगा, एक अहम नजीर पेश कर दी कि नार्कोटिक्स के मामले में मैसेजिंग सर्विस पर चैट को सबूत नहीं माना जा सकता.

लेकिन यह विवाद यहीं नहीं थमा. अल्पसंख्यक कल्याण के राज्य मंत्री नवाब मलिक ने वानखेड़े पर हमला बोला कि उन्होंने जन्म प्रमाणपत्र में हेरफेर किया और धर्म गलत बताया. मलिक ने पुलिस के सामने यह दावा करते हुए दस्तावेज पेश किए कि वानखेड़े मुसलमान हैं, जिन्होंने अनुसूचित जाति कोटे (आरक्षण अल्पसंख्यक समुदाय को हासिल नहीं है) के तहत आइआरएस की नौकरी हासिल की. मलिक ने यह भी आरोप लगाया कि उनके पास नवी मुंबई में एक बार है. वानखेड़े ने बार का लाइसेंस तभी हासिल कर लिया था जब वे बालिग भी नहीं थे. जवाब में वानखेड़े का कहना है कि उस बार के मालिक उनके पिता हैं, जो सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारी हैं और उनके पास बार की केवल पावर ऑफ एटॉर्नी है. आबकारी विभाग अब इस मामले की तफ्तीश कर रहा है. उन्होंने अपना जन्म प्रमाणपत्र सार्वजनिक किया जिसमें उन्हें एससी समुदाय का बताया गया है और अपने रिश्तेदारों से अपनी जाति प्रमाणपत्र की गवाही दिलाई.

इससे पहले वानखेड़े की सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद फिल्मी दुनिया में कथित मादक पदार्थ सेवन के खिलाफ कार्रवाई सुर्खियों में थी. पिछले साल सितंबर में उन्होंने ड्रग्स कारोबारियों से संबंध रखने के लिए दीपिका पादुकोण, श्रद्धा कपूर और सारा अली खान सरीखी सेलेब्रिटी से पूछताछ की.

विवाद की वजह से एजेंसी ने आर्यन खान समेत छह मामलों की जांच के लिए विशेष जांच दल बनाया है. वानखेड़े को जांच प्रमुख के पद से हटा दिया गया. एनसीबी में उनका कार्यकाल दिसंबर में पूरा हो गया और बहुत मुमकिन है कि 2008 बैच के इस आइआरएस अफसर का नार्कोटिक्स एजेंसी से तबादला कर दिया जाए. अगर उन्हें मुंबई से बाहर किया जाता है तो इसमें आर्यन खान मामले का कम योगदान नहीं माना जाएगा. यह मादक पदार्थों के उजागर करने के मामले में कई अप्रत्याशित मोड़ों में से एक होगा. ■

**बिमल पटेल**

# सत्ता से जुड़े वास्तुकार

अहमदाबाद के वास्तुकार कुछ ऐसी नामीगिरामी परियोजनाओं से जुड़े हैं जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिल के करीब हैं. इनमें हाल का सबसे चर्चित काशी विश्वनाथ धाम गलियारा और सेंट्रल विस्टा का विवादित कायाकल्प भी शामिल है. सेंट्रल विस्टा की बढ़ती आलोचना के बीच पटेल इस परियोजना के प्रवक्ता भी बन गए

काइ फ्रीज़

बीते दो साल बेशक यादगार रहे, पर इनमें मोटे तौर पर किसी ऐतिहासिक महत्व के निर्माण कार्य का जश्न नहीं मनाया गया. अपवाद थीं तो ऐसी कुछ परियोजनाएं जो प्रधानमंत्री के दिल के करीब हैं. अयोध्या में राम मंदिर तो है ही. काशी विश्वनाथ धाम गलियारा भी है, जिसका हाल में टेलीविजन पर भारी धूमधाम से उद्घाटन प्रसारित हुआ. और सेंट्रल विस्टा, राजधानी के बीचोबीच इसके निर्माण स्थल पर काम की गहमागहमी तब भी बनी रही जब शहर लॉकडाउन में बंद था और बगल में संसद स्थगित थी. इन परियोजनाओं को बलपूर्वक आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका को राष्ट्रीय फलक पर उभारने के लिए जहां नरेंद्र मोदी ने तस्वीर खिंचवाने का कोई मौका नहीं छोड़ा, बाद की दो परियोजनाओं का डिजाइन तैयार करने के लिए जिम्मेदार अहमदाबाद के वास्तुकार बिमल पटेल भी सुर्खियों में आ गए.

प्रधानमंत्री की राजनैतिक प्रतिष्ठा से जुड़ी चर्चित परियोजनाओं से जुड़े होने ने (पहले उन्हें अहमदाबाद में साबरमती रिवरफ्रंट के पुनर्विकास, गांधीनगर में मुख्यमंत्री के सचिवालय और दिल्ली में भाजपा के नए मुख्यालय के इंटीरियर डिजाइन का काम भी मिला था) पटेल को पेशेवर शोहरत के साथ विवाद की सौगात भी दी. सेंट्रल विस्टा के कायाकल्प पर कई आम दिल्ली वालों के अलावा खासकर वास्तुकारों, धरोहर और शहरी नियोजन से जुड़े पेशेवरों के एक मुखर तबके की त्यौरियां चढ़ गईं. परियोजना पर लोगों का ध्यान सबसे पहले सितंबर 2019 में गया, जब ठेके के लिए जरूरी 50 लाख रुपए का 'बयाना' देने की हैसियत रखने वाले कुछ चुनिंदा वास्तुकारों के प्रस्तावों का एक वीडियो लीक हो गया. कुछ वक्त बाद जब ऐलान हुआ कि ठेका पटेल को मिला है, तो भारी राहत की सांस ली गई कि कुछ अन्य खौफनाक प्रस्तावों (इशारा हफीज कॉन्ट्रैक्टर की ओर था) को ठुकरा दिया गया है. फिर विजेता के डिजाइन का पैमाना और महत्वाकांक्षा समझ में आते ही बेचैनी बढ़ गई. एचसीपी के वीडियो में राजपथ के दोनों ओर कम से कम 10 नई आठ-मंजिला दफ्तरी इमारतें बनाने और रायसीना पहाड़ी की ढलान पर मौजूद सारी इमारतें गिराने का प्रस्ताव था. एक नया तिकोना संसद भवन और प्रधानमंत्री व उपराष्ट्रपति के आवास सेंट्रल विस्टा के फलक में जोड़े जाने थे और उसके साथ एक नया पीएमओ भी, जबकि ऐतिहासिक सेंट्रल सेक्रेटेरिएट और संसद भवन को संग्रहालय के मकसद से इस्तेमाल किया जाना था.

सरकार और उसकी तरफ से बदस्तूर बोलने वालों ने सबसे ऐतिहासिक सार्वजनिक जगहों में से एक को लेकर पनपते आक्रोश (कम से कम हेरिटेज हलकों में) को थामने की कम ही कोशिश की, वहीं पटेल काफी मुस्तैदी से परियोजना के प्रवक्ता बनकर उभरे. उनकी यह मुस्तैदी कम से कम शुरुआत में संभावित प्रतिकूल जनमानस का ध्यान बंटाने में असरदार भी रही. बर्कले से शिक्षित, शालीन, मृदुभाषी और समावेशी संस्कृति के समर्थक पटेल ने तत्काल यह स्वीकार करके लाजवाब कर दिया कि योजना पर और ज्यादा सार्वजनिक विचार-विमर्श होना चाहिए था और उनकी शुरुआती डिजाइन के कुछ हिस्से (जैसे राष्ट्रीय संग्रहालय की इमारत को गिराना) गलत थे. अलबत्ता जल्द जाहिर हो गया कि उनका यह बेदाग आचरण महज शिष्टाचारवश था, न कि सुलह या समझौते का संकेत, आत्मसंदेह की तो बात ही

फोटोः बंदीप सिंह

## सेंट्रल विस्टा: आंकड़ों में तस्वीर

**20,000**
**करोड़ रु.**
सकल अनुमानित लागत है सभी विकास और पुनर्विकास के कामों की. सभी परियोजनाएं चरणबद्ध और क्रमिक ढंग से 2026 तक पूरी करने की योजना है

**15**
**एकड़**
रकबा है उस प्लॉट का जिस पर साउथ ब्लॉक के पास प्रधानमंत्री का नया आवास बनाया जाना है

**229.75**
**करोड़ रु.**
की फीस बिमल पटेल की फर्म एचपीसी डिजाइन को दी जा रही है लुटियन्स की दिल्ली के पुनर्विकास की योजना के लिए, जिसमें नया संसद भवन और सरकारी दफ्तर भी शामिल हैं

**900**
**सांसद**
बैठाए जा सकते हैं नए तिकोने संसद भवन में, एचसीपी की योजना के मुताबिक

**प्रधानमंत्री के राजनैतिक रसूख से जुड़ी बड़ी परियोजनाओं को अमली जामा पहनाने की वजह से वास्तुकार बिमल पटेल को शोहरत मिली है और साथ ही विवाद में भी रहे हैं**

छोड़ दें. इस पत्रिका के साथ एक इंटरव्यू में पटेल ने बेबाक अंदाज में बताया कि उनका डिजाइन कायापलट करने वाला था पर किसी भी रूप में बाधक नहीं था. वे ''किला लोगों को सौंपकर'' साम्राज्यिक ताने-बाने को लोकतांत्रिक बना रहे थे और साथ ही ''ठीक वही (करके) जो लुटियन्स ने किया होता'' शायद अपने औपनिवेशिक पूर्ववर्ती के काम को ही आगे बढ़ा रहे थे. यह मानते हुए भी कि उनकी नई इमारतें ज्यादा बड़ी और भव्य हैं, उन्हें यकीन था कि ''जब कोई दूर से देखेगा, तो यही कहेगा कि सब एक जैसी हैं.''

मगर अनुमान के मुताबिक पटेल के आलोचकों ने एडविन लुटियन्स की बजाए उनकी तुलना चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले एल्बर्ट स्पीयर से की, जो बर्लिन को महान 'जर्मेनिया' के रूप में नए सिरे गढ़ने की एडोल्फ हिटलर की अपूरित फंतासी का वास्तुकार था. मोदी के साथ काम करने के उनके इतिहास को देखते हुए पटेल इस तुलना से भले आहत हुए हों, पर ऐसा नहीं था कि निजी हमले के लिए तैयार न हों. उन्होंने कहा कि उनके डिजाइन का कुछ विरोध तो ''इस तथ्य की वजह से अतिरंजित था कि लोग सरकार को नापंसद करते हैं'' और परियोजना का इस्तेमाल ''सरकार को चोट पहुंचाने के लिए फुटबॉल की तरह'' कर रहे थे. वास्तुकार ने 2020 की शुरुआत में अपने करियर, आलोचकों और सेंट्रल विस्टा के काम पर अपने विचार वास्तुकला की प्रतिष्ठित पत्रिका *लैंडस्केप* में लंबी 'बातचीत' में व्यक्त किए. इसमें उन्होंने ''मार्क्सवादी सिद्धांत में गहरी रुचि रखने वाले'' और ''उसके प्रभाव में आने वाले'' वामपंथी छात्र से लेकर बाद में मोहभंग होने, खुद को ''नए सिरे से शिक्षित करने'' और फिर सत्ता के साथ ''रचनात्मक संवाद'' में अपना रास्ता पाने तक के अपने सफर के बारे में बताया. इसके एक खास तौर पर अर्थपूर्ण हिस्से में उन्होंने कहा: ''आप सार्वजनिक क्षेत्र में काम करना और सार्वजनिक जगहों को डिजाइन करना चाहते हैं तो सरकार के साथ काम करना पड़ेगा. आप हाथ पर हाथ धरे विलाप नहीं कर सकते... कि सियासतदानों और अफसरशाहों को अच्छे डिजाइन की समझ नहीं है... उनकी पसंद गड़बड़ है. मैं जनहित के स्वघोषित हिमायतियों और बाकायदे निर्वाचित और जनहित में फैसले लेने के लिए नियुक्त लोगों के बीच खाई पाटने की... कोशिश करता हूं.''

यह तरीका पटेल और उन्हें अपने पिता (2018 में दिवंगत जाने-माने वास्तुकार हसमुख पटेल) से मिली फर्म एचसीपी के लिए साफ तौर पर फायदेमंद रहा. एचसीपी के

एएनआइ

*परियोजना शुरू करने का वर्ष

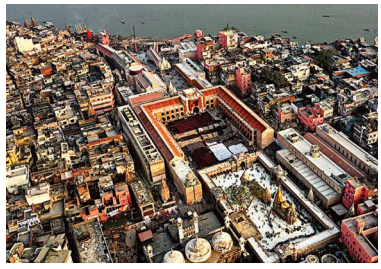

**काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर**
वाराणसी, 2014*

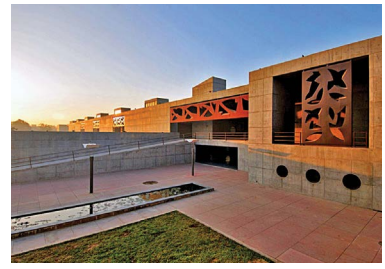

**इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट**
अहमदाबाद, 2000*

**गुजरात सेक्रेटेरिएट**
गांधीनगर, 2011*

**साबरमती रिवरफ्रंट डेवलपमेंट**
अहमदाबाद, 1998*

**साल का पेशेवर 2021**

**बिमल पटेल**

**पटेल का कहना है कि उनके डिजाइन का कुछ विरोध तो ''इस तथ्य की वजह से अतिरंजित था कि लोग सरकार को नापंसद करते हैं'' और परियोजना का इस्तेमाल ''सरकार को चोट पहुंचाने के लिए फुटबॉल की तरह'' कर रहे थे**

**पटेल का कहना है, ''सेंट्रल विस्टा का काम बहुत अच्छे ढंग से आगे बढ़ रहा है. इसके जरिए हम यह दिखाने की उम्मीद करते हैं कि भारत ऊंची गुणवत्तापूर्ण परियोजनाएं समयबद्ध ढंग से साकार कर सकता है''**

पोर्टफोलियों में ताजगी-भरी आधुनिकतावादी सांस्थानिक इमारतों से लेकर अहमदाबाद के कुलीनों के लिए आलीशान ढंग से सादगीपूर्ण घरों और शहरी भू-दृश्यों को नए सिरे से डिजाइन करने वाली विशाल परियोजनाओं के प्रभावशाली सिलसिले तक, कई चीजें हैं, जिसकी परिणति अंतत: सेंट्रल विस्टा परियोजना में हुई. उनके आलोचकों के लिए पटेल की साफगोई महज उनके कमाऊ-खाऊ अवसरवाद का ही एक और सबूत है. असल में, *लैंडस्केप* में उनके विचारों के प्रकाशन ने पत्रिका के सलाहकार संपादक को इस हद तक उकसाया कि उन्होंने विरोध में इस्तीफा दे दिया. यह शुरुआती संकेत था कि वे किस कदर ध्रुवीकरण करने वाली शख्सियत बन गए हैं. बाद के अंकों में पटेल के खिलाफ चुनिंदा दिग्गजों की लिखी तीखी आलोचनाएं छपीं. इनमें विद्वान शिव विश्वनाथन की यह जोरदार टिप्पणी भी थी: ''मुझे लगता है उनकी असल समस्या यह है कि उन्हें सत्ता का मोह है लेकिन बहसों और विवादों से खुद को बदस्तूर अलग रखना चाहते हैं. इस संदर्भ में वे लोकतंत्र का दर्जा घटाकर उसे दिखावटी शिष्टाचार में बदल देते हैं. उनकी पेशेवर सलाहियत बेशक उनके पिता से आगे है, पर उनका सामाजिकता का बोध सीमित है.''

सेंट्रल विस्टा के वास्तुकार पटेल ऐसे तानों के अभ्यस्त मालूम देते हैं. वे महामारी से पैदा व्यवधानों से भी अविचलित लगते हैं, अदालतों में सेंट्रल विस्टा परियोजना को रोकने की कोशिशों की तो बात ही छोड़ दें. जून में सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने 2-1 के बहुमत से परियोजना के हक में फैसला दिया. नवंबर 2021 में उपराष्ट्रपति आवास के विरुद्ध दायर याचिका भी खारिज कर दी गई. पूरी परियोजना पर तमाम आपत्तियों में एक यह है कि इसकी परिकल्पना, स्वीकृति और निर्माण में इतनी जल्दबाजी क्यों, लेकिन पटेल को कोई खेद या पश्चाताप नहीं है. इस पत्रिका को दिए एक संक्षिप्त बयान में उन्होंने कहा, ''हमें खुशी है कि सेंट्रल विस्टा का काम बहुत अच्छे ढंग से आगे बढ़ रहा है. इसके जरिए हम यह दिखाने की उम्मीद करते हैं कि भारत ऊंची गुणवत्तापूर्ण परियोजनाएं समयबद्ध ढंग से साकार कर सकता है.'' बेशक इसे 2024 तक पूरा करने का वादा किया गया है—यानी अगले आम चुनाव से ठीक पहले. क्लाएंट खुश होना चाहिए. ■

नीरज चोपड़ा

# स्वर्ण मानक

ओलंपिक में भारत के लिए पहला और व्यक्तिगत स्पर्धाओं में दूसरा स्वर्ण पदक जीतकर चोपड़ा ने 1.3 अरब देशवासियों को ऐसे वर्ष में सिर ऊंचा करने का मौका दिया, जब खेल में कई निराशाएं हाथ लगीं

सुहानी सिंह

फोटोः **बंदीप सिंह**
आउटफिटः **लुई विटों**ः लोकेशनः **द लोदी**, दिल्ली

# नीरज चोपड़ा

तिहास की नियति ऐसी रही कि भारत के लोग ओलंपिक में अपनी ऊर्जा और आकांक्षाएं नहीं लगा पाए. सो, आखिरी मौके पर चूकने और उम्मीदें टूटने का सिलसिला, खेल के 20 संस्करणों में एक व्यक्तिगत स्वर्ण पदक और टीम के नाते बस इकलौता स्वर्ण पदक ही हाथ लगा है, और वह भी 1980 में. बस दो दिन बाकी थे, और टोक्यो 2020 में भारत के अभियान का हश्र लंदन 2000 जैसा ही होने वाला था—छह पदक मगर एक भी स्वर्ण नहीं. तभी हरियाणा में पानीपत का 23 वर्षीय एथलीट मंच पर आया और एथलेटिक्स में भारत का पहला स्वर्ण जीतकर इतिहास बना दिया. इस तरह नीरज चोपड़ा ने न सिर्फ जैवलिन थ्रो (भाला फेंक) के खेल को लोकप्रिय कर दिया, बल्कि यह भी दिखाया कि भारतीय एथलीट के पास भारी दबाव में भी दिमागी ताकत है. उन्होंने साबित किया कि कोई गैर-क्रिकेटर भी देशवासियों में प्रेरणा, एकता और उत्साह जगा सकता है.

टोक्यो में चोपड़ा की महती उपलब्धि के पहले, वेटलिफ्टर (भारोत्तोलक) सैखम मीराबाई चानू रियो ने 2016 की हताशा से उबर कर आखिरकार ओलंपिक पदक हासिल किया. दो और महिलाओं ने हमारा सिर ऊंचा उठाया. बॉक्सर लोवलिना बोरोगोहेन ने कांस्य पदक हासिल किया और बैडमिंटन में पी.वी. संधू लगातार पदक जीतने वाली दूसरी भारतीय एथलीट बनीं. इस बार उन्हें कांस्य मिला. रियो में संधू और साक्षी मलिक (कुश्ती) में दो महिलाओं ने अपने दो पदकों से देश की लाज बचाई थी. टोक्यो में भी महिलाओं ने ही 2021 की सबसे प्रेरणादायी कामयाबियों की पटकथा लिखी.

सी.ए. भवानी देवी तलवारबाजी में देश की पहली प्रतिनिधि बनीं; गोल्फ में अदिति अशोक चार दिन तक बेहतरीन प्रदर्शन के बाद आखिर में जरा भर से चूक गईं; और महिला हॉकी टीम ने सेमीफाइनल में पहुंच कर एक सपना साकार किया, यह प्रदर्शन बेजोड़ था क्योंकि 2016 में वह सभी मैच हार बैठी थी. सुखद अनुभव में कुश्ती में रवि दहिया और बजरंग पुनिया के प्रदर्शनों का भी श्रेय है, जिससे यह दिखा कि 2008 ओलंपिक से ही भारत की खेल पदकों की कहानी आगे ही आगे जारी है.

वर्ष के आखिर में बैडमिंटन प्रेमियों को पुरुष खेलों में शानदार अनुभव हुआ. किदंबी श्रीकांत और लक्ष्य सेन ने विश्व चैंपियनशिप में क्रमशः रजत और कांस्य पदक जीता. लेकिन ओलंपिक एथलीटों ने क्रिकेट टीम इंडिया को सुर्खियों से हटा दिया. क्रिकेट की सुर्खियों में तो मैदान में यादगार प्रदर्शनों के बदले परदे के पीछे चल रहे विवाद ही छाए रहे.

## रातोरात हुए मशहूर

**› बड़ी उम्मीदें**
ओलंपिक गोल्ड मेडल जीतने का सपना साकार करने के बाद चोपड़ा अब 90-मीटर के क्लब में प्रवेश करना चाहते हैं. अब तक केवल 20 एथलीटों ने इस दूरी को पार किया है

**› रोल मॉडल**
चेकोस्लोवाकिया के भाला फेंक खिलाड़ यान जेलेजनी. चोपड़ा का कहना है, ''वे उतने लोकप्रिय नहीं थे जितना उन्हें होना चाहिए था लेकिन उनमें सबसे ज्यादा निरंतरता थी''

**› उभरता सितारा**
चोपड़ा को कम से कम 17 करोड़ रु. के नकद पुरस्कार मिले. यह उस एथलीट के लिए बड़ी रकम है, जिसे राष्ट्रीय टीम के क्रिकेटरों की तरह हर साल मोटा वेतन नहीं मिलता

**› 12**
संख्या है उन ब्रांडों की जिन्हें चोपड़ा एंडोर्स कर रहे हैं

गुरिंदर ओसान/पीटीआइ

**सातवें आसमान पर**
टोक्यो ओलंपिक में मेडल जिताऊ भाला फेंक के बाद नीरज चोपड़ा

## मील के पत्थर

- चोपड़ा ने 2016 में पोलैंड में यू20 वर्ल्ड चैंपियनशिप जीतकर अंडर-20 में नया विश्व रिकॉर्ड बनाया
- वे 2018 में जकार्ता एशियन गेम्स में गोल्ड मेडल जीतने वाले पहले भारतीय जैवलिन थ्रोवर हैं
- उन्होंने मार्च 2021 में अपना ही रिकॉर्ड तोड़कर 88.07 मीटर भाला फेंकने का नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया

**''नीरज चोपड़ा में अब तक के हमारे सबसे महान एथलीटों में से एक बनने की संभावना है. आप यह तभी कर सकते हैं जब आप अपनी पूरी क्षमता को हासिल कर लेते हैं. लिहाजा, अपने शौक का सम्मान करें''**

**—अभिनव बिंद्रा**
*ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता निशानेबाज*

भारत विश्व चैंपिनयनशिप के फाइनल में न्यूजीलैंड से हार गया और टी-20 विश्व कप में ग्रुप स्टेज में पाकिस्तान और न्यूजीलैंड से मात खाकर सेमीफाइनल में नहीं पहुंच पाया. जल्दी ही विराट कोहली ने टी-20 की कप्तानी छोड़ दी और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) ने टीम की अगुआई के लिए रोहित शर्मा को चुन लिया. बाद में शर्मा को एकदिवसीय मैचों का भी कप्तान बना दिया गया. इस फैसले पर कोहली का कहना है कि उन्हें दरकिनार कर दिया गया.

देश का सबसे लोकप्रिय खेल सितारा जब अपने फॉर्म से जूझ रहा था, देशवासियों को अपना खेल हीरो चोपड़ा में मिल गया. चोपड़ा ओलंपिक खेल गांव में पदक की बड़ी उम्मीद लेकर पहुंचे थे, लेकिन उन्होंने इस मौके को अपने ऊपर हावी होने नहीं दिया. वे ऐसे एथलीट साबित हुए, जिसे मानो मालूम था कि उनकी नियति बड़ा हासिल करने की है. आखिरकार वे अपना दमखम 2016 में यू20 विश्व चैंपियनशिप में दिखा चुके थे. अक्तूबर 2021 में इंडिया टुडे कॉनक्लेव में जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स के लिए प्रतिभा तलाश और स्पोर्ट्स एक्सीलेंस प्रोग्राम के मुखिया मनीष मल्होत्रा ने चोपड़ा को नए दौर के भारतीय एथलीट का आदर्श रूप करार दिया. उन्होंने कहा, ''उनमें जिस कदर आत्मविश्वास और अपने पर भरोसा है, वह किसी के मुकाबले बीस नहीं तो उनके बराबर जरूर हैं. इसी वजह से मैं सोचता हूं कि अगले दशक में भारतीय खेल में बेहतर हालात दिख सकते हैं.''

चोपड़ा को ओलंपिक का लंबे समय से इंतजार था. पीठ की चोट से उबरने के बाद वे 2020 में स्पर्धाओं के लिए तैयार हुए तो कोविड-19 महामारी का साया खेल आयोजनों पर पड़ा. टोक्यो का आयोजन साल भर के लिए टाल दिया गया और ज्यादातर अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाएं रद्द कर दी गईं. 2021 में धीरे-धीरे दुनिया खुली तो चोपड़ा ने भारतीय खेल प्राधिकरण सहित सरकारी अधिकारियों से अपील की कि ट्रेनिंग और स्पर्धा के लिए उन्हें अंतरराष्ट्रीय यात्राओं की सुविधा मुहैया कराई जाए. दो महीने विदेश में तैयारी में बीत गए और 7 अगस्त को उसका लाभ मिला.

87.58 मीटर के उस इकलौते भाला फेंक ने चोपड़ा की जिंदगी बदल दी. उनकी सोशल मीडिया पर फॉलोइंग आसमान छूने लगी. ब्रांडों और पत्रिकाओं के कवर के लिए वे सबसे चमकदार चेहरे बन गए. अब प्रशंसकों से घिर जाना रोजाना की बात हो गई है. लेकिन चोपड़ा इन तमाम बातों से विचलित नहीं हुए. सामान्य पृष्ठभूमि, शांत मिजाज और इंस्टाग्रम पर मजाकिया अंदाज से उनकी अपील और ज्यादा बढ़ी. फैशन के प्रति उनके लगाव वगैरह से खेल से नाता न रखने वालों के भी वे प्यारे हो गए.

उम्र अभी चोपड़ा के साथ है और पेरिस खेल आयोजन बस तीन साल दूर हैं, इसलिए वे इन वाहवाहियों से संतुष्ट होकर नहीं बैठ गए. उनमें 90 मीटर से पार थ्रो की जबरदस्त भूख है, जो कुछ ही खिलाड़ी कर पाए हैं. चोपड़ा ने इंडिया टुडे कॉनक्लेव में कहा, ''मेरी आदत है कि पदकों को एक तरफ रखकर अगले लक्ष्य के लिए जुट जाओ.'' चोपड़ा की नजर एशियाई खेलों में भी स्वर्ण पदक हासिल करने और डायमंड सर्किट लीग में शानदार प्रदर्शन करने पर है. उनके सकारात्मक रुझान और कड़ी मेहनत से यही उम्मीद है कि नतीजे सोने जैसी चमक ही बिखेरेंगे. ■

अक्षय कुमार और सान्या मल्होत्रा

# स्क्रीन को चमकाने वाले चेहरे

**अक्षय कुमार ने अपनी *बेल बॉटम* और फिर *सूर्यवंशी* से दर्शकों को फिर थिएटरों में खींचा; और सान्या मल्होत्रा ने *पगलैट* और *मीनाक्षी सुंदरेश्वर* में शानदार अदाकारी से घर पर दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया, दोनों ओटीटी पर रिलीज हुईं**

सुहानी सिंह

नवंबर 2021 में जाकर हिंदी थिएटर का कारोबार फिर से शुरू हो सका और इन सबके केंद्र में एक ही शख्स था—अक्षय कुमार. इस अभिनेता ने सबसे पहले विश्वास की छलांग लगाई और अगस्त में *बेल बॉटम* को सिनेमा हॉल में रिलीज कराया. चूंकि महाराष्ट्र के सिनेमा हॉल तब भी बंद थे और कई राज्यों में थिएटर अपनी क्षमता के 50 फीसद पर काम कर रहे थे, लिहाजा यह बहुत साहसी कदम था. इस फिल्म ने 32 करोड़ रु. का कारोबार किया, जो अक्षय कुमार की फिल्म के लिए काफी कम रकम है लेकिन इस अदाकार की कोशिश ज्यादा मानीखेज थी.

तमिल अभिनेता विजय ने इससे पहले जनवरी में *मास्टर* की रिलीज के साथ ऐसा ही साहस दिखाया था, जिसने बॉक्स ऑफिस पर 162.5 करोड़ रु. जमा किए और मजेदार बात यह है कि उसकी कमाई का ज्यादातर हिस्सा केवल तमिलनाडु से ही आया. *क्रैक, जाति रत्नालु, उप्पेना* और *वकील साब* जैसी तेलुगु फिल्मों के साथ दक्षिण का फिल्म उद्योग पहले चार महीनों में बेहतर प्रदर्शन कर रहा था. यह इस बात का संकेत है कि दर्शक

फोटो इमेजेज

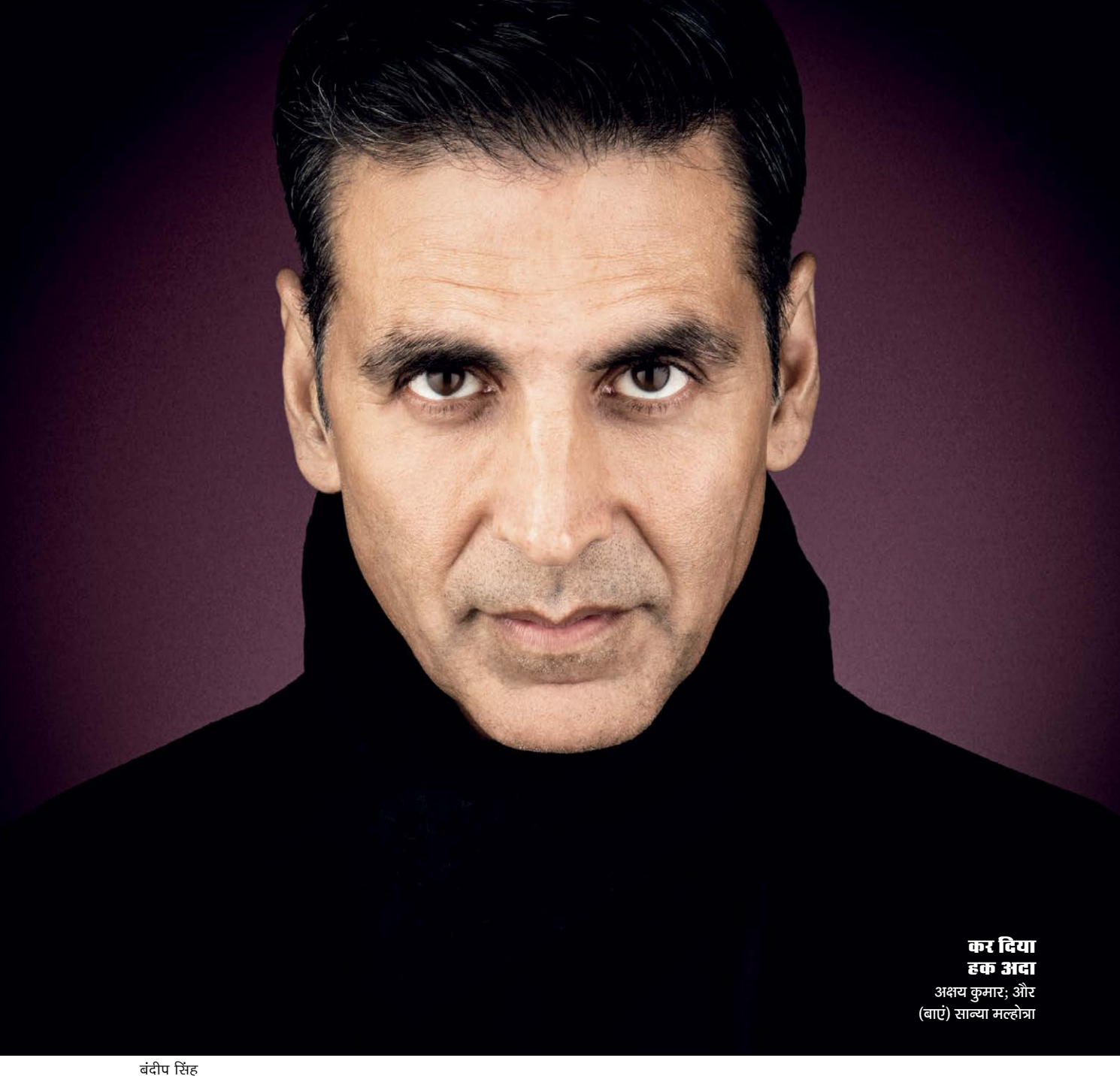

**कर दिया हक अदा**
अक्षय कुमार; और (बाएं) साान्या मल्होत्रा

बंदीप सिंह

फिल्म देखने को फिर से सामुदायिक अनुभव बनाने के लिए उत्सुक हैं. उसके बाद कोविड-19 की जानलेवा दूसरी लहर आ गई और थिएटर मालिकान एक बार फिर लॉकडाउन की मार झेलने लगे.

हिंदी भाषी क्षेत्रों में हालात खास तौर पर मायूस करने वाले थे. सलमान खान ईद पर रिलीज होने वाली अपनी फिल्म को सीधे डिजिटल पर ले गए. इस फैसले को ज्यादातर दर्शकों ने सराहा. और जिस मामले में सलमान नाकाम रहे, उसमें सिद्धार्थ मल्होत्रा ने बाजी मार ली. करगिल के शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा के जीवन पर आधारित उनकी *शेरशाह* प्राइम वीडियो पर सर्वाधिक देखी गई फिल्म बन गई. कुछ निर्माताओं ने हालांकि अपनी फिल्म की डिजिटल रिलीज से परहेज किया. जिस शख्स ने सबसे ज्यादा वक्त तक सब्र से काम लिया, उसे सबसे ज्यादा इनाम मिला. अक्षय कुमार की *सूर्यवंशी* शुरू में मार्च 2020 में रिलीज होने वाली थी लेकिन वह 5 नवंबर, 2021 को थिएटरों में पहुंची और एक हफ्ते के भीतर ही 18 महीनों में 100 करोड़ रु. पार करने वाली पहली हिंदी फिल्म बन गई. यह अक्षय कुमार के लिए अपने जाने-माने अंदाज में लौटना था, और वे महामारी के दौरान एक साथ छह फिल्मों—*बेल बॉटम, अतरंगी रे, बच्चन पांडे, रक्षा बंधन, ओएमजी2* और जैकी भगनानी निर्मित ऐक्शन थ्रिलर—की शूटिंग में मसरूफ हो गए. ऐसा करके उन्होंने यह सुनिश्चित कर दिया कि उस महामारी की मार से उबर रहे उद्योग में काम चल पड़े.

महाराष्ट्र जैसे प्रमुख बाजार, जहां अब भी सिनेमा हॉल अपनी क्षमता के 50 फीसद पर चल रहे हैं, में *सूर्यवंशी* की सफलता—भारत में 196 करोड़ रु.—वह अमृत है जिसका उत्तर और पश्चिम के बाजारों

साल के एंटरटेनर 2021

अक्षय कुमार और सान्या मल्होत्रा

# स्टार पावर

''मैं ओटीटी के जरिए जिस तरह के दर्शक और प्रशंसा चाह रही थी, वे दोनों मुझे मिल गए''

**सान्या मल्होत्रा**

### सही रास्ता

सान्या मल्होत्रा एक नोटबुक रखती हैं और वे जिन किरदारों को परदे पर जी रही होती हैं, उनके बारे में उसमें अपने विचारों को दर्ज करती रहती हैं. पगलैट के लिए उन्होंने अपने किरदार संध्या के भीतर उतरने की खातिर सन्नाटे और अकेलेपन पर कविताएं लिखी

### सान्या की रोल मॉडल

तब्बू–इस सीनियर ऐक्टर ने परदे पर जितने तरह के किरदार निभाए हैं, उसकी वजह से सान्या का प्रेरणा स्रोत बन गई हैं

**सूर्यवंशी**

2021 की सबसे बड़ी हिंदी फिल्म ने 196 करोड़ रु. की कमाई की

**बेल बॉटम**

अक्षय कुमार अभिनीत *बेल बॉटम* कोविड की दूसरी लहर के बाद सिनेमा हॉल में रिलीज होने वाली बड़े बजट की पहली फिल्म थी

के सिनेमा मालिकों को बेसब्री से इंतजार है. लेकिन अक्षय कुमार ने खुद को केवल थिएटरों तक ही महदूद नहीं रखा है; वे स्ट्रीमिंग की नाव पर भी सवार हो गए हैं. उन्होंने 24 दिसंबर को डिज्नी+हॉटस्टार की *अतरंगी रे* के रूप में अपनी दूसरी डायरेक्ट-टु-डिजिटल रिलीज की.

अक्षय कुमार जैसे सितारों को मालूम है कि ओटीटी प्लेटफॉर्म अपनी जगह बनाएंगे. ओटीटी के सबसे बड़े सितारों में मनोज बाजपेयी शामिल हैं, जो प्राइम वीडियो की द *फैमिली मैन* के सीजन 2 में अपने जोरदार फॉर्म में थे. कोंकणा सेनशर्मा को नेटफ्लिक्स की ऐंथोलॉजी *अजीब दास्तान्स* का हिस्सा *गीली पुछी* में अपनी अदाकारी का लोहा मनवाने में मात्र 30 मिनट लगे. उन्होंने अपना यही जलवा प्राइम वीडियो के ड्रामा *मुंबई डायरीज 26/11* में दिखाया.

नेटफ्लिक्स की दो रिलीज—*पगलैट* और *मीनाक्षी सुंदरेश्वर* के साथ सान्या मल्होत्रा नमूदार हुईं. उन्होंने इनके जरिए दिखा दिया कि वे किसी भी प्रोजेक्ट का नेतृत्व करने में सक्षम हैं. मार्च में *पगलैट* रिलीज होने के बाद लोकप्रिय निर्माताओं के साथ आते ही इस अभिनेत्री ने अपनी पेशेवर जिंदगी में स्पष्ट बदलाव किया और उनकी अदाकारी की बारीकियां सामने आने लगीं. उनकी आने वाली फिल्मों में मेघना गुलजार की *सैम बहादुर* है जिसमें वे विक्की कौशल के साथ हैं, राजकुमार राव के साथ *हिट*, शाहरुख खान की रेड चिलीज की फिल्म और ऐटली का प्रोजेक्ट शामिल हैं. मल्होत्रा कहती हैं, ''ओटीटी की बदौलत मैं दर्शकों का मनोरंजन करती हूं और बॉक्स ऑफिस का प्रेशर कम रहता है. नंबरों की चिंता न करना ही अपने आप में सुखद एहसास है.''

मल्होत्रा को पिछले साल उसी समय से ही नंबरों की चिंता नहीं करनी पड़ रही है जब उनके पास *शकुंतला देवी* और *लेडी* के रूप में दो डायरेक्ट-टु-डिजिटल फिल्में रिलीज हुईं. उनका कहना है, ''ओटीटी के जरिए जिस तरह के दर्शक और प्रशंसा मैं चाह रही थी, वे मुझे मिल गए.'' 29 साल की मल्होत्रा ने महज छह साल के करियर में अब तक अपेक्षाकृत गैर-पारंपरिक रास्ता अपनाया है. इसकी शुरुआत *दंगल* से हुई जिसने उन्हें ''स्क्रीन पर बिताए गए वक्त की चिंता करने'' की बजाए ''इस बात पर ध्यान देना सिखाया कि आप अपनी अदाकारी से पटकथा में क्या जोड़ सकती हैं.'' इसके अलावा वे महिलाओं के विभिन्न रूपों को भी दिखाना पसंद करती हैं, चाहे वह अपने पति के बारे में असहज कर देने वाली सचाई का पता लगाने वाली इकलौती विधवा महिला हो (*पगलैट*) या एक वधु जो अरेंज्ड-कम-लव मैरिज में दूरी लाने की कोशिश कर रही हो (मीनाक्षी सुंदरेश्वर). वे कहती हैं, ''आप जो किरदार निभाती हैं, उसमें अनजाने में आपके मूल्य झलकते हैं. हर किरदार से जुड़ाव महसूस नहीं होता. लेकिन आपको सबसे पहले अपने को समझाना होता है, तभी आप दर्शकों को राजी कर सकते हैं.''

नेटफ्लिक्स के डेटा के मद्देनजर मल्होत्रा कामयाब हो चुकी हैं. भारत में *पगलैट* कई सप्ताह तक नंबर एक थी और मीनाक्षी सुंदरेश्वरी टॉप 10 फिल्मों की सूची में छह हफ्ते तक बनी रही. यही नहीं, दुनिया की टॉप 10 फिल्मों की सूची में लगातार तीन सप्ताह तक बनी रही. सोशल मीडिया पर उनके प्रशंसक *मीनाक्षी सुंदरेश्वर* के गाने ''तितर बितर'' की धुन पर थिरकते हुए इंस्टाग्राम रील्स बना रहे हैं. दूसरी ओर, समालोचक और अवार्ड शो *पगलैट* में उनकी अदाकारी के कसीदे पढ़ रहे हैं. मल्होत्रा नए साल को लेकर उत्साहित हैं लेकिन वे किसी तरह की गफलत का शिकार होने से बचना चाहती हैं. वे बताती हैं, ''मैं हमेशा सोचती रहती हूं कि मैं ऐक्टिंग के बारे में नया कैसे सीख सकती हूं और काम के साथ प्रयोग कैसे कर सकती हूं? मैं अपने किरदार को दोहराने से डरती हूं. मुझे मालूम है कि इस लक्ष्य को हासिल नहीं किया जा सकता लेकिन बढ़िया प्रदर्शन तभी करती हूं जब खुद पर दबाव डाल रही होती हूं.'' ■

# सुकून-ए-दिल की खातिर

**वर्ष 2021 ने यह साफ कर दिया कि फनकार के तौर पर कामयाबी हासिल करने के लिए आपको गुणवत्ता और मात्रा, दोनों देनी होती है. यूट्यूबर भुवन बाम और संगीतकार तनिष्क बागची के लिए इनमें संतुलन साधना मुश्किल काम नहीं है. बरसों की मशक्कत के बाद उनकी शोहरत और मकबूलियत का दौर शुरू हो गया है**

श्रीवत्स नेवटिया

आजकल जिस तरह से कला को अक्सर 'कंटेंट' (सामग्री) कहा जाता है, ऐसे में उन पुराने अच्छे दिनों की यादों को कुरेदने का कोई तुक नहीं है जब हम कला का उपभोग करने की बजाए उसकी प्रशंसा किया करते थे. अब आपके स्मार्टफोन में उपलब्ध हर चीज—सिनेमा और संगीत से लेकर पेंटिंग और साहित्य तक—थोड़े पुराने फैशन और बिगड़ैल मालूम देते हैं. यकीनन गैजट हमारा ध्यान बंटाते हैं, लेकिन वे हमारा मानसिक पोषण भी करते हैं. 'कंटेंट' का अच्छा पहलू यह है कि यह हमेशा कुछ नया लाता रहता है.

इस नई साहसी दुनिया—जिसमें हर क्लिक और व्यू को गिना जाता है—में कमाल कर दिखाना हर कलाकार के बूते की बात नहीं है. अगर वायरल करना ही अंतिम लक्ष्य है तो आपकी अंगुलियां अस्थिर किशोरों और अगली पीढ़ी की नब्ज पर होनी चाहिए. हमारे देश के युवा कभी एक जैसी सोच वाले नहीं रहे और कोई ऐसा फॉर्मूला नहीं है जिससे उनकी पसंद-नापसंद को परखा जा सके. आज कलाकार सिर्फ एक बात पर सहमत हैं कि युवा उनकी कला और मनोरंजन को बड़े पैमाने पर और तादाद में पसंद करते हैं. यह उनकी भूख बढ़ाने वाली दावत है.

यह कहा जाना चाहिए कि टेक्नोलॉजी ने पूरे परिदृश्य को निस्संदेह लोकतांत्रिक बना दिया है. कलाकारों के लिए स्ट्रीमिंग सेवाएं और सोशल मीडिया ऐसे प्लेटफॉर्म हैं जहां आप अपनी प्रतिभा की नुमाइश करते हैं, लेकिन वे ऐसी जगहें भी हैं जहां

आप कभी-कभी आसानी से भुला दिए जाते हैं. यूट्यूब और इंस्टाग्राम पर बड़ी मुश्किल से सार्थकता बनी रहती है. आप सिर्फ एक बार खबर बनाकर चैन नहीं ले सकते. आपको बार-बार खबरें बनानी होती हैं. भले ही हमारे साल के कलाकारों—भुवन बाम और तनिष्क बागची—ने 2021 पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है, यह कहा जा सकता है कि आखिरकार इस साल उड़ान भरने से पहले तक दोनों अनवरत आगमन की स्थिति में उलझे हुए थे.

बागची *इंडिया टुडे* से बातचीत में कहते हैं, ''मेरी मेहनत अब रंग ला रही है, लेकिन हकीकत यह है कि जिस तरह दूसरे लोग अपनी कामयाबी का मजा लेते हैं उस तरह मैं नहीं ले पाया. मुझे लगातार काम करते रहना पड़ता है.'' अगर यह संगीतकार चाहते तो जितनी वाहवाही उन्हें मिल चुकी है, उतने में संतोष कर सकते थे. वे 2021 में 'लुट गए' और 'रातां लंबियां' की वजह से बिलबोर्ड के 'ग्लोबल एक्सक्लू. यूएस' चार्ट में पहुंच गए. वे म्यूजिक स्ट्रीमिंग ऐप गाना पर 1.2 अरब स्ट्रीम्स के साथ सबसे ज्यादा सुने जाने वाले कलाकार थे. दिसंबर के आखिरी हफ्ते में यूट्यूब पर उनके वीडियो 'डांस मेरी रानी' को चौबीस घंटे के अंदर दो करोड़ बार देखा गया. यह साफ है कि बागची ने 2021 को उसका साउंडट्रैक दिया.

भुवन बाम ने भी अहम काम किया. उन्होंने खराब साल के आखिर में अपने *ढिंडोरा* से न केवल हमें मुस्कराने की वजह दी बल्कि उन्होंने पेड ओटीटी प्लैटफॉर्म का विकल्प चुनने की बजाए उस शो को यूट्यूब पर मुफ्त उपलब्ध कराया. उनका कहना है, ''मुझे इस हकीकत पर फख्र है कि मेरा कंटेंट लगभग हमेशा मुफ्त उपलब्ध होता है. लेकिन साफ कहूं तो मैंने इस बारे में सोचना छोड़ दिया है कि पैसे के लिए मैं क्या करता हूं. जितना ज्यादा मैं काम करता हूं, किसी बड़े निर्देशक के लिए मुझे देखकर यह कहने का अवसर उतना ही होता है कि 'यह कुछ बड़े काम के लिए उसके बारे में सोचने का वक्त है.' मैं अब इस तरह सोचता हूं.'' *ढिंडोरा* के आठ एपिसोड को कुल मिलाकर 30 करोड़ से ज्यादा बार देखा जा चुका है.

बाम ने 2015 में अपना यूट्यूब चैनल 'बीबी की वाइन्स' औपचारिक रूप से शुरू किया. टेक्नोलॉजी की भाषा में कहें तो अपने फोन के फ्रंट कैमरे से उन्होंने जो वीडियो शूट किए वे बुनियादी किस्म के थे—उन्होंने ट्राइपॉड का भी इस्तेमाल नहीं किया—लेकिन उस सादगी वाले प्रोडक्शन में बाम की प्रतिभा और पटुता छुपी हुई थी. यह अभिनेता कई तरह की भूमिकाओं का मजा लेता लगता था. उन्होंने अपने लिए 19 किरदारों को गढ़ा था. वे कहते हैं, ''यह धीमे-धीमे चलने वाली प्रक्रिया थी. लोगों को सिर्फ एक या दो किरदार अच्छे नहीं लगे, उन्हें सब अच्छे लगते थे. इसी वजह से मुझे अपनी वंशावली बनाने का विचार सूझा.'' बाम बताते हैं कि *ढिंडोरा* के साथ ही वे अपने किरदारों—माता जानकी, पिता बबलू, टीटू मामा, बांचो—को अपने कमरे से बाहर ले जाकर देखना चाहते थे कि वे कितना दूर जा सकते हैं. ''यह काम मुश्किल होता लेकिन मैं आजमाना चाहता था.''

*ढिंडोरा* में बाम ने वीएफएक्स का प्रयोग किया है. आपको लगेगा कि करीब एक दर्जन किरदार को जीने वाला अभिनेता जबरदस्त होगा लेकिन बाम हर किरदार में भद्रता और शौक डालकर उसे बेहद आकर्षक बना देते हैं. इससे भी बढ़कर शायद उन्होंने टेक्नोलॉजी और दर्शकों के मामले में ऐसी नजीर कायम कर दी है जिसकी बराबरी करना दूसरे यूट्यूब कंटेंट क्रिएटरों के लिए मुश्किल होगा. बाम को कामयाबी आसानी से नहीं मिली. उन्होंने हमेशा अपने मानकों को ऊंचा कर दिया.

बाम के 2.49 करोड़ सब्सक्राइबरों के मुकाबले कैरी मिनाटी (3.37 करोड़ सब्सक्राइबर) जैसे दूसरे यूट्यूबरों के पास ज्यादा ऑनलाइन फॉलोइंग है लेकिन ताज्जुब है कि बाम का नाम घर-घर में है. वीर दास और मुनव्वर

## धुन बनाने की धुन

**1.2 अरब**
बार तनिष्क बागची के गीत को 2021 में गाना पर बजाया गया

**1 अरब**
व्यू यूट्यूब पर रिकॉर्ड समय में आए 'लुट गए' पर

**2 करोड़**
बार यूट्यूब पर देखा गया 'डांस मेरी रानी'

''काम ज्यादा होने की वजह से मैं तेजी से काम करने के लिए खुद को प्रशिक्षित कर रहा हूं''
**तनिष्क बागची**

## स्वभाव के अनुरूप

**2.49 करोड़**
है उनके यूट्यूब चैनल के सब्सक्राइबर की संख्या

**30+ करोड़**
व्यू मिले हैं *ढिंडोरा* को

**19**
किरदारों का रोल निभाते हैं भुवन

''साफ कहूं तो मैं कॉमेडियन नहीं हूं. कॉमेडियन को हमेशा सतर्क रहना पड़ता है''
**भुवन बागची**

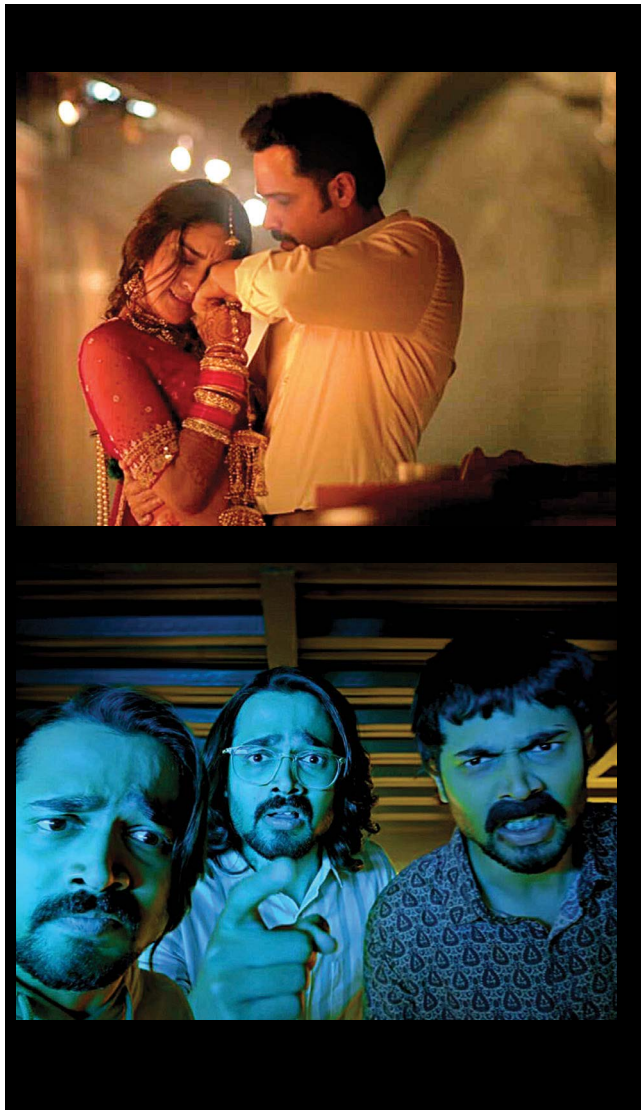

**चल पड़ा** तनिष्क बागची के म्यूजिक वीडियो 'लुट गए' का दृश्य (बाएं), और *ढिंडोरा* में भुवन बाम के विभिन्न किरदार

फारूकी सरीखे कॉमेडियन के उलट बाम अविवादास्पद हैं. मिसाल के तौर पर *ढिंडोरा* सामाजिक व्यंग्य है, हां, लेकिन इसमें विवादास्पद टिप्पणी नहीं की जाती. बाम अपनी तरफ से जोर देकर कहते हैं कि वे कॉमेडियन नहीं हैं. ''अगर मैं आपके साथ महज 10 मिनट बात करूं तो मैं आपको बिल्कुल पका डालूंगा. मुझे लगता है कि मुझे मजाक की समझ है. लेकिन साफ कहूं तो मैं कॉमेडियन नहीं हूं. कॉमेडियन को हमेशा सतर्क रहना पड़ता है. कॉमिक्स के लिए मंच पर मौजूदगी जरूरी है.''

स्टैंड-अप कॉमेडियन जाकिर खान 2016 से ही बाम के करियर को देख रहे हैं और वे उनकी कामयाबी का राज समझने में हमारी मदद करते हैं: ''उनकी खूबसूरती इसी में है कि वे बहुत व्यावहारिक हैं. कलाकार के नाते वे खुद को काफी खोजते और विस्तार देते हैं. वे कभी नियमों का उल्लंघन नहीं करते. उनमें सीखने की गजब की क्षमता है. मजाकिया होना बाद में आता है. लोगों को अपने साथ हंसाने के लिए जरूरी है कि वे आपको पसंद और प्यार करें. मेरी नजर में भुवन बाम का यही जादू है.'' पसंद के अलावा, खान का मानना है कि बाम अपनी दृढ़ता की वजह से दूसरों से अलग हैं. *ढिंडोरा* के रिलीज से कुछ महीने पहले कोविड की दूसरी लहर में उनके माता-पिता का देहांत हो गया. ''इतने बड़े निजी नुक्सान के बावजूद जिस तरह से उन्होंने वापसी करके *ढिंडोरा* पीटा, उसकी वजह से सब उनके साथ हो गए.''

सत्ताइस वर्षीय बाम का कहना है कि वे अपने माता-पिता के देहांत के बाद दिल्ली में नहीं रह सके. ''मैं अगले ही दिन मुंबई निकल गया. मैं उसी घर में नहीं रह सकता था. मुझे नहीं मालूम कि मैंने किस तरह संतुलन साधा, लेकिन किसी तरह सध गया. मुझे खुशी है कि *ढिंडोरा* ने मुझे इतना मसरूफ रखा कि मैं अपने नुक्सान की हद के बारे में सोच नहीं सका.''

तनिष्क बागची के भी पिता का 2020 में देहांत हो गया. वे कहते हैं, ''मेरे पिता नंदकुमार बागची आर.डी. बर्मन, सत्यजित राय और सलिल चौधरी के साथ काम करते थे. वे (स्पैनिश) गिटार बजाते थे और मेरी मां हवाइयन गिटार बजाती थीं. मुझे लगता है कि ईश्वर ने मेरे पिता और मां के प्रयासों की वजह से मुझे मुंबई लाने की योजना बनाई थी. मेरे माता-पिता अपने जीवन में जो हासिल नहीं कर सके मैं उनकी ओर से हासिल करूंगा.''

कोलकाता में बड़े होते हुए बागची को मालूम था कि बड़ी लीग में खेलने के लिए उन्हें मुंबई जाना है. शुरू के वर्षों में इस शहर में बागची ने जमकर मेहनत की. *तनु वेड्स मनु रिटर्न्स* (2015) के गाने 'बन्नो' से बागची को पहचान मिली लेकिन *ओके जानू* में 'हम्मा सांग' से चर्चा शुरू हो गई. ए.आर. रहमान के क्लासिक 'हम्मा हम्मा' को बागची ने ऐसे संस्करण में पेश किया जिसे रहमान ने भी मान लिया.

इकतालिस वर्षीय बागची का कहना है, ''वह गाना काम कर गया, और उसके बाद—नुसरत फतह अली खान और रहमान सर जैसों के—अपने पसंदीदा गानों को नई आवाज में नई पीढ़ी के लिए पेश करना मेरा मकसद बन गया.'' वे चाहते थे कि उनके नायकों के गानों को क्लबों और नए साल की पार्टियों में फिर से बजाया जाए. पिछले कुछ वर्षों में बागची की पुनर्रचनाओं—'तम्मा तम्मा', 'मेरे रश्के क़मर', 'मसकली 2.0' को नकली बताकर उनकी आलोचना की गई लेकिन आंकड़े कुछ अलग ही कहानी बयान करते हैं.

इसी साल रिलीज हुआ 'लुट गए' 1983 के नुसरत फतह अली खान के हिट गाने का नया संस्करण है. यह यूट्यूब पर सबसे तेजी से एक अरब व्यू का आंकड़ा पार करने वाला हिंदी गाना बन गया. बागची का कहना है, ''ये गाने मेरे लिए सफर की तरह हैं. इनके जरिए मैं लेजेंड तक पहुंचने की कोशिश करता हूं और मेरे गाने किसी न किसी तरह इसमें मेरी मदद करते हैं.'' बागची ने 200 से ज्यादा गाने तैयार किए हैं और आपको हर मूड के लिए एक गाना मिल जाएगा. ''मिसाल के तौर पर 'रातां लंबियां' को लीजिए. मुझे मालूम था कि यह कोई डांस सांग नहीं है लेकिन मुझे यह भी मालूम था कि यह इतिहास रचेगा. जब दिल को छूने वाले गाने पसंद किए जाते हैं तो मुझे लगता है कि शायद मैं कामयाब हो गया हूं.''

यह अजीब लगता है कि ऐसे साल में जब बॉलीवुड के दूसरे संगीतकार सार्थक बने रहने के लिए संघर्षरत हैं, बागची के पास 2023 तक सांस लेने की भी फुरसत नहीं है. बाम की तरह उन्होंने भी यकीनन कामयाबी की कुंजी हासिल कर ली है. ■

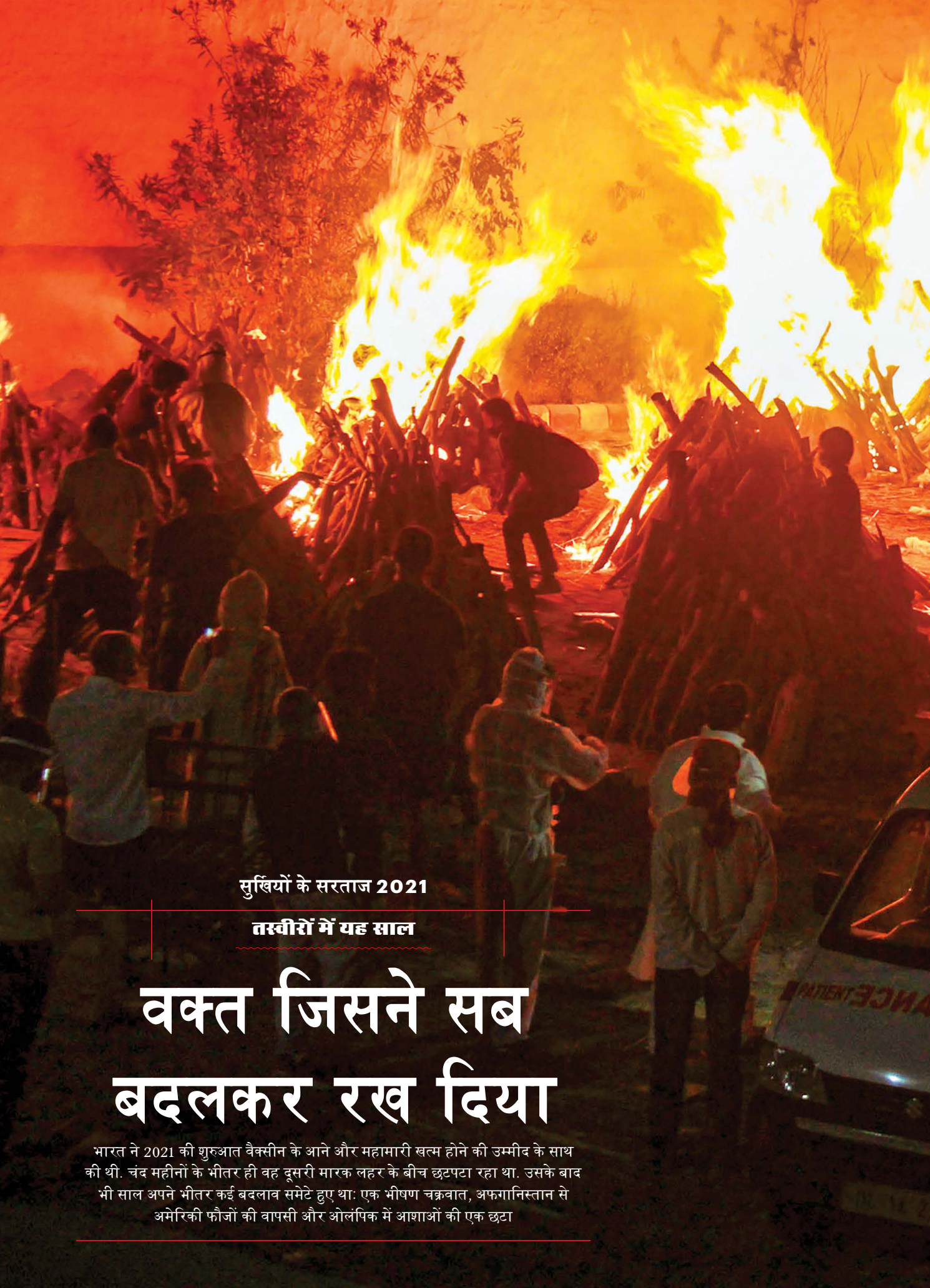

सुर्खियों के सरताज 2021

तस्वीरों में यह साल

# वक्त जिसने सब बदलकर रख दिया

भारत ने 2021 की शुरुआत वैक्सीन के आने और महामारी खत्म होने की उम्मीद के साथ की थी. चंद महीनों के भीतर ही वह दूसरी मारक लहर के बीच छटपटा रहा था. उसके बाद भी साल अपने भीतर कई बदलाव समेटे हुए था: एक भीषण चक्रवात, अफगानिस्तान से अमेरिकी फौजों की वापसी और ओलंपिक में आशाओं की एक छटा

# गाफिल हुए और चुकाई बड़ी कीमत

कोविड-19 से जान गंवाने वालों की गुरुग्राम के मदनपुरी श्मशान गृह में 26 अप्रैल को सामूहिक अंत्येष्टि का दृश्य. भारत में उसी महीने के शरू में आई कोविड की दूसरी लहर बेहद मारक साबित हुई. देखते-देखते देश भर के अस्पताल ऑक्सीजन और दूसरी जरूरी मेडिकल चीजों के अभाव से त्राहिमाम करने लगे

पीटीआइ

रॉयटर

एएफपी

## अपनों पर ही घात

छह दिसंबर को नगालैंड के मोन जिले में 14 नागरिकों के अंतिम संस्कार के लिए जमा सैकड़ों लोग. दो दिन पहले भारतीय विशेष सुरक्षा बलों ने उन्हें उग्रपंथी होने के अंदेशे में सिलसिलेवार की गई कार्रवाइयों में उन्हें मार डाला था

## लगवा कर रहेंगे टीका

भारत में आधिकारिक रूप से कोविड-19 टीकाकरण की शुरुआत 16 जनवरी को हुई. उसके बाद फ्रंटलाइन वर्कर, ज्यादा बीमार, 45-60 और अधिक उम्र वालों जैसे कई चरणों में टीकाकरण देश भर में आगे बढ़ता गया. स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, अभी तक 58.6 करोड़ भारतीयों को टीके की दोनों खुराक लग चुकी है. मई में अहमदाबाद के एक टीका केंद्र पर कारों में कतारबद्ध होकर अपनी बारी का इंतजार करते लोग

चंद्रदीप कुमार

## कब्जे में लाल किला

केंद्र सरकार के कृषि सुधारों के खिलाफ किसानों के आंदोलन ने भारत के 72वें गणतंत्र दिवस पर 26 जनवरी को हिंसक रुख अख्तियार कर लिया. पूर्व निर्धारित ट्रैक्टर रैली में शामिल प्रदर्शनकारियों के एक समूह ने एकाएक रास्ता बदला और दिल्ली पुलिस के तय किए रूट से हटकर लाल किले जा पहुंचा. वहां किले की प्राचीर पर चढ़कर उन्होंने किसान संगठनों और सिख निशान साहब का झंडा फहराया. दिल्ली में दूसरी भी कई जगहों पर उस दिन उपद्रव हुए थे

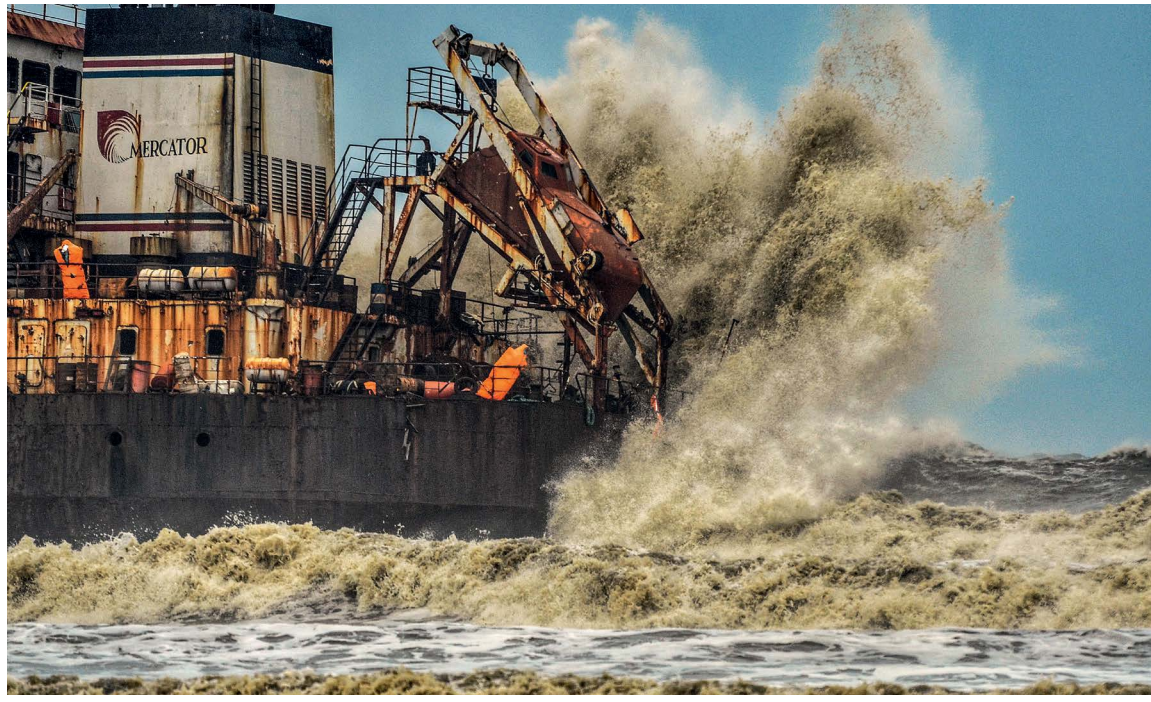


पीटीआइ

## सावधान! आया तूफान

ताउते चक्रवात के शुरुआती दिनों में मंगलूरु के पास समुद्र में शुरू होती उथल-पुथल. ज्ञात इतिहास में यह भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर टकराने वाले सबसे शक्तिशाली चक्रवातों में से था. ताउते भारत के पश्चिमी समुद्र तट के सहारे आगे बढ़ते हुए 15 और 16 मई तक काफी शक्तिशाली बन गया और 17 मई को गुजरात में भूभाग से टकराया. उसके बरपाए कहर में सैकड़ों लोगों की जान गई और लाखों लोग बेघर हो गए

தமிழ்
தளபதி
தயாநிதி மாறன்

## भव्य हुई काशी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी में 800 करोड़ रु. की लागत से तैयार काशी विश्वनाथ कॉरिडोर नाम की धार्मिक पुनर्विकास योजना का 13 दिसंबर को लोकार्पण किया. विकास के इस उपक्रम के तहत काशी विश्वनाथ मंदिर का दायरा 3,000 वर्ग फुट से बढ़कर 5,00,000 वर्ग फुट हो गया. अयोध्या में चल रहे भाजपा के राम जन्मभूमि मंदिर विकास कार्यक्रम के साथ-साथ यह भी उत्तर प्रदेश के 2022 के विधानसभा चुनावों में पार्टी का एक बड़ा चुनौवी ओजार बनने वाला है

## अपूरणीय क्षति

आठ दिसंबर को कुनूर (तमिलनाडु) के पास देश के सर्वोच्च सैन्य अफसर चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत (63) का हेलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर से पूरा देश सन्न रह गया. उन्होंने भारत के रक्षा तंत्र को आधुनिक बनाने की योजना के शिल्पी थे. दिल्ली में जनरल रावत की शवयात्रा का एक दृश्य

## व्यापक बदलाव

पार्टी फरमानों की वजह से 2021 में उत्तराखंड, गुजरात, कर्नाटक और पंजाब में नेतृत्व परिवर्तन देखने को मिले. लेकिन भाजपा और कांग्रेस आलाकमान की शैली इस मामले में बिल्कुल अलग थी. भाजपा शासित उत्तराखंड में मौजूदा सीएम **पुष्कर सिंह धामी** छह महीने में तीसरे मुख्यमंत्री थे. कर्नाटक में **बासवराज बोम्मई** ने दिग्गज बी.एस. येदियुरप्पा की जगह ली. गुजरात में विजय रुपाणी ने **भूपेंद्र पटेल** के लिए कुर्सी छोड़ी. पर पंजाब में मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू के बीच लंबी जूतमपैजार के बाद गद्दी चरणजीत सिंह चन्नी को मिली

एएनआइ

## तमिलनाडु में नई सुबह

खासे लोकप्रिय पिता एम. करुणानिधि की छत्रछाया में लंबे इंतजार के बाद 68 वर्षीय एम.के. स्टालिन 10 साल बाद मई में डीएमके को सत्ता में लाने में कामयाब हुए. एआइएडीएमके सत्ता विरोधी लहर से निबट न सकी. जयललिता के प्रस्थान से उपजे खालीपन को भी वह भर न सकी. स्टालिन ने चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर की मदद से जमीनी फीडबैक लेकर आकर्षक नारे बनाए और घोषणाएं कीं

## यूं हुआ एक युग का अंत

**1.** अगस्त में अफगानिस्तान से अमेरिका के अपनी फौजें वापस बुलाने की तैयारी के दौरान ही दसियों हजार लोग उस मुल्क से भाग निकले. अमेरिका वहां से निकल पाता, उससे पहले ही तालिबान एक झटके में राजधानी काबुल पर आ धमके और उस महीने के अंत तक तो उन्होंने पूरे अफगानिस्तान पर अपना अधिकार कर लिया. मुल्क छोड़ने वाले 21 अगस्त को काबुल के हामिद करजई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर यूएस एअर फोर्स ग्लोबमास्टर 3 जहाज में चढ़ते हुए

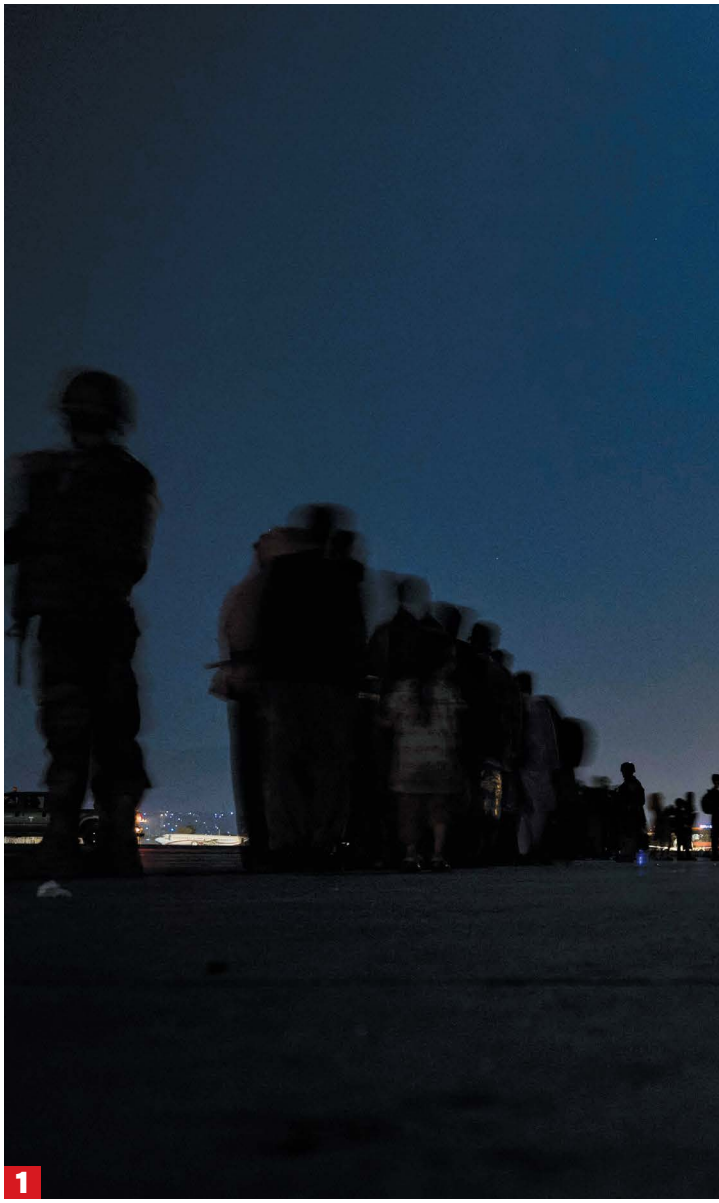
1

## आह ताज!

**2.** 13 दिसंबर को मिस इंडिया हरनाज संधू इस्राएल में ऐलट के रेड सी रेज़ॉर्ट में आयोजित 70वीं मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में मिस यूनिवर्स का ताज पहनते हुए

2

## एक नई सुबह

**3.** कमला हैरिस ने 20 जनवरी को अमेरिका की उप-राष्ट्रपति पद की शपथ ली. इस पद पर चुनी जाने वालीं वे पहली महिला और पहली अश्वेत/एशियाई अमेरिकी थीं. हैरिस वाशिंगटन डी.सी. में यूएस कैपिटल के सामने शपथ ग्रहण करते हुए

रॉयटर

फ्रेजियो

रॉयटर

# उथल-पुथल भरे दो दशक

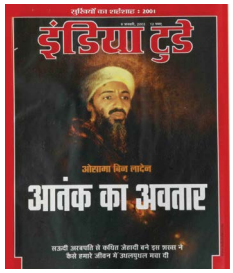


ओसामा बिन लादेन
वर्ष 2001

नरेंद्र मोदी
वर्ष 2002

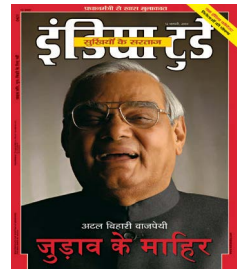


अटल बिहारी वाजपेयी
वर्ष 2003

सोनिया गांधी
वर्ष 2004

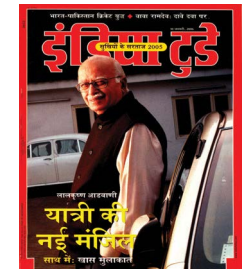


लालकृष्ण आडवाणी
वर्ष 2005

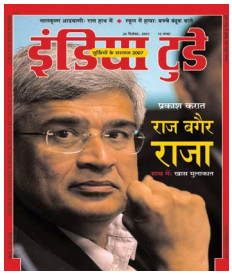


प्रकाश करात
वर्ष 2007

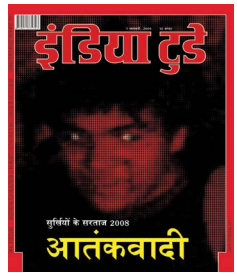


आतंकवाद
वर्ष 2008

राहुल गांधी
वर्ष 2009

नीतीश कुमार
वर्ष 2010

अण्णा हजारे
वर्ष 2011

आक्रोशित आम भारतीय
वर्ष 2012

अरविंद केजरीवाल
वर्ष 2013

नरेंद्र मोदी
वर्ष 2014

स्टार्ट-अप उद्यमी
वर्ष 2015

नरेंद्र मोदी
वर्ष 2016

विराट कोहली
वर्ष 2017

राहुल गांधी
वर्ष 2018

नरेंद्र मोदी-अमित शाह
वर्ष 2019

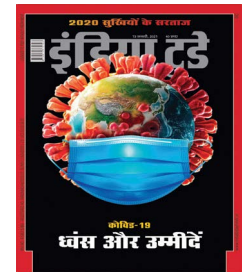


कोविड-19
वर्ष 2020

INDIA TODAY

# BREAKING NEWS

JUST A TAP AWAY

DOWNLOAD THE APP NOW

AVAILABLE ON

Infinix

DESIGNED TO KILL

# NOTE 11

**6.7 FHD+ AMOLED**
Display

**7.9mm Slim**
Slimmest in-segment

BUY NOW

Available on
Flipkart
Unique